तन्त्र शास्त्र सार' सीरीज संख्या १

तान्त्रिक-साधन विधि, यन्त्र, मन्त्र एवं तन्त्र सिद्धि के प्रयोग

●

राजेश दीक्षित

●



1936 में स्थापित, विश्वविख्यात, चिर-परिचित, पुराना प्रकाशक, पुराना ही नाम

देहाती पुस्तक भण्डार (Regd.)

चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006

फोन : 261030

प्रकाशक
देहाती पुस्तक भण्डार,
चावड़ी बाजार, दिल्ली–६

लेखक
राजेश दीक्षित

मूल्य
स्वदेश में : बारह रुपये
विदेश में : दो पौण्ड
2 £

मुद्रक
: ज्ञान आफसैट प्रिंटर्स, शाहजादा बाग, दयाबस्ती, दिल्ली-35

Tantrik-Sydhan-Vidhi, Yantra, Mantra Evam Tantra-Sibdi-ke-Prayog By Rajesh Dixit

दो शब्द

★ तन्त्र-प्रेमी पाठकों की इस माँग को ध्यान में रखकर कि तन्त्र विषयक हमने जिन पुस्तकों का सम्पादन किया है, उनके सारभूत तथ्य को नवीन संकलनों में प्रकाशित किया जाय—इस नई ग्रन्थमाला का शुभारम्भ किया जा रहा है। इस माला में कुल पाँच पुस्तकें प्रकाशित होंगी। जिसके प्रथम पुरुष के रूप में यह संकलन आपके समक्ष प्रस्तुत है।

★ प्रस्तुत ग्रन्थ में तान्त्रिक साधन-विधि, यन्त्र, मन्त्र एवं तन्त्र सिद्धि के चुनिन्दा योगों तथा साधनों को संकलित किया गया है। इस प्रकार यह ग्रन्थ तन्त्र-साधकों के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगा—ऐसी आशा है।

★ जो महानुभाव हिन्दी में तन्त्र विषय ज्ञान की सर्वांगीण जानकारी प्राप्त करने के इच्छुक हो, 'उन्हें हम पुस्तक माला की पाँचों पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए।

कृष्णापुरी, मथुरा
७-६-१९७४ ई०

—राजेश दीक्षित

तन्त्र-साधक स्मरण रखें !

तान्त्रिक-साधनों के प्रत्येक साधक को निम्नलिखित बातें सदैव स्मरण रहनी चाहिए—

१. प्रत्येक साधन की सिद्धि साधक के आचरण पर निर्भर करती है। मन, वचन तथा कर्म से पवित्र, विश्वासी, श्रद्धालु, परोपकारी, स्वार्थ रहित एवं विवेकी साधक ही तान्त्रिक-साधनों की सिद्धि में सफलता प्राप्त कर पाते हैं।

२. काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, हिंसा एवं दूसरों को हानि पहुँचाने के उद्देश्य से किये गये साधन निष्फल हो जाते हैं।

३. तान्त्रिक साधनों में सफलता-प्राप्ति के लिए किसी अनुभवी गुरु का मार्ग-दर्शन प्राप्त करना आवश्यक होता है। सामान्य प्रयोग तो अध्ययन एवं अभ्यास से भी सिद्ध हो जाते हैं, परन्तु विशिष्ट प्रयोगों की सिद्धि के लिए किसी सुयोग्य गुरु का शिष्यत्व ग्रहण करना चाहिए।

४. धर्म, नीति, सत्य, न्याय, सदाचार, नैतिकता एवं कानून-विरुद्ध तान्त्रिक-साधनों का प्रयोग भूल कर भी नहीं करना चाहिए।

५. प्रस्तुत संकलन प्राचीन तान्त्रिक-साधन विधियों से पाठकों को सुपरिचित कराने के उद्देश्य से सम्पादित एवं प्रकाशित किया गया है। इन साधनों का प्रयोग किसी को हानि पहुंचाने के उद्देश्य से कभी नहीं करना चाहिए। प्रमादवश होने वाली हानि का सम्पूर्ण उत्तर दायित्व स्वयं साधक पर ही होगा।

६. ठन्डा शीतल जल के वास्ते कुआ बनाया जाता है यदि कोई मन्दबुद्धि स्त्री या पुरुष घर से कलह या किसी भी कारणवश उस कुएँ में गिर कर आत्म-हत्या कर ले तो कुएँ बनाने वाले का क्या दोष। पर प्रभु के आगे किसी का वश नहीं चलता।

सुनहु भरत भावी प्रबल बिलख कहे मुनिनाथ।
हानि लाभ जीवन मरण यश अपयश विधि हाथ॥

बोलो सियापति रामचन्द्र की जय पवनपुत्र हनुमान की जय

विषय-सूची

1

तान्त्रिक साधन

जिस विद्या में सृष्टि, प्रलय, कल्प, मन्त्र निर्णय, देव-संस्थान, तीर्थ, आश्रमधर्म, विप्र-संस्थान, यन्त्र, देवोत्पत्ति, वृक्षोत्पत्ति, व्रत, राज-धर्म, दान-धर्म, युग-धर्म, ज्योतिष, पुराण, अध्यात्म एवं व्यावहारिक विषयों का वर्णन हो, उसे 'तन्त्र शास्त्र' कहा जाता है।

'वाराही तन्त्र' में कहा गया है कि भूलोक, पाताल लोक तथा ब्रह्मलोक तीनों लोकों में कुल मिलाकर तन्त्र शास्त्र का वर्णन ९ लाख श्लोकों में पाया जाता है, परन्तु भारतवर्ष में तन्त्र सम्बन्धी श्लोक कुल १ लाख की संख्या में ही पाये जाते हैं।

हिन्दू धर्म तथा बौद्ध धर्म—दोनों में ही तन्त्र शास्त्र को प्रधानता दी गई है और तान्त्रिक-अनुष्ठानों को शीघ्र फलदायक माना जाता है।

समस्त तन्त्रों की कुल संख्या १९२ बताई जाती है। पृथ्वी की क्रान्ति-रेखा के आधार पर उन्हें तीन सम्प्रदायों में विभाजित किया गया है। गौड़-राज्य में प्रचलित 'विष्णुक्रान्त' संज्ञक तन्त्र ६४ हैं। नेपाल देश में प्रचलित 'रथ क्रान्त, संज्ञक तन्त्र भी ६४ हैं तथा शेष ६४ तन्त्र अन्य स्थानों में प्रचलित माने गये हैं।

'आगम तत्त्व विलास' नामक ग्रन्थ में हिन्दू धर्म के अनेक तन्त्र ग्रन्थों के नाम दिये गये हैं। उनमें सनत्कुमार तन्त्र, नारायणी तन्त्र, योगिनी तन्त्र, कुमारी तन्त्र, वाराही तन्त्र, सिद्ध यामल, रुद्र यामल आदि प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त कुलार्णव, उड्डीश तन्त्र, डामर तन्त्र, तन्त्र रत्न, महानिर्वाण तन्त्र, तन्त्र रत्न, यन्त्र चिन्तामणि आदि भी तन्त्र शास्त्र के प्राचीन तथा प्रमुख ग्रन्थ कहे जाते हैं।

बौद्ध तथा कपिलोक्त तन्त्र ग्रंथों के अतिरिक्त वशिष्ठ, गर्ग, नारद, पुलस्त्य, भृगु, बृहस्पति, याज्ञवल्क्य, प्रभृत ऋषि-मुनियों द्वारा भी अनेक उपतन्त्र ग्रंथों का निर्माण किया गया है। इनमें से कुछ ग्रंथ उपलब्ध हैं और अधिकांश अनुपलब्ध हैं। कहा जाता है कि यवनों के आक्रमण तथा अत्याचारों के फलस्वरूप अनेक ग्रंथ पूर्णतः विलुप्त हो गये तथा कुछ ग्रंथ अपनी सीमाओं को छोड़कर विभिन्न स्थानों तथा व्यक्तियों के अधिकार में चले गये हैं।

तन्त्र शास्त्र की उत्पत्ति सामवेद तथा अथर्ववेद से मानी जाती है। भगवान् शिव इस विद्या के आदि-जनक हैं। बौद्धमत में तन्त्र विद्या का आदि-जनक 'वज्रसत्वशुद्ध' बतलाये गये हैं। बौद्ध तन्त्रों में क्रियाकल्पद्रुम, सम्बर तंत्र, वाराही कल्प, नागार्जुन, योगपीठ, साधनमाला, ज्ञानोदय, योगाम्बर आदि प्रमुख माने जाते हैं। हिन्दू तान्त्रिक ग्रंथों की भांति नेपाली तन्त्र ग्रंथ भी बड़ी संख्या में पाये जाते हैं। बौद्धों के अनेक ग्रन्थों का तिब्बती तथा चीनी भाषा में भी अनुवाद हुआ है।

हिन्दुओं के तन्त्र ग्रन्थ तीन भागों में विभाजित हैं—(१) शैव, (२) शाक्त, और (३) वैष्णव। जो तान्त्रिक जिस सम्प्रदाय का अनुयायी होता है, वह उसी सम्प्रदाय के ग्रन्थों के आधार पर अपनी साधना करता है।

लोक प्रचलित यन्त्र, मन्त्र आदि

कुछ यन्त्र, मन्त्र आदि लोक भाषाओं में भी पाये जाते हैं और वे चामत्कारिक रूप में अपना प्रभाव भी प्रदर्शित करते हैं। देश, काल, परिस्थिति एवं भाषा के अनुसार परिवर्तन होते-होते उनका आधुनिक स्वरूप स्थापित हुआ है, परन्तु यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो उन सबका आधार भी प्राचीन तन्त्र ग्रन्थ ही हैं। इसी प्रकार यावनी भाषा में भी अनेक मन्त्रों तथा यन्त्रों की रचना हुई है। यदि श्रद्धा और विश्वासपूर्वक सम्यक्-साधन की जाय तो संस्कृत, लोकभाषा तथा यावनी भाषा आदि में पाये जाने वाले अधिकांश तान्त्रिक प्रयोग इच्छित-फल देने वाले सिद्ध होते हैं।

षट्-कर्म

तन्त्र शास्त्र में कर्मों के निम्नलिखित ६ प्रकार कहे गये हैं—

(१) शान्तिकरण, (२) वशीकरण, (३) स्तम्भन, (४) विद्वेषण, (५) उच्चाटन और (६) मारण। इनकी व्याख्या निम्नानुसार है—

१. शान्तिकरण—जिस कृत्य के द्वारा रोग कृत्या, ग्रह आदि के दोष की शान्ति होती है, उसे 'शान्तिकरण' अथवा 'शान्तिकर्म' कहा जाता है।

२. वशीकरण—जिस कृत्य के द्वारा स्त्री, पुरुष, राज्य, भृत्य, पशु भूत-प्रेत, देवता आदि के वशीभूत किया जाता है, उसे 'वशीकरण' कहते हैं।

३. स्तम्भन—जिस कृत्य के द्वारा समस्त जीवों को वृत्त को स्तम्भित किया (रोका) जाता है, उसे स्तम्भन' कहते हैं।

४. विद्वेषण—जिस कृत्य के द्वारा मित्रभावापन्न प्राणियों को पारस्परिक प्रेम को समाप्त कर दिया जाता है, उसे 'विद्वेषण' कहते हैं।

५. उच्चाटन—जिस कृत्य के द्वारा किसी प्राणी को अपने देश, स्थान घर आदि से दूर कर दिया जाता है, उसे उच्चाटन कहते हैं।

६. मारण—जिस कृत्य के द्वार किसी जीव का प्राण-नाश किया जाता है, उसे 'मारण' कहते हैं।

उक्त मुख्य कर्मों के ६ भेद तथा अनेक उपभेद कहे गये हैं। तन्त्र शास्त्र की सभी क्रियाएं इन्हीं ६ कर्मों के अन्तर्गत आती हैं। अतः इनके विषय में देवता, काल, दिशा, आसन आदि की सम्यक् जानकारी प्राप्त कर लेने के उपरान्त इनका साधन करना चाहिए।

षट् कर्मो के देवता

षट् कर्मों के देवता निम्नानुसार हैं—

१. शान्तिकरण—रति (कामदेव की पत्नी)

२. वशीकरण—वाणी (सरस्वती)।

३. स्तम्भन—रमा (लक्ष्मी)।

४. विद्वेषण—ज्येष्ठा।

५. उच्चाटन—दुर्गा।

६. मारण—भद्रकाली।

किसी भी कर्म को आरम्भ करने से पूर्व उसके देवता का विधिपूर्वक पूजन करना आवश्यक है।

षट् कर्मों की दिशाएं

षट्-कर्मों की दिशाएं निम्नलिखित हैं—

१. शान्तिकरण—ईशान कोण।

२. वशीकरण—उत्तर दिशा।

३. स्तम्भन—पूर्व दिशा।

४, विद्वेषण—नैऋत्य दिशा।

५. उच्चाटन—वायव्य दिशा।

६. मारण—आग्नेय कोण।

जो भी कर्म करना हो, उसकी जो दिशा हो, उसी दिशा की ओर मुंह करके आसन पर बैठना चाहिए।

षट् कर्मों की ऋतुएँ

एक दिन-रात्रि में अरुणोदय से आरम्भ करके प्रत्येक दस घड़ी के अन्तर से क्रमशः (१) बसन्त, (२) ग्रीष्म, (३) वर्षा, (४) शरद् (५) हेमन्त तथा (६) शिशिर ऋतु का भोग काल होता है।

ढाई घड़ी का एक घण्टा तथा ६० घड़ी का एक दिन होता है। चूंकि प्रत्येक ऋतु दस घड़ी की होती है, अतः हर ऋतु का भोग-काल चार-चार घण्टा समझना चाहिए। इस प्रकार कुल २४ घण्टे में छहों ऋतुओं का भोग काल पूरा होता है।

ऋतुओं का क्रम और अधिक आसानी से निम्मानुसार समझ लेना चाहिए—

सूर्योदय ले आरंभ करके ४ घंटे तक बसन्त ऋतु, फिर चार-चार घन्टे क्रमशः ग्रीष्म शिशिर, वर्षा, शरद, हेमन्त एवं शिशिर ऋतुएं रहती हैं। यदि सामान्य रूप में सूर्योदय का समय प्रातः ६ बजे का माना जाय तो सभी ऋतुओं का भोग काल निम्नानुसार होगा—

१. वसन्त—प्रातः ६ से १० बजे तक।

२. ग्रीष्म—प्रातः १० से मध्यान्ह २ बचे तक।

३. वर्षा—मध्यान्ह २ बजे से सायं ६ बजे तक।

४. शरद—सायं ६ बजे से रात्रि १० बजे तक।

५. हेमन्त—रात्रि १० बजे से रात्रि २ बजे तक।

६. शिशिर—रात्रि बजे से प्रातः ६ बजे तक।

मतावन्तर से ऋतुओं का काल विभाजन निम्नानुसार किया गया है—

दिन के पूर्व भाग में—बसन्त ऋतु।

दिन के मध्यान्ह में—ग्रीष्म ऋतु।

अपरान्ह में—वर्षा ऋतु।

सन्ध्याकाल में—शिशिर ऋतु।

अर्द्ध रात्रि में—शरद् ऋतु।

उषः काल में—हेमन्त ऋतु।

हेमन्त ऋतु में शान्ति कर्म, बसन्त ऋतु में वशीकरण शिशिर ऋतु में स्तम्भन, ग्रीष्म ऋतु में विद्वेषण, वर्षा ऋतु में उच्चाटन तथा शरद ऋतु में मारण चर्म करना उचित है।

षट् कर्मों के तिथि और वार

१. **शान्ति कर्म के लिए**—द्वितीय, तृतीया, पंचमी और सप्तमी तिथि तथा बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार तथा सोमवार प्रशस्त कहे गये हैं। यों शान्तिकर्म किसी भी तिथि अथवा वार में किया जा सकता है, परन्तु यदि किसी शुभ ग्रह के उदय में किया जाय तो विशेष फलदायी होता है।

२. **वशीकरण के लिए**—दशमी, एकादशी, अमावस्या, नवमी एवं प्रतिपदा तिथि तथा रविवार एवं शुक्रवार प्रशस्त कहे गये हैं।

३. **स्तम्भन के लिए**—बुधवार अथवा सोमवार से युक्त पंचमी, दशमी अथवा पूर्णिमा तिथि प्रशस्त है।

४. **विद्वेषण के लिए**—शनिवार अथवा रविवार युक्त पूर्णिमा तिथि प्रशस्त कही गई है। रविवार की रिक्ता तिथि इस के लिए श्रेष्ठ मानी गई है।

५. **उच्चाटन के लिए**—शनिवार युक्त षष्ठी, चतुर्दशी एवं अष्टमी तिथि प्रशस्त कही गई है विशेष कर प्रदोष काल इसके लिए अत्यन्त श्रेष्ठ माना गया है। रविवार की रिक्ता तिथि भी श्रेष्ठ मानी गई है।

६. **मारण के लिए**—चतुर्दशी, अष्टमी एवं अमावस्या तिथि तथा शनिवार, मंगलवार एवं रविवार प्रशस्त कहे गये हैं। मारण आदि अशुभ

कार्यों का अनुष्ठान अशुभ ग्रह के उदय होने पर करना शीघ्र फलदायी होता है।

षट्-कर्मों का काल

दिन के पूर्व भाग में वशीकरण-दिन के मध्य भाग में विद्वेषण तथा उच्चाटन, दिन के शेष भाग में शान्तिकरण एवं पुष्टि कर्म तथा संध्याकाल में मारण कर्म करना उचित है।

षट्-कर्मों के नक्षत्र

समस्त नक्षत्र निम्नलिखित चार मण्डलों के अन्तर्गत माने गये हैं—

(१) **महेन्द्र मण्डल**—ज्येष्ठा, उत्तराषाढ़, अनुराधा और रोहिणी।

(२) **वारुण मण्डल**—उत्तराभाद्र पद, मूल शतभिषा, पूर्वाभाद्र पद और आश्लेषा।

(३) **वह्नि मण्डल**—स्वाति, हस्त, मृगशिर, चित्रा, उत्तरा फाल्गुनी, पुष्य और पुनर्वसु।

(४) **वायु मण्डल**—अश्विनी, भरणी, आर्द्रा, धनिष्ठा, श्रवण, मघा, विशाखा, कृत्तिका, पूर्वाफाल्गुनी और रेवती।

वशीकरण (मोहन) तथा स्तम्भन कर्म के लिए 'माहेनु मण्डल' के नक्षत्र प्रशस्त कहे गये हैं। इनके अतिरिक्त नक्षत्र भी शुभ माना गया है।

विद्वेषण, उच्चाटन तथा मारण कर्म के लिए वह्नि मण्डल तथा वायु मण्डल के नक्षत्र श्रेष्ठ माने गए हैं। शान्ति कर्म किसी भी नक्षत्र में किया जा सकता है।

षट्-कर्मों की लग्न

(१) **स्तम्भन के लिए**—सिंह और वृश्चिक लग्न प्रशस्त हैं।

(२) **विद्वेषण और उच्चाटन के लिए**—कर्क और तुला लग्न प्रशस्त हैं।

(३) **वशीकरण**—शान्तिकरत्त, पुष्टि कर्म तथा मारण कर्म के लिए—मेष, कन्या, धनु और मीन लग्न प्रशस्त कही गई है। इन लग्नों में उच्चाटन कर्म भी किया जा सकता है।

षट् कर्मों के तत्व

जलतत्त्व के उदय में शान्ति कर्म, अग्नितत्त्व के उदय में वशीकरण पृथ्वीतत्त्व के उदय में स्तम्भन, आकाशतत्त्व के उदय में विद्वेषण, वायुतत्त्व के उदय में उच्चाटन एवं पृथ्वीतत्त्व अथवा अग्नितत्त्व के उदय में मारण कर्म करने चाहिए।

शत्रु का भय अथवा किसी अन्य प्रकार का महाभय उपस्थित होने पर, उसे दूर करने के लिए कालाकाल का विचार नहीं किया जाता। ऐसी किसी विपत्ति के उपस्थित होने पर तत्काल ही उसकी शान्ति का विधान करना उचित है।

षट्.कर्मों के लिए देवता के वर्णभेद

वशीकरण, आकर्षण तथा क्षोभन कर्म में देवता को लोहित वर्ण, विष दूरीकरण तथा पुष्टिकर्म अर्थात् शान्तिकर्म में शुभ्र वर्ण, स्तम्भन में पीतवर्ण, उच्चाटन में धूम्रवर्ण, उन्माद में लोहित वर्ण तथा मारणकर्म में कृष्णवर्ण से ध्यान करना चाहिए।

षट्-कर्मों में देवता के उत्थितादि भेद

मारण कर्म में देवता को खड़ा हुआ, उच्चाटन में सोया हुआ तथा अन्य कर्मों में बैठा हुआ जान कर उसके उसी स्वरूप का ध्यान करना चाहिए।

सात्विक कर्म में देवता को समासीन शुभ्रवर्ण, राजस कर्म में पीत, लोहित एवं श्याम वर्ण तथा तामस कर्म में यातमार्ग स्थित एवं कृष्ण वर्ण का समझ कर ध्यान करना चाहिए।

मुक्ति वाली साधक को सात्विक, राज्याकांक्षी को राजस तथा शत्रु नाश, पीड़ा-शान्ति एवं उपद्रव निवारण के हेतु तामस कर्म का आचरण करना चाहिए।

योगिनी निर्णय

प्रतिपदा तथा नवमी तिथि को पूर्व दिशा में, तृतीया तथा एकादशी तिथि को आग्नेय कोण में, पंचमी तथा त्रयोदशी को दक्षिण दिशा में, चतुर्थी तथा द्वादशी को नैर्ऋत्य कोण में, षष्ठी तथा चतुर्दशी को पश्चिम दिशा में, सप्तमी

तथा पूर्णिमा को वायव्य कोण में, द्वितीया तथा दशमी को उत्तर दिशा में एवं अष्टमी तथा अमावस्या को ईशान कोण में योगिनी का निकास रहता है।

पीठ पीछे की तथा बायीं ओर की योगिनी शुभ फल देने वाली तथा सामने की तथा दायीं ओर की योगिनी अशुभ फल देने वाली होती है।

दिशा शूल निर्णय

सोमवार तथा शनिवार को पूर्व दिशा में, रविवार तथा शुक्रवार को पश्चिम दिशा में, बुधवार तथा मंगलवार को उत्तर दिशा में एवं गुरुवार को दक्षिण दिशा में दिशा शूल रहता है।

तिथि संज्ञा निर्णय

तिथियों की पाँच संज्ञायें हैं—

(१) नन्दा, (२) भद्रा, (३) जया, (४) रिक्ता और (५) पूर्णा

प्रतिपदा, षष्ठी तथा एकादशी को 'नन्दा'; द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी को 'भद्रान' तृतीया, अष्टमी तथा त्रयोदशी को 'जया', चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी को 'रिक्ता' तथा पंचमी, दशमी, पूर्णिमा तथा अमावस्या को 'पूर्णा' तिथि कहा जाता है।

सिद्धि तथा मृत्यु योग

शुक्रवार को नन्दा, बुधवार को भद्रा, मंगलवार को जया, शनिवार को रिक्ता एवं गुरुवार को पूर्ण तिथि हो तो सिद्धि योग होता है। इनसे भिन्न तिथि चारों में मृत्यु-योग होता है।

सिद्ध-योग में आरम्भ किये गये कार्यों में सफलता प्राप्त होती है तथा मृत्यु-योग में आरम्भ किये गये कार्य असफल होते हैं।

चन्द्रमा की स्थिति

मेष, सिंह तथा धनु लग्न में चन्द्रमा पूर्व दिशा में स्थित होता है। मिथुन, कुम्भ तथा तुला लग्न में पश्चिम दिशा में, कर्क, मीन तथा वृश्चिक लग्न में उत्तर दिशा में एवं वृष, कन्या तथा मकर लग्न में चन्द्रमा की स्थिति दक्षिण दिशा में होती है।

चन्द्रमा एक राशि पर सवा दो दिन तक रहता है। यह समयावधि १३५ घड़ी की होती है। इन १३५ घड़ियों में चन्द्रमा आठों दिशाओं को भोगता है। चन्द्रमा की स्थिति जिस दिशा में हो, उसी से गिनना आरम्भ करना चाहिए। किस दिशा में चन्द्रमा कितनी घड़ी तक रहता है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए—

पूर्व दिशा में—१७ घड़ी।
आग्नेय कोण में—१५ घड़ी।
दक्षिण दिशा में—२१ घड़ी।
नैऋर्त्य कोण में—१६ घड़ी
पश्चिम दिशा में—१८ घड़ी।
वायव्य कोण में—१६ घड़ी।
उत्तरदिशा में—१५ घड़ी।
ईशान कोण में—१४ घड़ी।

इस प्रकार कुल १३५ घड़ी में चन्द्रमा आठों दिशाओं में भ्रमण करता है।

ग्रह-राशि और नक्षत्र

ग्रह—ग्रह कुल सात हैं—(१) रवि, (२) चन्द्र, (३) मंगल, (४) बुध, (५) बृहस्पति, (६) शुक्र और (७) शनि। राहु तथा केतु को पृथ्वी की छाया माना जाता है। फिर भी इन्हें ग्रहों में स्थान दिया गया है। राहु-केतु सहित ग्रहों की संख्या कुल ९ हो जाती है।

राशि—राशियां कुल बारह हैं—(१) मेष, (२) वृष, (३) मिथुन, (४) कर्क, (५) सिंह, (६) कन्या, (७) तुला, (८) वृश्चिक, (९) धनु, (१०) मकर, (११) कुम्भ और (१२) मीन।

नक्षत्र—नक्षत्र कुल सत्ताईस हैं—(१) अश्विनी, (२) भरणी, (३) कृत्तिका, (४) रोहिणी, (५) मृगशिर, (६) आर्द्रा, (७) पुनर्वसु, (८) पुष्य, (९) अश्लेषा, (१०) मघा, (११) पूर्वा फाल्गुनी, (१२) उत्तरा फाल्गुनी, (१३) हस्त, (१४) चित्रा, (१५) स्वाँति, (१६) विशाखा,

(१७) अनुराधा, (१८) ज्येष्ठा, (१९) मूल, (२०) पूर्वाषाढ़ (२१) उत्तराषाढ़, (२२) श्रवण, (२३) धनिष्ठा, (२४) शतभिषा, (२५) पूर्वा भाद्रपद, (२६) उत्तरा भाद्रपद और (२७) रेवती।

'अभिजित्' को अट्ठाईसवाँ नक्षत्र माना जाता है। इसकी गणना उत्तराषाढ़ के बाद तथा श्रवण से पहले की जाती है। इस प्रकार 'अभिजित्' सहित नक्षत्रों की कुल संख्या २८ मानी जाती हैं।

प्रत्येक नक्षत्र के ४-४ चरण होते हैं तथा सवा दो नक्षत्रों की एक राशि होती है.

प्रत्येक नक्षत्र के प्रत्येक चरण का एक-एक अक्षर भी निर्धारित है। इन सब विषयों की विस्तृत जानकारी के लिए हमारी लिखी 'सरल ज्योतिष शास्त्र' पुस्तक का अध्ययन करें अथवा ज्योतिष-विषयक किसी अन्य ग्रन्थ को पढ़ें।

राशियों के स्वामी

राशियों की कुल संख्या १२ है, इनके स्वामी सातग्रह माने गये हैं। पाँच ग्रह दो-दो राशियों के स्वामी हैं तथा दो ग्रह एक-एक राशि के स्वामी हैं। कौनसा ग्रह किन राशियों का स्वामी है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए—

मेष और वृश्चिक राशि का स्वामी—मंगल।
वृष और तुला राशि का स्वामी—शुक्र।
मिथुन और कन्या राशि का स्वामी—बुध।
धनु और मीन राशि का स्वामी—वृहस्पति।
मकर और कुम्भ राशि का स्वामी—शनि।
सिंह राशि का स्वामी—सूर्य।
कर्क राशि का स्वामी—चन्द्रमा।

चन्द्रराशि फल

अपनी राशि का चन्द्रमा कल्याणकारी अपनी से दूसरी राशि का मन-स्तोष कारक, तीसरी का धन-सम्पत्तिदाता, चौथी का कलकारक, पाँचवीं का ज्ञानवर्द्धक, छठी का लाभकारी, सातवीं का राज्य सम्मानदाता, आठवीं का

मारक, नवीं का धर्म लाभदाता, दसवीं का अभिलाषा पूर्ति कारक, ग्यारहवीं का सर्वार्थसिद्ध दायक तथा बारहवीं का हानिकारक होता है ।

ऋणी धनी विचार

कौन ऋणी तथा कौन धनी है, इसकी जानकारी के लिए दोनों व्यक्तियों के नामों के वर्ग की संख्या को अलग-अलग लिखकर प्रत्येक को २ से गुणा करदें । फिर दोनों की वर्ग संख्या को अलग-अलग एक दूसरे के साथ जोड़ कर, उनमें ८ का भाग देकर देखें । जिसका शेषांश अधिक बैठे उसको ऋणी तथा जिसका कम बैठे, उसको धनी समझना चाहिए अर्थात् अधिक शेषांश वाला कम शेषांश वाले का ऋणी होता है ।

उदाहरण के लिए 'नारायण प्रसाद' के यहाँ 'सुन्दर लाल' नौकरी करना चाहता है । उसे नौकरी मिलेगी या नहीं—यह जानने के लिए उपर्युक्त विधि से नीचे लिखे अनुसार हिसाब लगाना चाहिए—

नारायण प्रसाद की वर्ग संख्या ५ तथा सुन्दर लाल की वर्ग संख्या ८ है । दोनों को गुणा किया तो हिसाब नीचे लिखे अनुसार बैठा—

नारायण प्रसाद		सुन्दर लाल
५ × २ = १०	और	८ × २ = १६

१० + ८ (सुन्दरलाल की वर्ग सख्या) = १८ ÷ ८ = २ शेष बचा ।

१६ + ५ (नारायण प्रसाद की वर्ग संख्या) = २१ ÷ ८ = ५ शेष बचा ।

इस विधि से ज्ञात हुआ कि नारायण प्रसाद की वर्ग संख्या का शेष २ सुन्दरलाल की वर्गसंख्या के शेष ५ से कम है, अतः नारायण प्रसाद सुन्दर लाल को अपने यहाँ नौकर नहीं रक्खेगा । यदि सुन्दर लाल नारायण प्रसाद का ऋणी होता तो उसे वहाँ नौकरी मिल सकती थी । इस उदाहरण के आधार पर यदि नारायण प्रसाद सुन्दर लाल के यहाँ नौकरी करे तो उसे मिल सकती है, क्योंकि सुन्दर लाल नारायण प्रसाद का ऋणी है ।

किस नामाक्षर की वर्ग संख्या क्या होती है, इसे नीचे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए—

वर्ग संख्या	वर्ग नाम	नामाक्षर
(१)	गरुड़	अ इ उ ए
(२)	बिलाव	क ख ग घ
(३)	सिंह	च छ ज झ
(४)	श्वान	ट ठ ड ढ ण
(५)	सर्प	त थ द ध न
(६)	मूषक	प फ ब भ म
(७)	मृग	य र ल व
(८)	मेंढ़ा	श ष स ह

षट्-कर्मों की मुद्राएँ

षट्-कर्म साधन के लिए ६ प्रकार की मुद्राएँ कही गई हैं। जो इस प्रकार हैं—

(१) पद्म, (२) पाश, (३) गदा, (४) मुसल, (५) वज्र और (६) खड्ग।

पद्म मुद्रा द्वारा शान्तिकर्म, पाश मुद्रा द्वारा वशीकरण, गदा मुद्रा द्वार स्तम्भन, मुसल द्वारा विद्वेषण, वज्र मुद्रा द्वारा उच्चाटन तथा खड्ग मुद्रा द्वारा मारण कर्म करने चाहिए।

जिस कर्म में जिस मुद्रा का विषय लिखा गया है, उसी मुद्रा की सहायता से उस कर्म को करने पर सिद्धि प्राप्त होती है।

पूजनादि कार्यों में अन्य प्रकार की मुद्राएँ प्रदर्शित की जाती हैं, यथा—

(१) धेनु मुद्रा, (२) आवाहनी मुद्रा, (३) स्थापनी मुद्रा, (४) सन्निधापनी मुद्रा, (५) सन्निरोधिनी मुद्रा, (६) योनि मुद्रा तथा (७) तत्त्व मुद्रा आदि। मुद्राओं के विषय में विस्तृत जानकारी के लिए हमारी लिखी 'मुद्रा-रहस्य' पुस्तक का अध्ययन करें अथवा किसी अन्य ग्रंथ को पढ़ लें।

कलश-स्थापन

तान्त्रिक तथा पूजनादि कर्म में कलश-स्थापन का विशेष महत्त्व है। कलश स्वर्ण, चांदी, कांस्य, तांबा, पत्थर, मिट्टी अथवाकांच से निर्मित निश्छिद्र

होना चाहिए। स्वर्ण का कलश भोगदाता, चांदी का मोक्षदाता, तांबे का प्रीतिदाता, कांसी का पुष्टिदाता, कांची का वशीकरण कारक, पत्थर का स्तम्भन कारक तथा मिट्टी का कलश सभी कर्मों के लिए प्रशस्त कहा गया है।

कलश का विस्तार डेढ़ हाथ का, उसकी ऊंचाई १६ अंगुल, गला ४ अंगुल, मुख का विस्तार ६ अंगुल तथा तल का परिमाण ५ अंगुल होना उचित माना गया है।

कलश-स्थापन करके विभिन्न उपचारों द्वारा उसका सविधि पूजन करना चाहिए। फिर पहले रुद्रदेव तथा बाद में भद्रकाली का पूजन करना आवश्यक है।

कुण्ड वर्णन

विद्वेषण कर्म के लिए दो मेखला वाले कुण्ड का निर्माण करें। उसका परिमाण एक हाथ के बराबर तथा मुख नैऋत्यकोण में रखना चाहिए।

शत्रु-उच्चाटन के लिए नैऋत्यकोण में तथा देवोच्चाटन के लिए वायुकोण में कुण्ड बनाना चाहिए।

शत्रु मारण कर्म के लिए मण्डप के दायें भाग में अर्द्धचन्द्र कुण्ड का निर्माण करें। शत्रु की पीड़ा वृद्धि के लिए नैऋत्यकोण में त्रिकोण कुण्ड, बनाना चाहिए।

विद्वेषण के लिए अग्निकोण में पूर्णचन्द्र कुण्ड अथवा चतुष्कोण कुण्ड, वशीकरण के लिए चतुष्णोण कुण्ड, स्तम्भन तथा उच्चाटन के लिए त्रिकोण कुण्ड; मारण के लिए षट्कोण कुण्ड तथा पुष्टिकर्म के लिए पश्चिम दिशा में कुण्ड का निर्माण करना चाहिए।

उच्चाटन के लिए वायुकोण में तथा मारण के लिए दक्षिण दिशा में कुण्ड बनाना चाहिए। अभिचार कर्म करने के लिए कुण्ड का परिमाण न्यूनाधिक होने से भी कोई दोष नहीं होता।

शान्ति तथा पुष्टिकर्म में पूर्व अथवा उत्तर की ओर मुख करके होमादि करें। आकर्षण के लिए उत्तर की ओर मुख करके वायुकोणस्थ कुण्ड में

हवन करें। विद्वेषण के लिए नैर्ऋत्य कोण में मुख करके वायुकोणस्थ कुण्ड में हवन करें। उच्चाटन के लिए अग्निकोण में मुख करके वायुकोणस्थ कुण्ड में हवन करें। मारण कर्म के लिए दक्षिण की ओर मुख करके दक्षिणस्थ कुण्ड में हवन करें। ग्रह-भूतादि निवारण के लिए वायुकोण की ओर मुख करके षट्कोण कुण्ड में हवन करें। वशीकरण के लिए वायव्यकोण की ओर मुख करके त्रिकोण कुण्ड में हवन करें तथा स्तम्भन कर्म के लिए पूर्व की ओर मुख करके षट्कोण कुण्ड में हवन करना चाहिए।

हवन द्रव्य

शान्ति कर्म में दूध, घी, पीपल आदि वृक्षों के पत्तों तथा गिलोय से हवन करना चाहिए।

पुष्टि कर्म में बेलपत्र, घी, सफेद सरसों, लवण तथा चमेली के फूलों से; कन्या-प्राप्ति की अभिलाषा में खीलों से, स्त्री की अभिलाषा में कमल से, समृद्धि प्राप्ति के लिए दही तथा घृत से; महानिधि के लिए घृत, बिल्प तथा तिल से; आकर्षण कर्म में प्रियंगु, बेल, चमेली के फूल, पलाश के फल तथा सेंधा नमक से; वशीकरण में चमेली के फूलों से; आकर्षण में कनेर के फूलों से तथा उच्चाटन में उच्चाटनीय-मनुष्य के केश अथवा कपास और नीम के बीस महे में मिलाकर हवन करना चाहिए।

मोहनकर्म में कौए के पंख से; मारण कर्म पें धतूरे के बीज, रक्त मिश्रित विष (संखिया), बकरी का दूध, घी, कपास, मनुष्य की हड्डी, मनुष्य का मांस, साध्य-व्यक्ति के नख, रोम, सरसों का तेल, कौआ-उल्लू आदि क्रूर पक्षियों के पंख, कुचला, भिलावा, मिर्च, सरसों, सिक्थ, आक का दूध, काली मिर्च, पीपल, कटुतैल अथवा सेंहुड़ के दूध से हवन करना चाहिए।

अभिचार कर्म में तुषयुक्त कपास के पीस, सरसों तथा नमक से; आयु वृद्धि के लिए घी, तिल, दूर्वा तथा आम के पत्तों से; ज्वर-निवृत्ति के लिए आम के पत्तों से; गायों की पीड़ा दूर करने के लिए सफेद सरसों से; वर्षा के लिए बेंत की समिधाओं एवं बेंत पत्तों से; पुष्टि-लाभ के लिए जियाघोता की समिधाओं से; वाक्पतित्व के लिए घी तथा गूगल से; सरस्वती-सिद्धि

के लिए मल्लिका पुष्प, जाती पुष्प, नागकेशर के फल तथा पुन्नाग पुष्प से एवं वृष्टि-स्तम्भन के लिए दूध तथा नमक द्वारा हवन करना चाहिए।

जिस मन्त्र के साथ हवन की जिन वस्तुओं का वर्णन किया गया हो. उसमें उन्हीं वस्तुओं का हवन करना चाहिए, परन्तु जहाँ किसी वस्तु का उल्लेख न हो, वहाँ उक्त द्रव्यों से ही हवन करना उचित है।

यज्ञीय-वस्तु का अभाव होने पर केवल मात्र घी से ही हवन करना चाहिए। घी से होम करने में असमर्थ होने पर होम की संख्या दूनी संख्या में मन्त्र-जप कर लेना चाहिए।

जहाँ होम तथा जप की संख्या नहीं कही गई है, वहाँ ८००० जप तथा ८०० आहुति होम करना चाहिए। मूल देवता के मन्त्र का जितनी संख्या में जप किया जाय उसका दशांश होम करना चाहिए। जिस जगह जप तथा होम की संख्या का उल्लेख न हो। वहाँ १००८ जप तथा इतनी ही संख्या में होम कर लेना ठीक रहता है।

होम कर्म तथा बलिदान-मन्त्र के पीछे 'स्वाहा' शब्द का, पूजा काल में तथा अन्त में 'नमः' शब्द का तथा तर्पण के समय अन्त में देवता के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

स्रुक् और स्रुवा

स्रुक ३६ अंगुल का तथा स्रुवा २४ अंगुल लम्बा होना चाहिए। उनका मुख ७ अंगुल, कंठ २ अंगुल तथा वेदी ८ अंगुल की होनी चाहिए। दण्ड की चौड़ाई तथा लम्बाई के क्रमानुसार २० तथा ६ अंगुल का रखना चाहिए।

स्रुक और स्रुवा का निर्माण चांदी, ताँबा, लोहा अथवा लकड़ी द्वारा करना चाहिए। यदि इन्हें लकड़ी का बनाना हो तो चन्दन, खैर, पीपल, आम, आँवला, चम्पा अथवा ढाक की लकड़ी से तय्यार करना चाहिए।

(१) मृगी, (२) हंसी तथा (३) शूकरी—होम की ये तीन मुद्राएँ हैं।

माला निर्णय

मन्त्र जप के लिए अनेक प्रकार की मालाएँ प्रशस्त कही गई हैं। यथा—

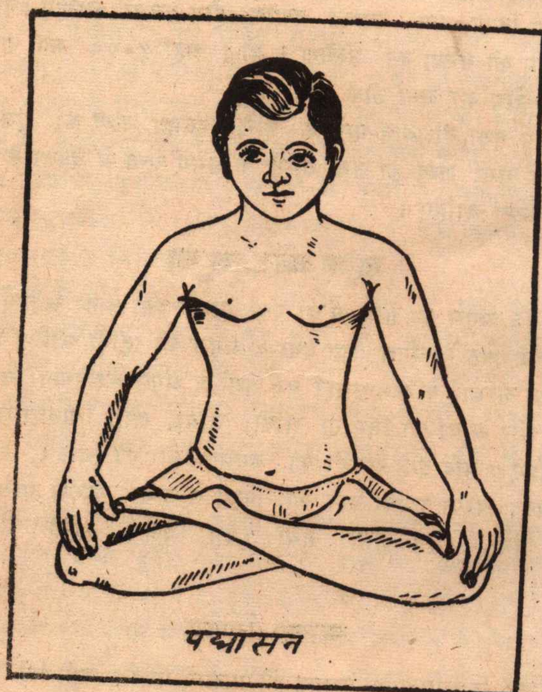
कर-माला, वर्ण-माला, पद्म बीजादि की माला, रुद्राक्ष, शंख, कमलगट्टा, जीपापोता, मोती शंख, स्फटिकमणि, रत्न, स्वर्ण, मूंगा, चाँदी तथा कुशमूल की माला।

इन सब में रुद्राक्ष की माला सर्वश्रेष्ठ मानी गई है और उसका प्रयोग सभी कर्मों में किया जा सकता है।

माला के दानों के विषय में भी अलग-अलग मत हैं। विभिन्न वस्तुओं की माला में दानों की संख्या अलग-अलग रखने का आदेश है। परन्तु रुद्राक्ष की माला में १०८ दाने होने चाहिए। यही माला सवश्रेष्ठ भी है।

आसन विधान

विभिन्न प्रकार के कर्मों में अलग-अलग आसनों से बैठने का आदेश किया गया है।

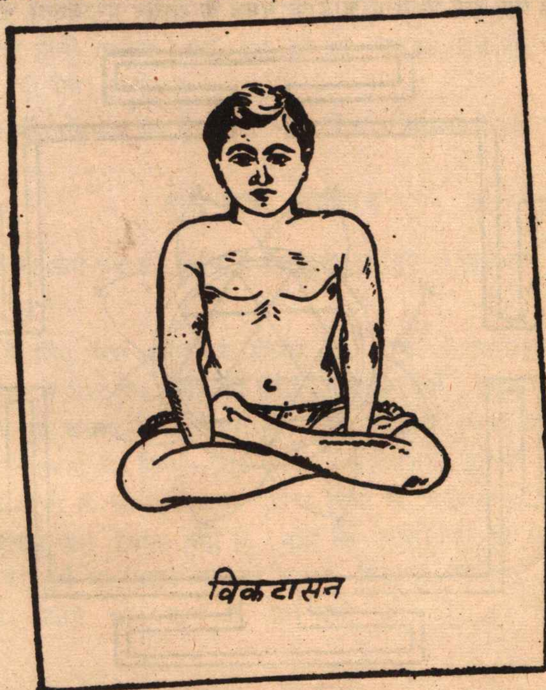


पद्मासन

पुष्टि कर्म में 'पद्मासन', स्तम्भन कर्म में 'विकटासन', आकर्षण, पुष्टि-कर्म तथा विद्वेषण में 'कक्कुटासन', शान्ति-कर्म में 'स्वस्तिकासन' उच्चाटन कर्म में 'अर्द्ध स्वस्तिकासन', मारण कर्म में 'आर्घ्यस्थान पार्ष्णिकासन' तथा वशीकरण में 'भद्रासन' से बैठना उचित है।

'पद्मासन' (पिछले पृष्ठ पर दिया गया चित्र) तथा 'विकटासन' की स्थितियों को निम्न चित्र में प्रदर्शित किया गया है। अन्य आसनों के विषय में किसी योगासन सम्बन्धी ग्रन्थ के अध्ययन अथवा किसी योगी व्यक्ति द्वारा जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

आसन के उचित प्रयोग के बिना भी साधित कर्म फलीभूत नहीं हो पाता, अतः इस सम्बन्ध में भी सजग रहने की आवश्यकता है।


विकटासन

बिछाने के आसन

उक्त आसन तो साधक की बैठक का स्वरूप निश्चित करने के लिए बताये गये हैं, अब बिछाने के आसनों के विषय में भी समझ लेना चाहिए।

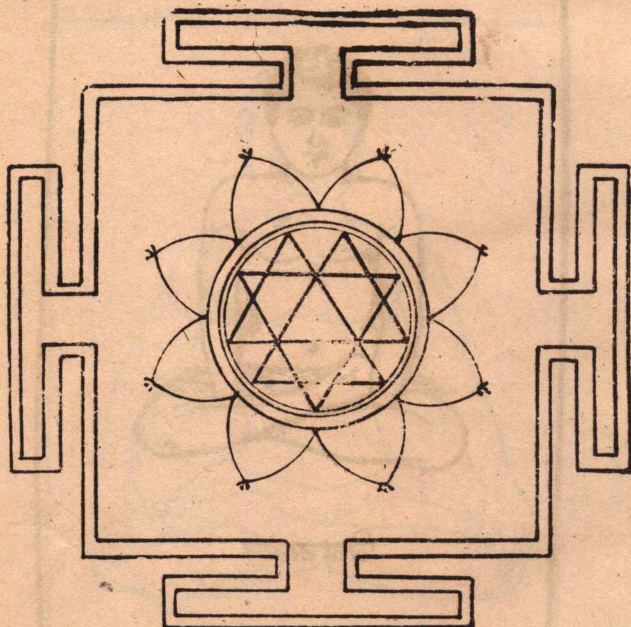
विभिन्न कर्मों के लिए विभिन्न प्रकार के आसन कहे गये हैं, उन्हें नीचे लिखे अनुसार समझ लें—

वशीकरण कर्म के लिए मेंढ़े के चमड़े के आसन पर बैठकर साधन करना चाहिए।

आकर्षण कर्म के लिए बाघ के चमड़े के आसन (बाघम्बर) पर बैठना चाहिए।

उच्चाटन कर्म के लिए ऊँट के चमड़े के आसन पर बैठना चाहिए।

विद्वेषण कर्म के लिए घोड़े के चमड़े के आसन पर बैठना चाहिए।



(सर्वतोभद्र मण्डल)

मारण कर्म के लिए भैंसे के चमड़े के आसन पर बैठना चाहिए।

मोक्ष-साधन के लिए हाथी के चमड़े के आसन पर बैठना चाहिए।

चमड़े के आसनों को प्रयोग में लाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि उसमें कोई छिद्र आदि न हो।

लाल रंग के कम्बल का आसन (ऊनी) सब प्रकार के कार्यों के लिए शुभ कहा गया है। अतः उस पर बैठकर प्रत्येक कर्म का साधन किया जा सकता है।

आसन का साफ-सुथरा एवं पवित्र होना आवश्यक है। न तो वह कहीं से कटा-फटा हो और न कीड़े-मकोड़ों द्वारा ही खाया गया हो। उस पर धूलि भी नहीं होनी चाहिए। फटे हुए, टूटे हुए अथवा जले हुए आसनों का उपयोग में नहीं लेना चाहिए।

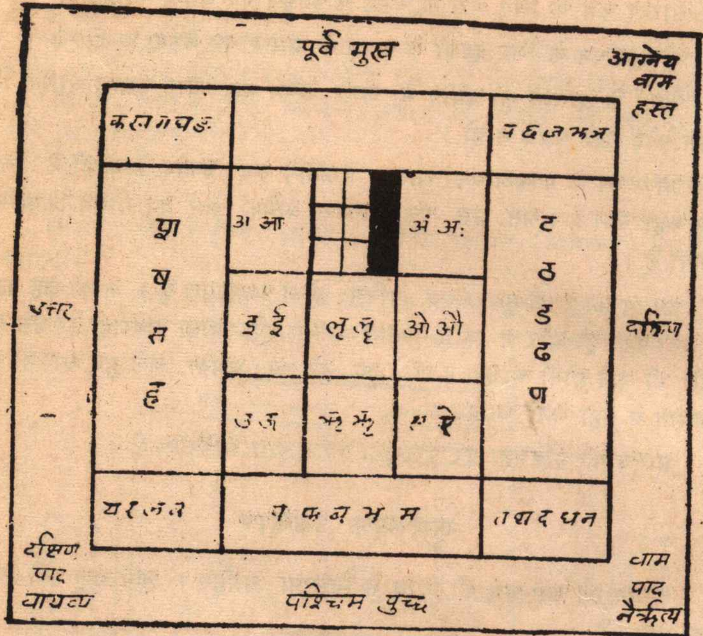
आसन की पवित्रता पर पूरा-पूरा ध्यान देना आवश्यक है।

कूर्म-चक्र विचार

आसन को कूर्म-चक्र की विधि से बिछाना चाहिए। कूर्म-चक्र की विधि इस प्रकार है—

पूजन के लिए जिस स्थान पर बैठना हो, उसके ९ भाग कर दें। फिर स्थान के नाम से सिर के अक्षर को जिस भाग में देखें, उसके भी ९ भाग करें। फिर, पूर्व अक्षर में जो मात्रा हो, उसी मात्रा के स्थान में आसन को बिछायें। उदाहरण के लिए—कोठे का पहला अक्षर कूर्म के सिर में है। सिर के नौ भागों में 'ओ' की मात्रा उत्तर दिशा के मध्यस्थान में है। नीचे प्रदर्शित चित्र में यह स्थान वहीं है, जहाँ कि काली स्याही लगी हुई है। अतः यहीं पर कूर्म का मस्तक जानकर आसन बिछाना चाहिए। इस प्रकार कूर्म-चक्र में जितने भी स्थान हैं उन सभी को कूर्म का सिर जानना चाहिए।

कूर्म-चक्र का स्वरूप इस प्रकार है—



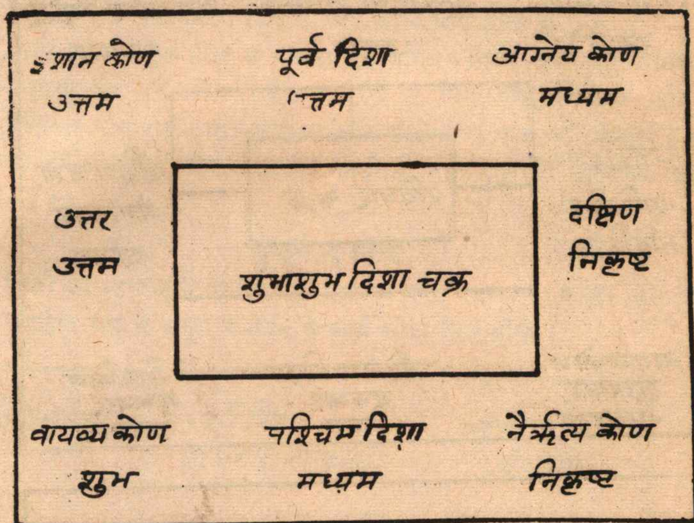
(कूर्म-चक्र)

शुभाशुभ दिशा चक्र

जिस दिन यन्त्र लिखने अथवा मन्त्र जपने के लिए बैठें, उस दिन आसन को पूर्व दिशा में रक्खें। दूसरे दिन अग्निकोण में तथा तीसरे दिन दक्षिण में रक्खें। इस प्रकार सातवें दिन उत्तर दिशा में रक्खें। ईशान कोण खाली रखना चाहिए। अगले पृष्ठों पर शुभाशुभ दिशा चक्र का स्वरूप प्रदर्शित किया गया है।

शुभ कार्य हो तो चन्द्रमा, शुभ वार तथा शुभ दिशा को सामने अथवा दायीं ओर रखना चाहिए। योगिनी, दिशाशूल तथा निकृष्ट वार को पीठ पीछे अथवा बायीं ओर रखना चाहिए। निकृष्ट कार्य के लिए योगिनी,

निकृष्ट दिन तथा दिशाशूल को सामने अथवा दायीं ओर रखना उचित है।



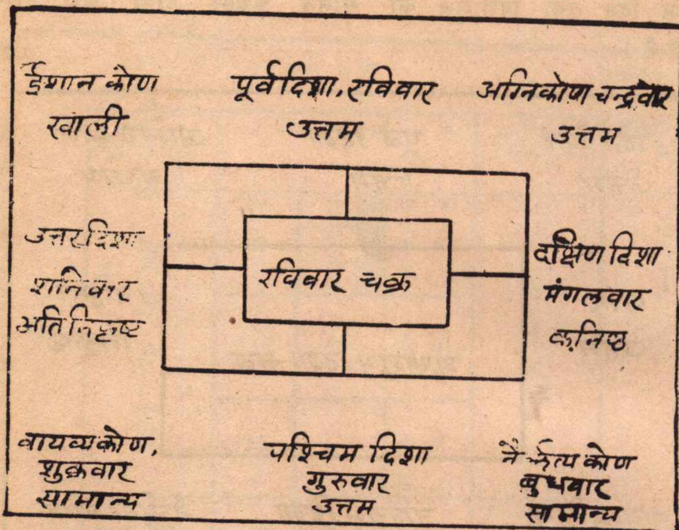
(शुभाशुभ दिशा चक्र)

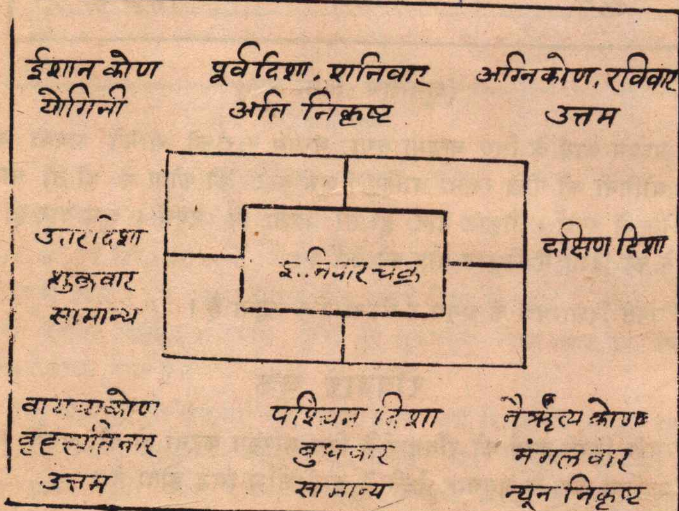
मध्यम कार्य के लिए चन्द्रमा तथा मध्यम वार को सामने अथवा दायें ओर योगिनी को पीछे रखना चाहिए। शुभ बार को कोण में हो तो सामने के कोण में रक्खें। निकृष्ट वार हो तो दिशा में रक्खें। शुभ वार हो तो सामने की दिशा में निकृष्ट वार को देखें।

उक्त दिशा-चक्र के अनुसार बैठना ठीक रहता है।

रविवार चक्र

यदि किसी कार्य को रविवार के दिन आरम्भ करना हो तो अगले पृष्ठ पर प्रदर्शित चक्र के अनुसार बैठने से कार्य शीघ्र सिद्ध होता है।


ईशान कोण
खाली
पूर्व दिशा, रविवार
उत्तम
अग्निकोण चन्द्रवार
उत्तम
उत्तर दिशा
शनिवार
अति निकृष्ट
रविवार चक्र
दक्षिण दिशा
मंगलवार
कनिष्ठ
वायव्यकोण,
शुक्रवार
सामान्य
पश्चिम दिशा
गुरुवार
उत्तम
नैऋत्य कोण
बुधवार
सामान्य


ईशान कोण
योगिनी
पूर्व दिशा, शनिवार
अति निकृष्ट
अग्निकोण, रविवार
उत्तम
उत्तर दिशा
शुक्रवार
सामान्य
चक्र
दक्षिण दिशा
वायव्यकोण
बृहस्पतिवार
उत्तम
पश्चिम दिशा
बुधवार
सामान्य
नैऋत्य कोण
मंगल वार
न्यून निकृष्ट

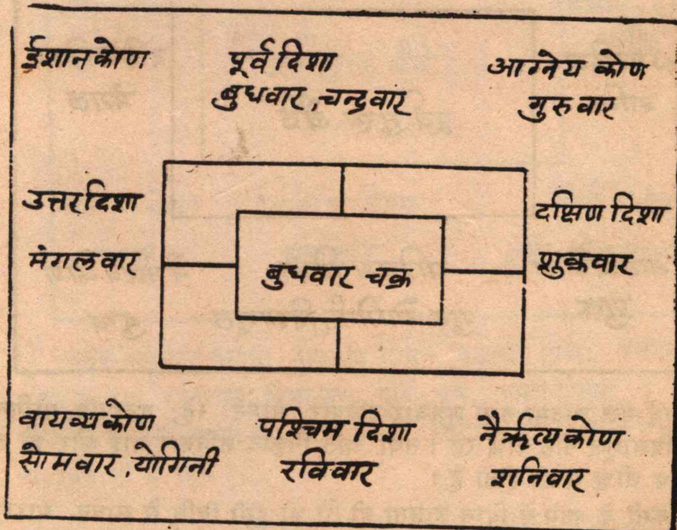
शनिवार चक्र

यदि किसी कार्य को शनिवार के दिन आरम्भ करना हो तो पिछले पृष्ठ पर नीचे प्रदर्शित चक्रानुसार बैठने से कार्य शीघ्र सिद्ध होता है।

इसमें पश्चिम-मुख बैठने से चन्द्रमा एवं सामान्य दिशा तथा वार सामने, शुक्र-सामान्य कब दायें, योगिनी ईशान कोण में पीठ पीछे, सामान्य खोटा दिन-शनिवार पीठ पीछे तथा उत्तम-चन्द्रवार बाईं ओर शुक्र को देखता है। योगिनी की दृष्टि बाईं ओर मंगल पर पड़ती है तथा बृहस्पति रविवार को देखता है।

बुधवार-चक्र

किसी अधिकार-वृद्धि के लिए बुधवार को कार्य आरम्भ करना हो तो नीचे प्रदर्शित चक्र के अनुसार बैठने से कार्य शीघ्र सिद्ध होगा।



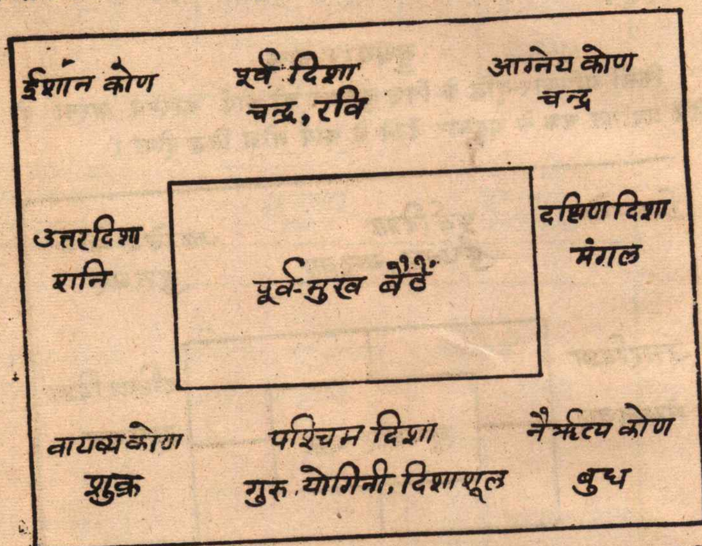
इसमें पूर्व-मुख बैठने से चन्द्रमा तथा बुध सामने रहेंगे। रविवार पीछे बुध को देख रहा है। शुक्र, गुरु दायें, मंगल बाँये, योगिनी तथा शनि—दोनों

पीछे रहेंगे। ईशान-मुख बैठना चाहिए। चन्द्रमा, बुधवार गुरु दायें, योगिनी बायें तथा शनि पीछे रहें। मंगल भी बायें तुल्य हो।

इस युक्ति से मारण, उच्चाटन कर्म का आरम्भ करें तो नैऋत्य-मुख बैठने से शनिवार अति खोटा दिन सम्मुख, योगिनी दायें, वृहस्पति शुक्रवार बायें तथा चन्द्रमा भी बायें हो जायेगा।

रविवार-चक्र

अधिकार प्राप्ति के लिए कहीं जाने का उद्योग करना हो तो रविवार के दिन नीचे प्रदर्शित चित्र के अनुसार बैठना चाहिए।



पूर्व-मुख चन्द्रमा तथा शुक्रवार-रविवार सामने रहे; वृहस्पति, योगिनी तथा दिशाशूल पीठ पीछे रहें। तथा अति निकृष्ट शनिवार बाईं ओर हो तो मनोरथ शीघ्र सफल होता है।

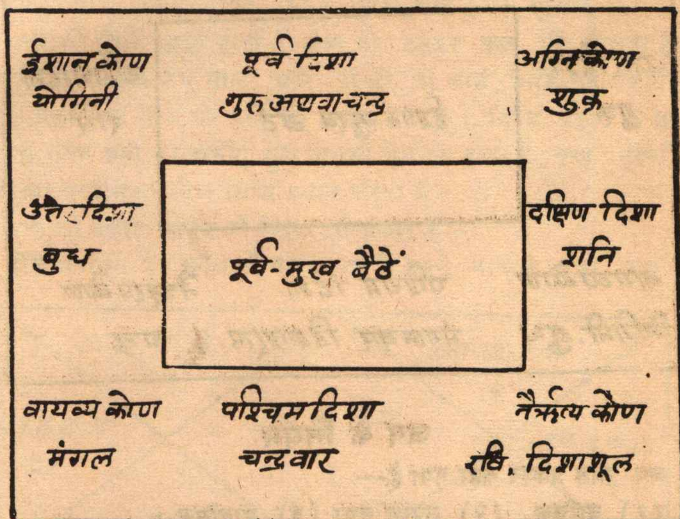
किसी के काम में विघ्न डालना हो तो भी इसी विधि से साधन आरम्भ करना चाहिए।

उक्त-चक्र में योगिनी सामने, शनि और दिशाशूल दायें, बुद्ध तथा शुक्र बायें तथा सूर्य, चन्द्र पीछे उत्तम हैं और शक्र पर मंगल की दृष्टि है।

गुरुवार-चक्र

किसी मनोरथ की प्राप्ति, शत्रुता अथवा क्रोध प्रकट करने के लिए शुक्ल पक्ष की पहली वृहस्पति को पूर्व मुख वैठें। योगिनी शुभ कोण तथा शुभ दिशा में हो तो अति शीघ्र सिद्धि की प्राप्ति होती है।

नीचे प्रदर्शित चक्र द्वारा इस विषय की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

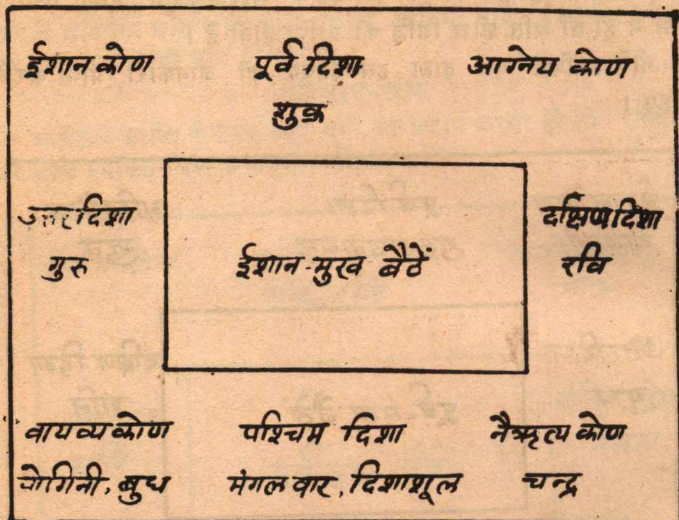


इसके अनुसार चन्द्रमा, बृहस्पति सामने, चन्द्रवार पीछे; योगिनी ईशान कोण में बायें, शनिश्चर, दिशा-शूल दायें, शुक्र, मंगल सामने के कोण में, रविवार योगिनी आमने-सामने के कोणों में तथा बुध, शनि आमने-सामने की दिशाओं में रहेंगे।

कार्य-नाशक सिद्धि चक्र

यदि किसी काम को बिगाड़ने का उपाय करना हो तो अगले पृष्ठ पर प्रदर्शित चक्र के अनुसार समय देखकर बैठना चाहिए।

ईशान-मुख बैठने से शनिश्चर दायें, योगिनी बाँये पीछे, चन्द्रवार सामने शून्य है। इस विधि से मनोरथ की सिद्धि अवश्य होती है।



जप के नियम

जप तीन प्रकार कहा गया है—

(१) वाचिक, (२) उपांशु तथा (३) मानसिक।

जप करते समय मन्त्र को यदि कोई अन्य व्यक्ति भी सुन सके तो उसे 'वाचक जप' कहा जाता है।

जप करते समय मन्त्र यदि स्वयं को ही सुनाई दे तो उसे 'उपांशु जप' कहा जायगा।

जप करते समय होंठ और जीभ न चले तथा केवल मन-ही-मन ध्यान करते हुए जप किया जाय, तो उसे 'मानसिक जप' कहा जाता है।

अभिचार (मारणादि) कर्म में 'वाचक जप'; शान्ति तथा पुष्टि कर्म में 'उपांशु जप' तथा मोक्ष-साधन में 'मानसिक जप' करना चाहिए।

वशीकरण के लिए पूर्व दिशा की ओर मुँह करके जप करें। अभिचारादि कर्म में दक्षिण की ओर, धन प्राप्ति के लिए पश्चिम की ओर तथा आयु-रक्षा, शान्ति एवं पुष्टि कर्म के लिए उत्तर-दिशा की ओर मुँह करके जप करना चाहिए।

मन्त्र की प्रकृति

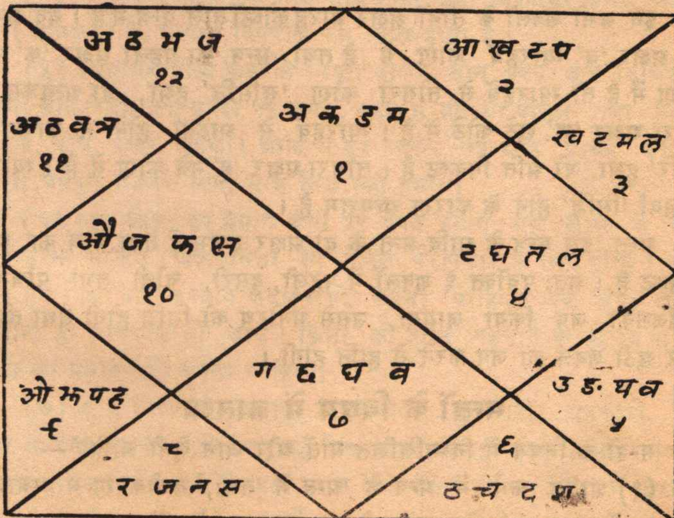
मन्त्र की चार प्रकार की प्रकृति कही गई है—

(१) अरि, (२) साध्य, (३) सिद्धि और (४) सुसिद्धि।

मन्त्र की जैसी प्रकृति होती है, वैसा ही उसका फल भी मिलता है। मन्त्र की प्रकृति यदि शत्रु भाव 'अरि' में हो तो कार्य सिद्धि नहीं होती। 'साध्य' प्रकृति का मन्त्र भी काम को बिगाड़ देता है। 'सिद्धि' प्रकृति के मन्त्र का कार्य समय आने पर अर्थात् कुछ विलम्ब से सिद्ध होता है तथा 'सुसिद्धि' प्रकृति का मन्त्र बहुत शीघ्र सिद्धि प्रदान करता है।

मन्त्र की प्रकृति जानने की विधि इस प्रकार है—

नीचे प्रदर्शित १२ कोष्ठकों वाले यन्त्र में अपने नाम के तथा मन्त्र के



आदि अक्षरों को देखें। यदि अपने नाम के अक्षर के कोण से मन्त्र के आदि अक्षर का कोण पहला, पाँचवा अथवा नवाँ हो हो तो मन्त्र को 'सिद्धि' प्रकृति का समझना चाहिए। यदि दूसरा, छठा अथवा दसवां कोण हो तो 'साध्य' प्रकृति का समझना चाहिए। यदि तीसरा, सातवां अथवा ग्यारहवां कोण हो तो 'सुसिद्धि' प्रकृति का समझना चाहिए। यदि चौथा, आठवाँ अथवा बारहवाँ कोण हो तो 'अरि' प्रकृति का समझ लें।

यदि मन्त्र में तीन या चार बीज हों तो लोम-प्रति-लोम की विधि से जो बीज सुसिद्धि हो, उसे मन्त्र के आदि में लगाना चाहिए। जैसे—वेदप्रकाश 'क श ह' मन्त्र को जपना चाहता है तो लोम-प्रति-लोम विधि से इस मन्त्र की ६ शक्लें निम्नानुसार होंगी।

१	२	३
क श ह	क ह श	श ह क
४	५	६
ह क श	ह श क	श क ह

इन सभी शक्लों के तीनों अक्षर बारह कोष्ठों वाले यन्त्र में हैं। वेद प्रकाश का अक्षर 'व' ग्यारहवें कोण में है तथा मन्त्र का पहला अक्षर 'क' पहले कोण में है तो ग्यारहवें से तीसरा कोण 'सुसिद्धि' हुआ, जो अत्युक्रम है। दूसरा अक्षर 'श' छठे कोठे में है। ग्यारहवें से आठवाँ होने के कारण यह 'अरि' हुआ, जो अति निकृष्ट है। तीसरा अक्षर 'ह' नवे कोण में है। ग्यारहवे से नवाँ 'सिद्धि' होने के कारण अत्युत्तम है।

अस्तु, इस मन्त्र के आदि-अन्त के दो अक्षर उत्तम हैं तथा बीच का अक्षर निकृष्ट है। अतः पूर्वोक्त ६ शक्लों में पहली, दूसरी, चौथी तथा पाँचवी में से जिसका जप किया जायगा, उससे मनोरथ की सिद्धि होगी तथा तीसरी और छठी शक्ल का जप करने से हानि होगी।

मन्त्रों के विषय में ज्ञातव्य

मन्त्रों के विषय में निम्नलिखित बातें और जान लेनी चाहिएँ—

(१) शान्ति कर्म में मन्त्र के अन्त में 'नमः,' वशीकरण में 'स्वाहा'; स्तम्भन में 'वषट्'; विद्वेषण में 'वोषट्; उच्चाटन में 'हुँ' तथा मारण कर्म

में 'फट्' शब्द का प्रयोग करके हवन करना चाहिए। मन्त्र के अन्त में उक्त शब्दों को जोड़ देना उचित है।

(२) मन्त्रों की स्त्री-पुरुषादि तीन संज्ञाएं इस प्रकार कही गई हैं—

जिन मन्त्रों के अन्त में 'स्वाहा' पद रहता है, वे 'स्त्री-संज्ञक' होते हैं। जिन यन्त्रों के अन्त में नमः' पद रहता है, वे 'नपुंसक संज्ञक' होते हैं। जिन मन्त्रों के अन्त में 'हुं फट्' पद रहता है, वे पुरुष संज्ञक होते हैं।

वशीकरण, शान्तिकर्म तथा अभिचार कर्म में पुरुष संज्ञक मन्त्र प्रयुक्त होते हैं। क्षुद्र क्रियादि के नाश में स्त्री संज्ञक मन्त्र प्रयुक्त होते हैं तथा अन्य कर्मों में 'नपुंसक संज्ञक' मन्त्रों का प्रयोग होता है।

(३) मन्त्र साधन से पूर्व ऋणीधनी का विचार का लेना आवश्यक है। साथ ही वर्ग, राशि, मास, वार, तिथि, नक्षत्र, चन्द्रमा, योगिनी, दिशाशूल, दिशा, लग्न तथा कूर्म चक्रानुसार आसन आदि का विचार कर लेना चाहिए।

(४) मन्त्र-यन्त्र साधन के लिए साधक का पूर्ण विश्वासी तथा श्रद्धालु होना आवश्यक है, अन्यथा विपरीत फल प्राप्त होता है।

(५) स्नानादि नित्य कर्मों से निवृत्त होकर तीन दिन तक विधिपूर्वक पूजन, तीन रात्रि तक पृथ्वी पर शयन, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन तथा मिथ्या भाषण, क्रोध, ईर्ष्या, अहंकार आदि से दूर रहकर, तब मन्त्र साधन आरम्भ करना चाहिए। इनके बिना मन्त्र सिद्ध नहीं होता।

(६) मन्त्र विद्या का प्रयोग कभी भी अपने स्वार्थ एवं लाभ के लिए नहीं करना चाहिए। यह विद्या तो केवल परोपकार के लिए ही है। अपने लिए हमें विद्या का उपयोग केवल तभी करना चाहिए, जब वैसा करना नितान्त ही आवश्यक हो जाय। किसी को हानि पहुंचाने के उद्देश्य से इस विद्या का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(७) अन्ध विश्वासी, शंकालु, मिथ्यावादी, दुराचारी, अहंकारी, मूर्ख तथा अपवित्र व्यक्तियों के लिए यह विद्या फलदायी नहीं होती। किसी सुयोग्य गुरु से उचित निर्देश एवं शिष्यत्व प्राप्त किये बिना भी इस विद्या में सफलता प्राप्त नहीं होती। अपूर्ण जानकारी अथवा गलत प्रयोग के कारण यह विद्या

स्वयं के लिए हानिकर भी सिद्ध हो सकती है। अतः हमें सब बातों को ख़ूब ध्यान में रखकर ही तान्त्रिक साधनों की क्रिया में प्रवृत्त होना चाहिए।

यन्त्र साधन

मन्त्र-साधन के विषय में जिन आवश्यक विषयों का उल्लेख किया गया है, यन्त्र-साधन के लिए भी उन सबको ध्यान में रखना एवं तदनुसार आचरण करना आवश्यक है। यन्त्र-साधन के लिए निम्नलिखित बातों को और ध्यान में रखना चाहिए—

(१) सर्वप्रथम यन्त्र-गायत्री के मन्त्र द्वारा यन्त्र में प्राण-प्रतिष्ठा करना आवश्यक है। यन्त्र गायत्री का मन्त्र इस प्रकार है—

"यन्त्रराजाय विद्महे महायन्त्राय धीमहि। तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्।"

इस मन्त्र द्वारा यन्त्र को चारों ओर से वेष्ठित करना चाहिए। फिर सर्वतो भद्र मण्डल में, आठों दलों में कलशों की स्थापना कर, उसके ऊपर यन्त्र को रखना चाहिए। मण्डल के चारों कोनों में चार कलश स्थापित करके प्रत्येक कलश पर हाथ रखकर—

"आँ ह्रीं क्रौं।"

इन तीन अक्षरों वाली विद्या में कूर्च-बीजों को लगाकर एक हजार बार जप करना चाहिए। फिर उस यन्त्र को चारों कलशों के जल द्वारा, अभिषेक के मन्त्रों से अभिषिक्त कर, गंध पुष्पादि से पूजन कर, प्राण-प्रतिष्ठा के मन्त्रों से यन्त्र में यन्त्र-देवता की प्राण-प्रतिष्ठा करके पूर्वोक्त यन्त्र-गायत्री के द्वारा शोडषोपचार पूजन कर, ब्राह्मण, सुवासिनी तथा कन्याओं को भोजन करना चाहिए तथा उन्हें दक्षिणा देकर आशीर्वाद ग्रहण करना चाहिए। तत्पश्चात् जिस अङ्ग में यन्त्र को धारण करने का निर्देश किया गया है, उसी अङ्ग में यन्त्र को धारण करना चाहिए।

(२) जहाँ किसी विशिष्ट वस्तु पर यन्त्र को लिखने का विधान न दिया गया हो, वहाँ यन्त्र को भोजपत्र पर लिखना चाहिए।

(३) जहाँ यन्त्र-लेखन के लिए किसी विशेष द्रव्य का विधान न

हो, वहाँ उसे गोरोचन, कपूर, केशर, कस्तूरीगोरोचन, चन्दन, अगर अथवा गजमद में से किसी भी एक वस्तु के द्वारा लिखना चाहिए।

(४) जहाँ यन्त्र लेखन के लिए किसी विशेष प्रकार की लेखनी (कलम) का उल्लेख न हो, वहाँ सोने की सलाई से लिखना चाहिए।

(५) जहाँ यन्त्र को किसी वस्तु विशेष में भर कर धारण करने का उल्लेख न हो, वहाँ उसे सोने या ताँबे के ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए। जहाँ त्रिलोह के ताबीज का उल्लेख हो, वहाँ सोना, चाँदी और ताँबा'—इन तीनों धातुओं के मिश्रण से निर्मित ताबीज समझना चाहिए।

(६) जहाँ यन्त्र को किसी विशिष्ट अङ्ग में धारण करने का उल्लेख न हो, वहाँ पुरुष को अप ो दायीं भुजा तथा स्त्री को अपनी बायीं भुजा में धारण करना चाहिए।

(७) जिस यन्त्र के साथ जिस मन्त्र के जप का निर्देश किया गया हो, उस मन्त्र का विधिपूर्वक जप करना चाहिए।

(८) मित्रता के लिए यन्त्र लिखना हो तो मुँह में मिश्री अथवा गाय का घी रखकर लिखें। यदि मारण उच्चाटन के लिए लिखना हो तो सेधा नमक एवं नीम का पत्ता मुँह में रख लें। जिह्वा-स्तम्भन के लिए लिखना हो तो मुँह में मोम रखकर लिखें। यदि स्वप्न बन्द करने के लिए लिखना हो तो मुँह में नमक रख लेना चाहिए।

(९) लेखनोपरान्त मित्रता के लिए लिखे गये यन्त्र को अगर, तगर, चन्दन चूरा, गूगल, मिश्री, गाय का घी, शहद, कपूर, दाल चीनी, जायफल एवं मेवा—इन्हें एकत्र करके इन्हीं की धूप देनी चाहिए।

मारण उच्चाटन के लिए लिखे गये यन्त्र को सेंधा नमक तथा नीम के पत्तों की धूप देनी चाहिए। जिह्वा स्तम्भन के लिए लिखे गये यन्त्र को मोम की धूप देनी चाहिए।

स्वप्न बन्द करने के लिए लिखे गये यन्त्र को नमक की धूप देनी चाहिए।

इस पुस्तक के अगले प्रकरण में सर्वप्रथम यन्त्र-साधन का उल्लेख किया गया है। वशीकरण के अतिरिक्त अन्य सभी विषयों से सम्बन्धित शास्त्रीय तथा लोक प्रचलित यन्त्रों का उल्लेख किया गया है। वशीकरण सम्बन्धी यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र तथा अन्य विषयों का विस्तृत वर्णन हमारी 'वशीकरण मोहिनी विद्या (हिप्नोटिज्म) तथा शक्ति चक्र के प्रयोग' नामक एक अन्य पुस्तक में किया गया है। अतः जो महानुभाव वशीकरण सम्बन्धी यन्त्रादि के प्रयोगों को जानना चाहते हों, उन्हें हमारी उक्त पुस्तक का अध्ययन करना चाहिए।

2

यंत्र-सिद्धि

यन्त्र-साधन के लिए प्रारम्भिक जानकारी का उल्लेख 'तान्त्रिक साधन विधि' नामक पहले प्रकरण में किया जा चुका है। इस प्रकरण में विभिन्न कार्यों की सिद्धि के लिए शास्त्रोक्त तथा लोक प्रचलित यन्त्रों का वर्णन किया जा रहा है।

दूर देशस्थ स्त्री-पुरुष को आकर्षित करने वाला 'माणिभद्र यन्त्र'

भोजपत्र के ऊपर आगे प्रदर्शित चित्र में दिखाये अनुसार तीन रेखाओं वाले एक चतुष्कोण यन्त्र को, जिस के भीतर पाँच रेखाओं की कल्पना की गई हो, गोरोचन 'कुंकुम तथा लाल चन्दन द्वारा लिखें।

पहली रेखा में विसर्ग युक्त पाँच 'स' कार बीजों को लिखकर अन्त में 'इ' कार बीज को लिखें।

दूसरी पंक्ति में 'सः, सः, क्रों, ह्रीं, क्रों'—इन पाँच बीजों को लिखें।

तीसरी पंक्ति में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ जिस व्यक्ति को आकर्षित करना हो, उसका नाम लिखें।

चौथी पंक्ति में 'ह्रीं, क्रौं, ह्रीं, क्रौं'—इन चार बीजों को लिखें।

पाँचवीं पंक्ति में 'ह्रीं, क्रौं, ह्रीं द, र'—इन पाँच बीजों को लिख कर, यन्त्र को संपूर्ण करें।

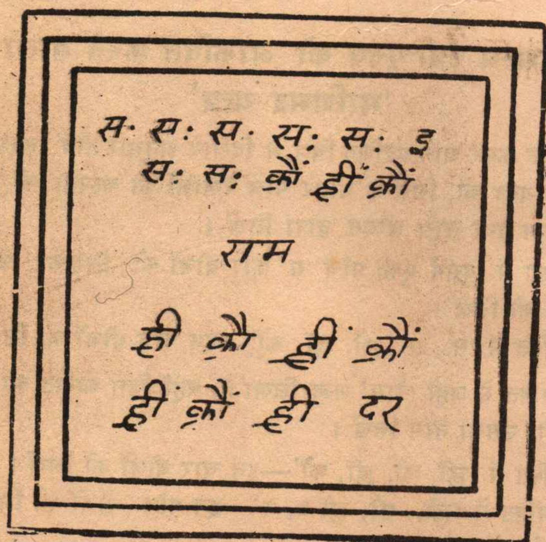
इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे अगले पृष्ठ पर दिया गया है।

यन्त्र लिखने के पश्चात् उसका गंध आदि से विधिवत् पूजन करें। तत्पश्चात् उसे एक लाल रङ्ग के सूत में बाँध कर रख दें।

अब अपने शरीर के उबटन से एक मनुष्याकार मूर्ति तय्यार करके उस मूर्ति के हृदय में पूर्वोक्त विधि से तय्यार किये गये यन्त्र को रक्खें। फिर उसे उबटन से ढक कर तीन दिन तक, तीनों सन्ध्याओं के समय खैर की अग्नि में तपते हुए निम्नलिखित मन्त्र का जप करें—

"ॐ अमुकं वेगेन आकर्षय माणिभद्र स्वाहा"

मन्त्र में जिस स्थान पर 'अमुकं' शब्द आया है, वहां जिस व्यक्ति को आकर्षित करना हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए।



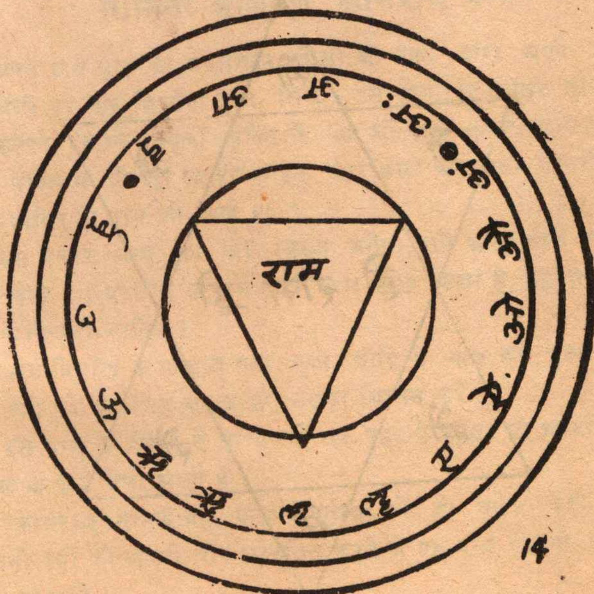
इस माणिभद्र यन्त्र के प्रभाव से देशान्तर में स्थिति साध्य-व्यक्ति आकर्षित होकर साधक के पास चला आता है।

वीर भगवान् माणिभद्र ने स्वयं भी तापन, शोषण आदि की क्रियाओं द्वारा इस मन्त्रेश्वर का पूजन किया है। भगवान् माणिभद्र इस यन्त्र एवं मन्त्र के साधक की स्वयं सहायता करते हैं तथा देशान्तर में स्थित पुरुष को आकर्षित करके साधक के पास ले आते हैं।

नर-नारी आकर्षण देवमातृक यन्त्र

सर्वप्रथम भोजपत्र के ऊपर एक त्रिकोण युक्त गोलाकार चक्र लाख के रस, हल्दी तथा मंजीठ—इन वस्तुओं द्वारा तय्यार करें। फिर उससे थोड़े अन्तर पर एक और गोलाकार चक्र खींचें। फिर उसके समीप ही दो रेखाओं से संयुक्त एक अन्य गोलाकार चक्र भी खींचे। तत्पश्चात् त्रिकोण के भीतर जहाँ 'राम' शब्द लिखा हुआ है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिख कर, दोनों गोलाकार चक्रों के भीतर अकारादि सोलह स्वरों को लिखें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है—



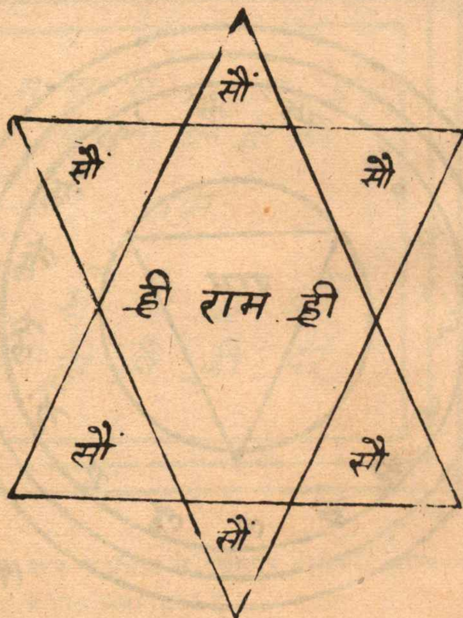
यन्त्र-निर्माण के पश्चात् साध्य-व्यक्ति के पाँव के नीचे की मिट्टी या धूलि लाकर, उसके द्वारा एक पुतली का निर्माण करें तथा उस पुतली के योनि-भाग में विधिवत् पूजन करने के पश्चात् यन्त्र को स्थापित करें।

इस क्रिया से साध्य-व्यक्ति चाहे स्त्री हो अथवा पुरुष, आकर्षित होकर स्वयं ही साधक के समीप चला आता है। तन्त्र शास्त्र में इस यन्त्र को अत्यन्त गुप्त रखने की आज्ञा दी गई है।

सर्वजन आकर्षक 'त्रैपुराख्य यन्त्र'

भोजपत्र के ऊपर जल मिश्रित गोरोचन द्वारा एक षट्-कोण यन्त्र लिखें। यन्त्र के प्रत्येक कोण में 'सौं' बीज लिखें तथा यन्त्र के मध्य भाग में अगल-बगल दो 'ह्रीं' बीज लिख कर बीच में साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है।



ऊपर प्रदर्शित यन्त्र के मध्य में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

जब यन्त्र तय्यार हो जाय, तब उसका गन्ध आदि से विधिपूर्वक पूजन करके घी के भीतर स्थापित करें, तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का जप करते हुए भगवती त्रिपुरा की प्रार्थना करें। मन्त्र इस प्रकार है—

"आकर्षय महादेवि देवदत्तं मम प्रियम्।
हे त्रिपुरे देवदेवेशि तुभ्यं दास्यामि यान्चितम्।"

उक्त मन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' शब्द आया है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

पूर्वोक्त प्रकार से यन्त्र-निर्माण एवं मन्त्र-जप से सातवें दिन ही साध्य-व्यक्ति आकर्षित होकर साधक के समीप आ जाता है।

मानिनी आकर्षण 'कामराज यन्त्र'

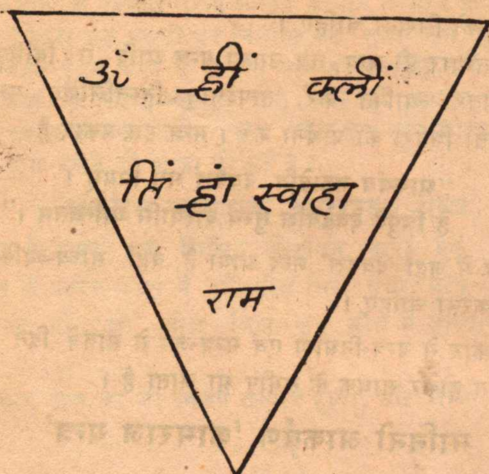
अपने दायें हाथ की अनामिका उँगली के रक्त द्वारा अपने बाँये हाथ की हथेली पर एक त्रिकोण यन्त्र लिखें। उस यन्त्र के भीतर तीन पंक्तियों की कल्पना करके पहली पंक्ति में 'ॐ ह्रीं क्लीं'—इन तीन बीजों को, दूसरी पंक्ति में 'तिं ह्रां स्वाहा'—इन चार वर्णों को तथा तीसरी पंक्ति में साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखे।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे अगले पृस्ठ पर प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम के लिखना चाहिए।

यन्त्र-निर्माण के पश्चात् गन्ध, पुष्प आदि से यन्त्र का पूजन करें तथा जिस स्त्री को आकर्षित करना हो, उसका चिन्तन करें।

इस यन्त्र के प्रभाव से साध्य-स्त्री एक पहर के भीतर ही आकर्षित होकर साधक के पास चली आती है।

'कामराज' नामक यह यन्त्र देवताओं को भी दुर्लभ कहा गया है। मानिनी स्त्री को अपनी ओर आकर्षित करने में यह यन्त्र अत्यन्त प्रभावशाली माना जाता है।



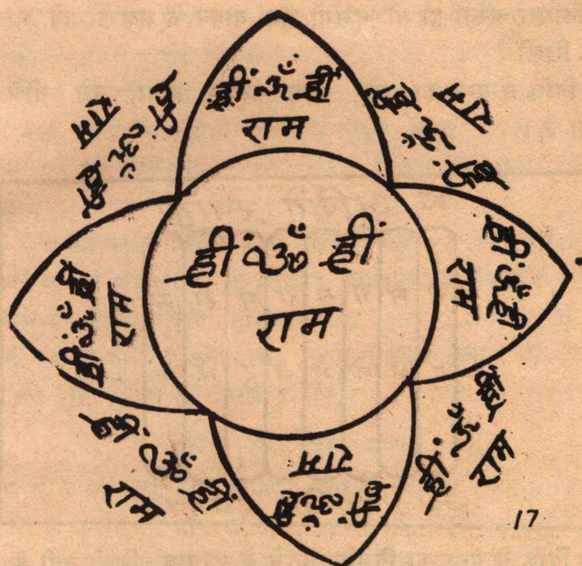
शत्रु विद्वेषण यन्त्र

श्मशान भूमि से लाये गये वस्त्र पर कौऐ के पंख की कलम से, अपने शरीर के रक्त द्वारा एक गोलाकार चक्र खींच कर, उस पर दो रेखाओं वाले चार कमल दलों को पूर्व आदि चार दिशाओं में स्थापित करें। तत्पश्चात् उस गोलाकार चक्र के भीतर चारों दलों में एवं प्रत्येक दल के सन्धि भाग में 'ह्रीं ॐ ह्रीं'—इन तीन-तीन बीजों को लिखें। तथा बीजों के नीचे प्रत्येक स्थान पर साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे अगले पृष्ठ पर प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्रों में जिन-जिन स्थानो पर 'राम' शब्द लिखा है वहां वहां साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र लिखने के बाद बकरी के रक्त मिश्रित भात एवं नैवेद्य की बलि देकर, रात के समय गन्ध पुष्प आदि से यन्त्र तथा गुरु का पूजन करके एक योगिनी को भोजन करायें फिर इस यन्त्र को उद्वास शिव मन्दिर अथवा श्मशान में स्थापित करें। भूलकर भी इस यन्त्र को न तो घर

में स्थापित करें और न घर पर इसका लेखन पूजन आदि ही करें। इस मन्त्र के प्रभाव से शत्रु का विद्वेषण होता है। इसका साधन भी एकान्त में ही करना चाहिए।



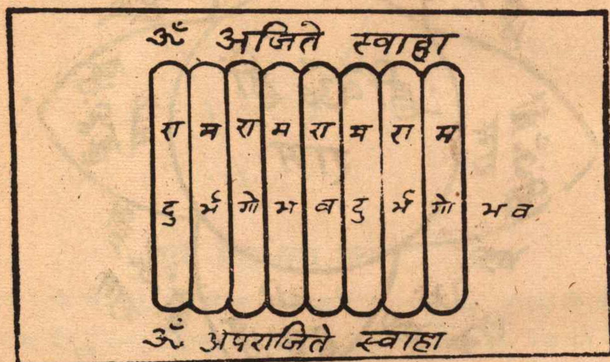
नर-नारी विद्वेषण यन्त्र

एक बड़े भोजपत्र के ऊपर गोरोचन द्वारा चतुष्कोण यन्त्र बनायें। यन्त्र के मध्य भाग में पूर्व-पश्चिम की ओर ९ खड़ी रेखायें खींचें, जिनके द्वारा ८ कोष्ठक तय्यार हों। तत्पश्चात् प्रत्येक रेखा को मिलाकर, उनके ऊपरी भाग में 'ॐ अजिते स्वाहा' तथा निचले भाग में 'ॐ अपराजिते स्वाहा'—इन पदों को लिखो तथा कोष्ठों के भीतर ऊपरी भाग में, दो बार साध्य व्यक्ति के नाम के अक्षरों को लिखें तथा नाम के अक्षरों के वर्णों के निम्न भाग में 'दुर्भगा भव' इन वर्णों को अलग-अलग बारम्बार लिखें।

यदि साध्य व्यक्ति के नाम के अक्षरों की संख्या कोष्ठों की संख्या से अधिक हो तो उन्हें बाहरी भाग में लिख देना चाहिए।

यदि यन्त्र का साधन किसी स्त्री के निमित्त करना हो तो **'दुर्भगा भव'** वाक्य के अक्षरों को अलग-अलग कोष्ठों में लिखना चाहिए और यदि किसी पुरुष के निमित्त करना हो तो **'दुर्भगो भव'** वाक्य के अक्षरों को अलग-अलग कोष्ठों में लिखो।

इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है।



उक्त विधि से यन्त्र का निर्माण करने के पश्चात् किसी नदी के किनारे पर जाकर, उसकी आर-पार (दोनों किनारों) की मिट्टी लाये फिर मौन रह कर, उक्त मिट्टी द्वारा गणेशजी की एक प्रतिमा का निर्माण करें। तत्पश्चात् यन्त्र को उस प्रतिमा के ऊपर रख कर गन्ध, फूल, मोदक (लड्डू) आदि पदार्थों से गणेश जी का पूजन करें तथा **'गणेशः प्रीयताम्'** इस वाक्य का उच्चारण करते हुए भक्ष पदार्थों द्वारा अर्थात् लड्डू खिलाकर, बालकों का पूजन करें।

इस प्रकार गणेश जी का पूजन करके तथा बालकों को लड्डू खिलाकर यन्त्र सहित प्रतिमा को एक शराव-सम्पुट अर्थात् मिट्टी के दो शकोरों के बीच स्थापित करके, पृथ्वी में गड्ढा खोदकर **'अधोरेति'** इस मन्त्र का

उच्चारण करते हुए, उस गड्ढे में गणेश जी की प्रतिमा को स्थापित करके पूजन करें।

उक्त विधि से प्रयोग करने पर, यह मन्त्र साध्य-स्त्री, पुरुष में विद्वेषण करा देता है। यदि इस यन्त्र का प्रयोग किसी स्त्री के लिए किया जाय तो वह दुर्भाग्य को प्राप्त होकर रात-दिन दुःखी रहती है। ऐसी स्त्री कैसी भी सुन्दरी क्यों न हो, तो भी कोई पुरुष उसे पसन्द नहीं करता। इसी प्रकार यदि इस यन्त्र का प्रयोग किसी पुरुष के लिए किया जाय तो उसे कोई स्त्री सहन नहीं कर पाती, फिर भले ही वह कितना ही सुन्दर और सज्जन क्यों न हो।

इस यन्त्र का प्रयोग किसी अन्य कार्य में नहीं करना चाहिए और न किसी अन्य व्यक्ति को बताना ही चाहिए, अन्यथा यह विपरीत फल देता है अर्थात् यन्त्र देने वाले के लिए हानिकर सिद्ध होता है। अतः इसे पूर्ण रूप से गुप्त ही रखना चाहिए तथा स्वयं साधन करते समय भी इसकी सब क्रियाओं को गुप्त रूप से ही करना चाहिए।

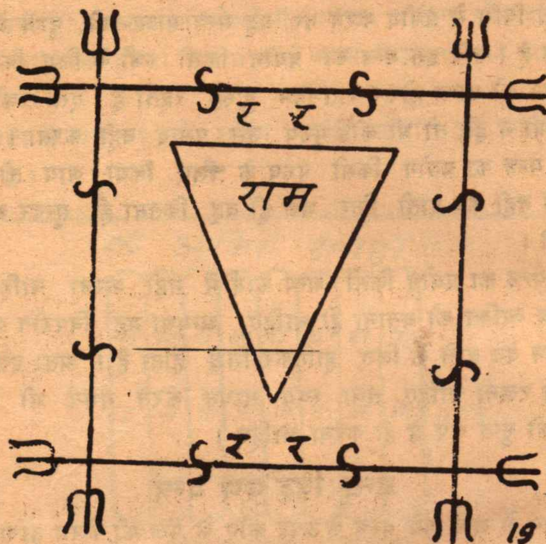
बन्धु विद्वेषण यन्त्र

श्मशान से लाये गये वस्त्र के ऊपर कौए के पंख की कलम द्वारा भूत रात्रि में, श्मशान के अंगार को मेढ़ा के रक्त में घिस कर उसके द्वारा एक चतुष्कोण यन्त्र खींचें। उस चतुष्कोण के भीतर एक त्रिकोण यन्त्र खींचें। चतुष्कोण के प्रत्येक कोण में तथा प्रत्येक रेखा में त्रिशूल बनायें। तत्पश्चात् उसकी पूर्वादि चारों दिशाओं में 'र' कार के दुहरे रेक स्थापित करें। अन्त में त्रिकोण के भीतर साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखें तथा त्रिकोण के ऊपर-नीचे दो-दो 'र' कार वर्ण लिखें।

इन प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे अगले पृष्ठ पर प्रदर्शित किया गया है। इस प्रदर्शित यन्त्र के मध्य भाग में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र लेखनोपरान्त बकरी के रक्त मिश्रित भात-नैवेद्य द्वारा बलि देकर तथा गन्ध पुष्पादि से पूजन कर, यन्त्र को भूमि में ७ अँगुल गहरा गड्ढा खोद कर दबा दें।

इस यन्त्र के प्रभाव से भाई-भाई में विद्वेषण हो जाता है। जिस स्थान पर यह यन्त्र गढ़ा होगा, उस जगह यदि किसी अन्य व्यक्ति का पाँव पड़



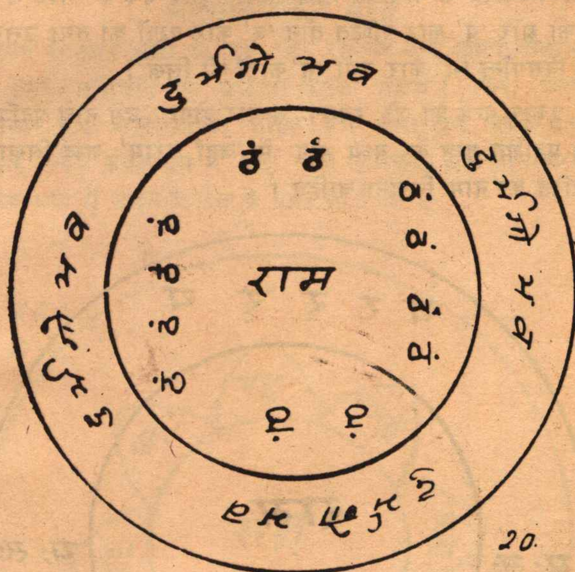
जायगा, तो वह भी दुर्भाग्य का भागी बनेगा। इस यन्त्र को उस जगह गाढ़ना चाहिए, जहाँ कि साध्य-व्यक्ति के आने-जाने का मार्ग हो, ताकि उसका पाँव यन्त्र गढ़े स्थानप र सके।

जगत् विद्वेषण यन्त्र

कौआ, उल्लू एवं दुर्भागा-स्त्री के मासिक धर्म के रक्त से, भोजपत्र के ऊपर, कौए की कलम द्वारा एक गोलाकार चक्र लिखें। उससे अंगुल भर की दूरी पर एक दूसरा गोलाकार चक्र लिखें। फिर चक्र के मध्य भाग में साध्य व्यक्ति के नाम को सानुस्वार लिख कर, उसके पूर्व तथा पश्चिम के भाग में चार-चार 'ठं' बीज तथा उत्तर और दक्षिण के भाग में दो-दो 'ठं' बीज लिखें। फिर बहिभाग के पूर्वादि चारों भागों में यदि साध्य-व्यक्ति पुरुष हो

तो 'दुर्भगो भव' और यदि स्त्री हो तो 'दुर्भगा भव' इस वाक्य को लिखना चाहिए।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र के मध्य भाग में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहां साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना उचित है।



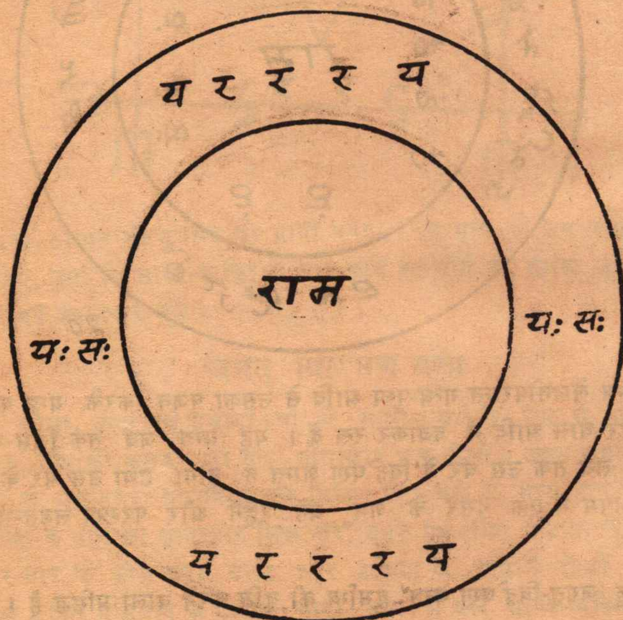
यन्त्र लेखनोपरान्त गन्ध-पुष्प आदि से उसका पूजन करके यन्त्र को घर के भीतर घास आदि में दबाकर रख दें। यह यन्त्र जब तक जिस घर में रहेगा, तब तक उस घर में विद्वेषण शान्त न होगा तथा उस घर के सभी लोग आपस में एक दूसरे के शत्रु बने रहेंगे और परस्पर लड़ते-झगड़ते रहेंगे।

यह 'जगत्-विद्वेषण यन्त्र' दुर्भाग्य की वृद्धि करने वाला प्रसिद्ध है।

स्वामी सेवक विद्वेषण यन्त्र

श्मशान के वस्त्र पर, कौए के पंख की कलम से रक्त-मिश्रित विष द्वारा एक गोलाकार यन्त्र खींचकर उसके एक अँगुल के अंतर से एक अन्य गोलाकार यन्त्र खींचें। पहले चक्र के भीतर अर्थात् यन्त्र के मध्य भाग में अनुसार सहित साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखें तथा दूसरे चक्र के मध्य में पूर्व तथा पश्चिम की ओर 'य' कार पुष्टित तीन 'र' कार वर्णों को तथा उत्तर दक्षिण की ओर विसर्गान्त 'य' कार तथा 'स' कारों को लिखें।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र के मध्य भाग में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।



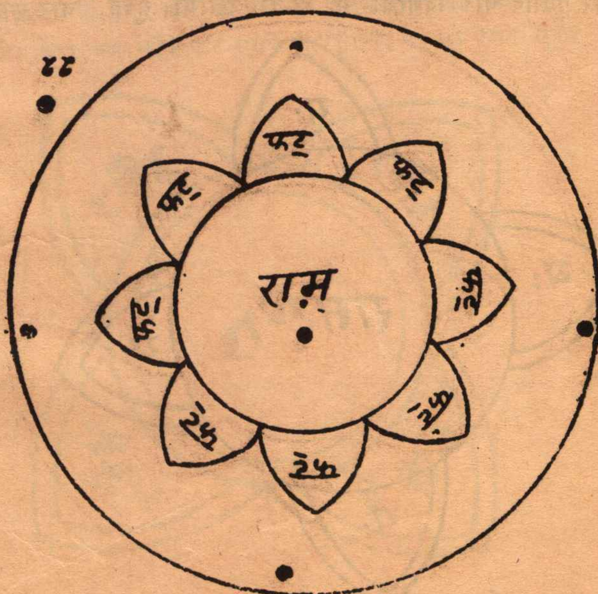
580

यन्त्र लेखनोपरान्त गन्ध-पुष्प आदि से उसका पूजन करके, जिस मार्ग से स्वामी और सेवक आते-जाते हों, उस मार्ग की भूमि में एक गड्ढा खोदकर उसमें यन्त्र को दबा दें।

इस भूमिस्थ यन्त्र के ऊपर जैसे ही स्वामी तथा सेवक का पाँव पड़ेगा, वैसे उन दोनों में परस्पर विद्वेषण हो जायगा अर्थात् वे एक-दूसरे से शत्रुता मान उठेंगे।

परमोच्चाटन यन्त्र

भोजपत्र के ऊपर हल्दी के वृक्ष के रस से एक छोटा गोलाकार चक्र खींचकर, उसके बहिर्भाग में अष्टदल कमल बनायें। फिर, उनके ऊपर एक गोलाकार चक्र और खींचें, ताकि सभी कमल-दल उसके अन्तर्गत आ जायें। फिर प्रत्येक कमल-दल में 'फट्' बीज लिखकर, छोटे गोलाकार-चक्र के भीतर मध्य भाग में साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखें।

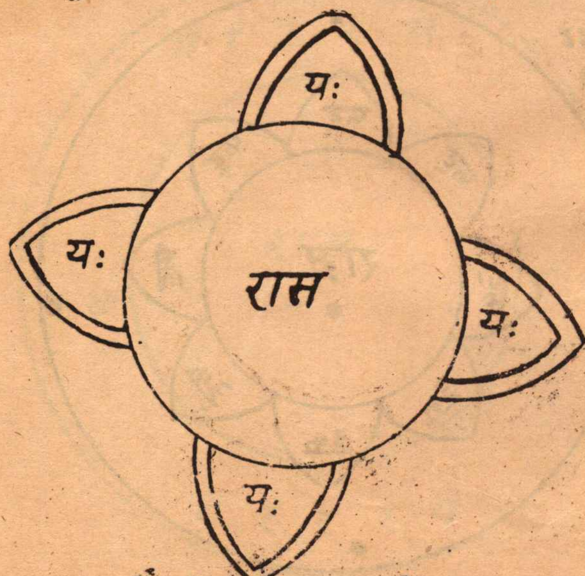


उक्त प्रकार से यन्त्र का जो स्वरूप निर्धारित होगा, उसे पिछले पृष्ठ पर प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र के मध्य भाग में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र लिखने के बाद कृष्ण पक्ष की रात्रि में लाल वस्त्र धारण कर, लाल पुष्पों की माला पहिन तथा रक्त-अनुलेपन (लाल सिन्दूर या लाल चन्दन लगाकर) से युक्त हो, लाल रंग के पुष्प, लाल रंग की गंध तथा स्वच्छ जल द्वारा यन्त्र का पूजन करके, यथाशक्ति दक्षिणा देकर किसी कुमार को भोजन करायें। तत्पश्चात् यन्त्र का चूर्णकर, उसे किसी खाने-पीने की वस्तु के माध्यम से साध्य-व्यक्ति के पेट में पहुँचा दें। इस प्रयोग से साध्य-व्यक्ति का परमोच्चाटन होगा और वह अपने स्थान को छोड़कर कहीं अन्यत्र चला जायगा।

सर्वजनोच्चाटन यन्त्र

भोजपत्र के ऊपर कौआ तथा उल्लू के रक्त से एक गोलाकार यन्त्र खींचकर, उसके ऊपर पूर्वादि चार दिशाओं में दो-दो रेखाओं युक्त, चार कमलदल



खींचें। फिर, प्रत्येक दल में विसर्ग युक्त 'य' कार वर्ण स्थापित करके, मध्य भाग में सानुस्वार साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें।

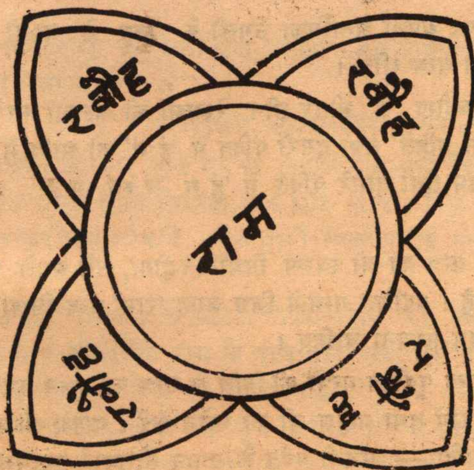
इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे पिछले पृष्ठ के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र के मध्य भाग में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिये।

जब यन्त्र लिखकर तय्यार हो जाय, तब पूर्व यन्त्र में बताई गई विधि से यन्त्र का पूजन एवं ध्यान करने के पश्चात् अन्तिम यन्त्र के टुकड़े-टुकड़े करके, उन टुकड़ों को झूठे भात में मिलाकर कौओं को खिला दें।

इस यन्त्र के प्रभाव से साध्य-व्यक्ति का उच्चाटन होगा और वह नगर ग्राम की तो बात ही क्या, उस दिशा को भी छोड़कर कहीं अन्यत्र चला जायगा।

शत्रु परम-उच्चाटन यन्त्र

भोजपत्र के ऊपर कौए के पंख की कलम द्वारा नीम के पत्तों के रस से एक गोलाकार चक्र खींच कर उसके चारों दलों पर दो रेखा युक्त चार दल



लगायें। फिर प्रत्येक दल में 'र वौ ह्'—इन वर्णों को लिखकर, चक्र के मध्य में सानुस्वार साधक-व्यक्ति का नाम लिखें। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप निर्धारित होगा, उसे पिछले पृष्ठ के चित्र में प्रदर्शित किया गया है।

प्रदर्शित यन्त्र के मध्य भाग में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र लेखनोपरांत पूर्वोक्त यन्त्र की विधि से पूजन करें तथा भूमि को खोद कर, उसमें यन्त्र को अधोमुख करके दबा दें।

इस यन्त्र के प्रभाव से साध्य-शत्रु, चाहे देश में हो अथवा विदेश में, उसका सातवें दिन उच्चाटन होता है और वह अपने स्थान को छोड़ कर अन्यत्र चला जाता है।

अपने शत्रु का उच्चाटन करने के लिए इस परम उच्चाटन यन्त्र का प्रयोग बड़ा प्रभावकारी माना गया है। इस यन्त्र की सब क्रियायें गुप्त रखनी चाहिएँ। इसके विषय में किसी को बताना भी नहीं चाहिए।

शत्रु उच्चाटन-यन्त्र

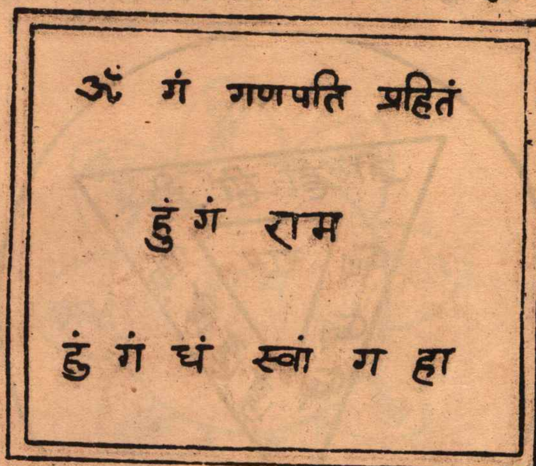
भोजपत्र के ऊपर अपनी अनामिका उँगली के रक्त से दो-दो रेखाओं वाला एक चतुष्कोण यन्त्र खींचें।

फिर उस चतुष्कोण के भीतर तीन रेखाओं की कल्पना करके पहली रेखा में 'ॐ गणपति प्रहितं' तथा दूसरी पंक्ति में 'हुं गं' को आदि में लगाकर साध्य-व्यक्ति का नाम तथा तीसरे पंक्ति में 'हुं गं घं स्वं ग हा' इन बीजों को लिखें।

उक्त प्रकार से यन्त्र का जो स्वरूप निर्धारित होगा, उसे अगले पृष्ठ पर प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जिस जगह 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र लेखनोपरान्त पूर्वोक्त यन्त्रों की विधि से यन्त्र का पूजन करके किसी कुमार को भोजन करायें तथा गणेश जी का ध्यान करें। गणेश जी का ध्यान इस प्रकार करना चाहिए—"अंजनी पर्वत के समान नीलवर्ण गणमुख गणेश जी शत्रु को अपने शुण्डादण्ड से पकड़ कर आकाश-मण्डल में उछाल रहे हैं।'

इस विधि से २१ दिन के भीतर ही शत्रु का उच्चाटन हो जाता है। लेखन-पूजन की क्रिया समाप्त हो जाने पर यन्त्र के टुकडे करके उन्हें



अन्तिम दिन कौओं को खिला देना चाहिए। इस प्रयोग से शत्रु अपने स्थान को छोड़ कर चला जाता है।

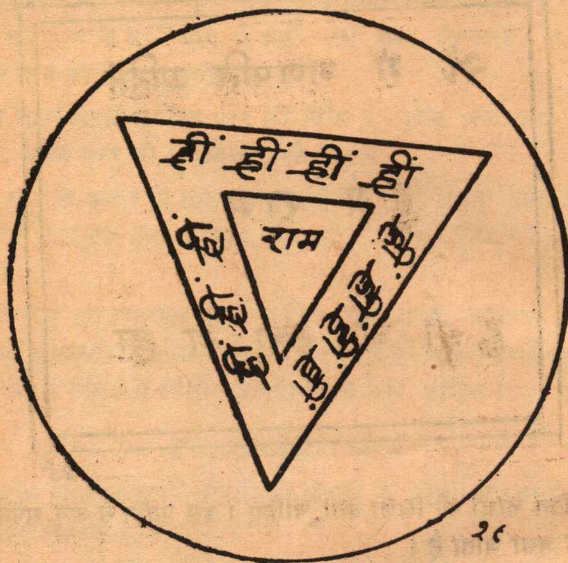
त्रैलोक्य उच्चाटन यन्त्र

भोजपत्र के ऊपर काले मुर्गे के रक्त से एक बड़ा त्रिकोण यन्त्र बनाक उसके भीतर एक छोटा त्रिकोण यन्त्र और खींचें। फिर दोनों यन्त्रों के ऊपर एक गोलाकर चक्र खींच दें, ताकि दोनों त्रिकोण उस गोल वृत्त के भीतर आ जायें।

अब छोटे त्रिकोण के भीतर साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें तथा बड़े त्रिकोण यन्त्र की प्रत्येक रेखा के नीचे चार-चार 'ह्रीं' बीजों को लिखें।

उक्त प्रकार से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे अगले पृष्ठ पर दिये के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जिस जगह 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र के तैयार हो जाने पर, पूर्वोक्त यन्त्र की विधि से पूजन करने के बाद, यन्त्र को एक कुत्ते के गले में बाँध दें। इस प्रयोग के फलस्वरूप यन्त्र



बँधा कुत्ता जिन-जिन स्थानों में जायेगा, साध्य-व्यक्ति भी उच्चाटन को प्राप्त होकर उन्हीं-उन्हीं स्थानों में दौड़ेगा।

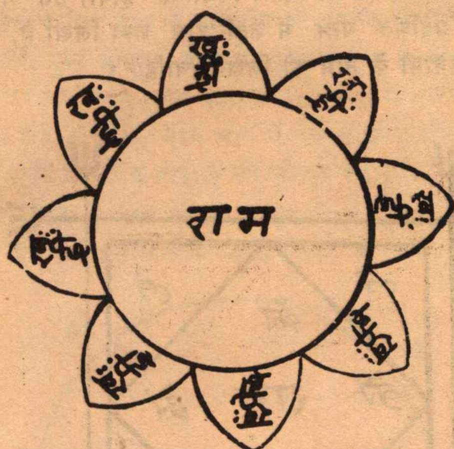
यह यन्त्र त्रिलोकी का उच्चाटन करने वाला तथा अत्यन्त अभिमत फल को देने वाला कहा गया है।

स्त्री उच्चाटन यन्त्र

काठ के टुकड़े पर कौऐ के पंख की कलम द्वारा गधे के रक्त से एक गोलाकर चक्र खींचें तथा उसे आठ कमलों से सुशोभित करें।

फिर, विसर्गान्त 'ख' कार एवं 'ह्रीं' बीज को प्रत्येक दल में लिख कर चक्र के मध्य में अनुस्वार सहित साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखें।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र के मध्यभाग में जहाँ 'राम' शब्द लिखा हुआ है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।



यन्त्र-लेखन के पश्चात् पूर्वोक्त यन्त्रों के लिए बताई गई विधि के अनुसार इस यन्त्र का भी पूजन करें। फिर, पृथ्वी को खोद कर उसके भीतर यन्त्र को अधोमुख दबा दें।

यन्त्र को भूमि में दबाने के तीसरे दिन शत्रु का उच्चाटन होगा तथा वह वायु द्वारा उड़ाये गए पत्ते की भाँति इधर से उधर दौड़ता फिरेगा।

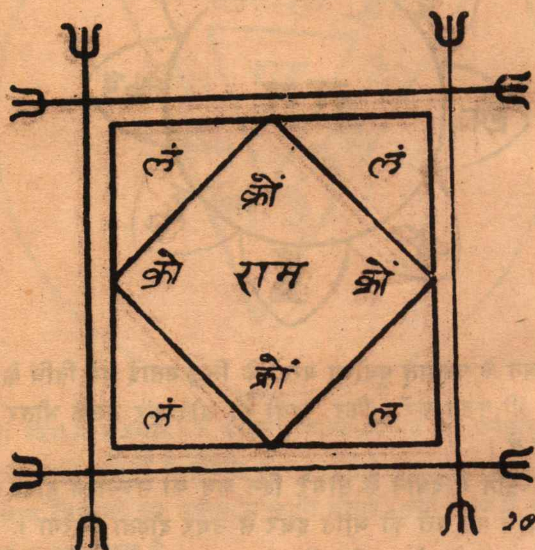
इस यन्त्र का प्रयोग केवल स्त्रियों का उच्चाटन करने के लिए ही करना चाहिए। किसी भी स्त्री का उच्चाटन करने के लिए यह प्रयोग अत्युत्तम कहा गया है।

अग्नि स्तम्भन महायन्त्र

भोजपत्र के ऊपर केशर द्वारा दो रेखा युक्त चतुष्कोण यन्त्र लिख कर उसके भीतर एक चतुष्कोण यन्त्र भिन्न प्रकार से लिखें। फिर यन्त्र के बहिर्भाग के चारों कोनों पर दो-दो त्रिशूल लगाकर भीतर वाले चतुष्कोण के

उदर में, पूर्वादि चारों दिशाओं में 'क्रौं' बीज लिख कर, मध्य में सानुस्वार साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखें। तदनन्तर मध्य कोण के बहिर्भाग में 'लं' बीजों को लिखे।

उक्त प्रकार से यन्त्र का जो स्वरूप निर्धारित होगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति अथवा गृहस्वामी के नाम को लिखना चाहिए।



लेखनोपरान्त गन्ध आदि से यन्त्र का पूजन करें। फिर ब्राह्मणों को यथा-शक्ति भोजन कराके यन्त्र को पृथ्वी में गाढ़ दें।

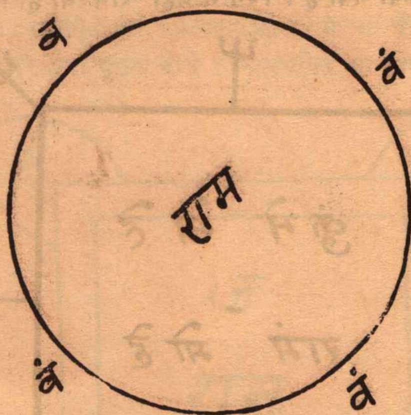
जिस जगह यह यन्त्र गाढ़ा जायेगा तथा जब तक इस यन्त्र के ऊपर पानी डाला जाता रहेगा, तब तक उस स्थान पर अग्नि का प्रकोप नहीं होगा।

यह यन्त्र अपने प्रभाव से अग्नि को स्तम्भित कर देता है।

अग्नि निवारण यन्त्र

एक बड़े भोज-पत्र के ऊपर लाल-चन्दन, गोरोचन तथा हिम द्वारा विधि-पूर्वक एक गोलाकार चक्र खींच कर, उसके मध्य-भाग में साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखें। फिर यन्त्र के बहिर्भाग की पूर्वादि चारों दिशाओं में 'वं' बीज लिख कर गंध, पुष्प आदि से यन्त्र का पूजन करें। तत्पश्चात् उसे त्रिलोह के ताबीज में भर कर अपने कण्ठ अथवा दायीं भुजा में धारण कर लें। अथवा, दूध में डाल कर, घर के मध्य भाग में रख दें और प्रतिदिन यन्त्र का पूजन करते हुए, पहले दिन एक ब्राह्मण को भोजन करायें।

पूर्वोक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र के मध्य भाग में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है,



वहाँ अपना अथवा जिस व्यक्ति को यह यन्त्र धारण कराया जाय उसका अथवा जिस घर में यन्त्र को स्थापित किया जाय, उसके गृहस्वामी का नाम लिखना चाहिए।

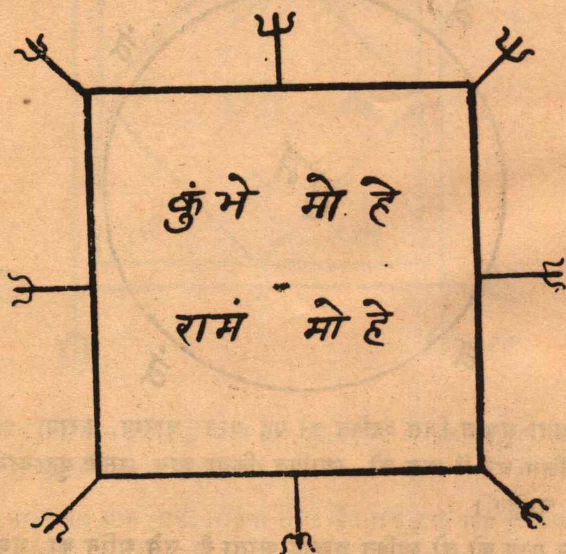
इस यन्त्र को जो व्यक्ति धारण करता है, उसे अग्नि का भय नहीं होता तथा जिस घर में यह यन्त्र स्थापित होता है, वहाँ आग लगने का भय नहीं रहता।

तन्त्र ग्रंथों में अग्नि-भय-निवारण के लिए इस यन्त्र की अत्यधिक प्रशंसा की गई है।

यात्रा-स्तम्भन यन्त्र

शिलासम्पुट के ऊपर गोरोचन, हरताल, हल्दी, मैनसिल तथा कुंकुम के द्वारा एक चतुष्कोण यन्त्र बनाकर, उसके चारों कोनों तथा चारों दिशाओं में एक-एक त्रिशूल चिह्न बनायें। फिर, यन्त्र के मध्य भाग में दो पंक्तियों की कल्पना करके पहली पंक्ति में 'कुंम्भे मो हे' लिखें तथा दूसरी पंक्ति में अनुस्वार सहित साध्य-व्यक्ति के नाम को लिख कर अन्त में 'मो हे' इन दो वर्णों से उसे युक्त कर दें।

उक्त प्रकार से यन्त्र का जो स्वरूप निश्चित होगा, उसे नीचे दिए गए चित्र में प्रदर्शित किया गया है। चित्र में जहाँ 'रामं मो हे' लिखा है, वहाँ



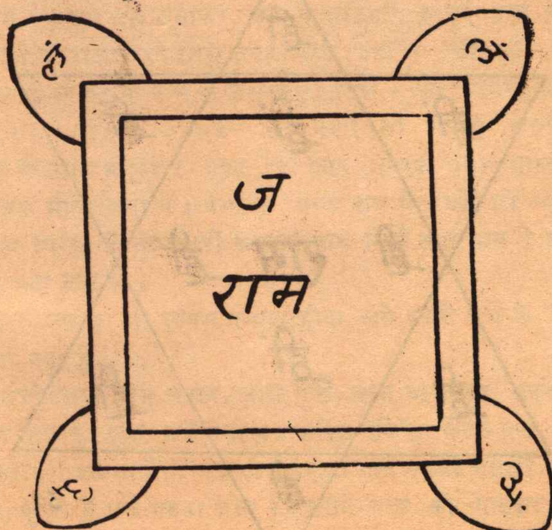
साध्य-व्यक्ति का नाम उदाहरणार्थ यदि साध्य-व्यक्ति का नाम 'कृष्णदास' है तो 'कृष्णदासं मो हे' इस प्रकार लिखना चाहिए।

यन्त्र, लेखनोपरान्त उसकी छीले पुष्प तथा गन्ध आदि से पूजा करे तथा अनेक प्रकार के भक्ष्य एवं नैवेद्य आदि अर्पित करें। फिर पृथ्वी के भीतर गड्ढा खोद कर उसमें यन्त्र को स्थापित कर, ऊपर से मिट्टी भर देनी चाहिए।

इस प्रयोग द्वारा किसी भी व्यक्ति की यात्रा को रोका जा सकता है। यन्त्र में जिस व्यक्ति का भी नाम लिखा होगा, उसकी यात्रा स्तम्भित अर्थात् स्थगित हो जायगी। तन्त्र ग्रंथों के अनुसार यह यन्त्र यात्रा-स्तम्भ कार्य में बड़ा उपयोगी है।

प्रियजन-यात्रा स्तम्भन यन्त्र

लकड़ी के सपाट टुकड़े को नीचे द्रव्य (केशर, हल्दी, हरताल, मैनसिल, कुंकुम अथवा गोरोचन) से पोत कर, उस पर खड़िया मिट्टी द्वारा दो रेखाओं वाले एक चतुष्कोण यन्त्र को खींचें तथा यन्त्र के चारों कोनों में एक-एक कमलदल स्थापित कर, प्रत्येक कोण में 'लं' बीज लिखकर, चक्र के भीतर 'ज' अक्षर तथा उसके नीचे साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें।



३१

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे पिछले पृष्ठ के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

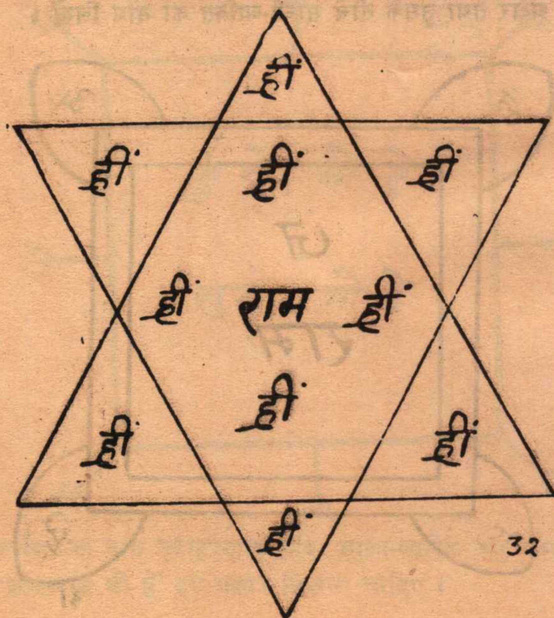
यन्त्र लेखनोपरांत उसका विधिपूर्वक पूजन करें। तत्पश्चात् घर के भीतर किसी स्थान पर यन्त्र को अधोमुख करके बाँध दें।

इस यन्त्र के प्रभाव से साध्य-व्यक्ति, जिसका नाम यन्त्र के मध्य भाग में लिखा है और जो मना करने पर भी कर रहा हो, किसी प्रकार रुक नहीं रहा हो, उसकी यात्रा भी स्तम्भित (स्थगित) हो जायगी।

अपने किसी प्रियजन की यात्रा को रोकने के लिए यह यन्त्र अत्यन्त प्रभावशाली कहा गया है।

दिव्य-स्तम्भन यन्त्र

भोजपत्र के ऊपर कुंकुम तथा गोरोचन द्वारा दो त्रिकोण इस प्रकार के खींचे कि वे एक षट् कोण का रूप ग्रहण कर लें। फिर उक्त यन्त्र के प्रत्येक



कोष्ठक में एक-एक 'ह्रीं' बीज लिखें तथा यन्त्र के मध्य भाग की पूर्वादि चारों दिशाओं में एक-एक 'ह्रीं' बीज लिख कर, उनके मध्य में साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें।

उक्त प्रकार से यन्त्र का जो स्वरूप निर्मित होगा उसे पिछले पृष्ठ के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। यन्त्र में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

इस यन्त्र को शराव-सम्पुट अर्थात् मिट्टी के दो शकोरों, जो एक-दूसरे के ऊपर औंधा कर रखे गये हों, के भीतर रख कर भक्तिपूर्वक पूजन करें। दूसरे दिन यन्त्र को शराव-सम्पुट में से निकाल कर, अपनी शिखा (चोटी) के मध्य भाग में बाँध लें तथा मौन रह कर परिणाम का चिन्तवन करें।

इस यन्त्रराज द्वारा हर प्रकार के स्तम्भन कार्य में सफलता प्राप्त की जा सकती है।

पिशुन मुख स्तम्भन यन्त्र

भोजपत्र के ऊपर, गोरोचन से एक चतुष्कोण यन्त्र लिख कर, उसके प्रत्येक कोण में एक-एक दल लगाकर, यन्त्र के बहिर्भाग के पूर्व तथा पश्चिम में 'क्रों, क्षः' इन बीजाक्षरों को लिखे तथा मध्य भाग में 'क्रों, ह्रीं'—बीजों से सम्पुटित साध्य-व्यक्ति के नाम के अक्षरों को लिखें। फिर प्रत्येक कोण में दीर्घबीज 'य, म, व, च, र, य'—इन छः वर्णों को मिश्रित करके प्रथम 'य' के मस्तक के ऊपर अनुस्वार युक्त 'र' कार लगायें तथा अन्तिम 'य' कार में 'ऊ' की मात्रा लगा दें। यन्त्र के मध्य भाग में 'क्रों, ह्रीं'—बीजाक्षरों को साध्य व्यक्ति के नामाक्षरों के साथ-साथ लिखें तथा नाम के अनुसार उनकी संख्या घटा बढ़ा लें।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे अगले पृष्ठ के चित्र में प्रदर्शित किया गया है।

यन्त्र लेखनोपरान्त लाल चन्दन, लाल पुष्प, लाल वस्त्र एवं अपने शरीर के रक्त द्वारा यन्त्र का पूजन करें तथा यथाशक्ति दक्षिणा देकर एक ब्राह्मण को भोजन करायें। इस कार्य में धन की कृपणता नहीं करनी चाहिए।

अन्त में, पृथ्वी में एक गड्ढा खोद कर उसमें यन्त्र को गाढ़कर, मिट्टी से दबा दें।

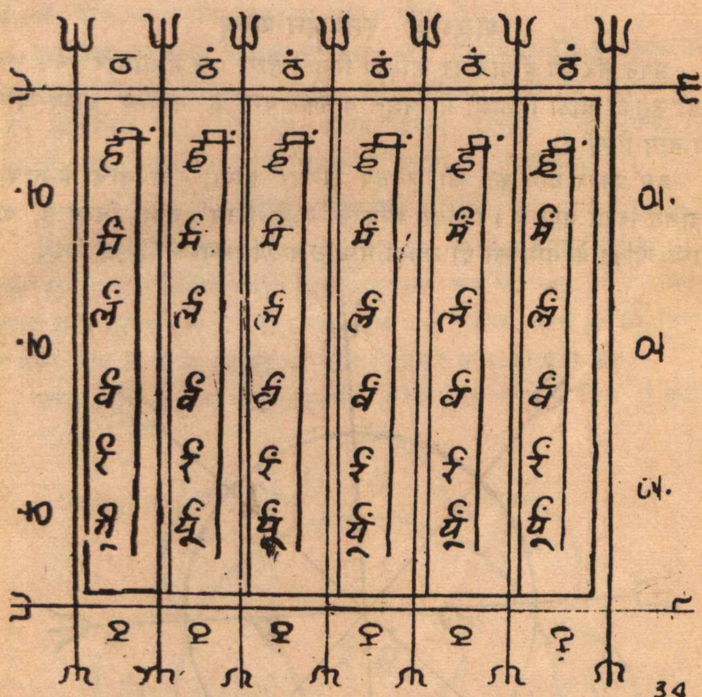
इस यन्त्र के प्रभाव से चुगलखोर (पिशुन) व्यक्ति की गति, उसकी वाणी तथा बुद्धि का स्तम्भन होता है।

किसी चुगलखोर आदमी का मुँह बन्द करना हो अर्थात् वह चुगली न खा सके, ऐसा उपाय करना हो तो इस यन्त्र का प्रयोग इच्छित परिणाम देने वाला सिद्ध होता है। ऐसा तन्त्र शास्त्रों का कथन है।

जिह्वा बेधन यन्त्र

भोजपत्र के ऊपर गोरोचन से दो रेखा वाले चतुष्कोण यन्त्र को लिखकर, प्रत्येक कोण की रेखा को त्रिशूल युक्त करके अन्त में 'ठ' कार बीजों को लिखें। फिर प्रत्येक कोण के भीतर 'ह, म, ल, व, र, य'—इन सब वर्णों को क्रमशः ऊपर से नीचे की ओर स्थापित कर, योजना सहित अन्त में 'य' कार में अकार स्वर को मिला कर बिन्दु तथा रेफ को ऊपरी भाग के अक्षरों में मिलाकर सबसे ऊपर वाले अक्षर में रेफ, अनुस्वार तथा ईकार की मात्रा को मिलाकर, उसे सब वर्णों के नीचे तक लम्बी खींच दें। इस

प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप निर्धारित होगा, उसे नीचे के चित्र में प्रदर्शित किया गया है।



यन्त्र को लिखने के पश्चात् उसका विधिपूर्वक पूजन करें तथा निश्चिन्त भाव से वक्ष्यमाण मन्त्र का जप करें। मन्त्र इस प्रकार है—

"ॐ ह्र ल्व्यूं ललललल 'अमुकस्य' मुखं स्तम्भ स्तम्भ ठः ठः ठः ठः ठः ठः स्वाहा।"

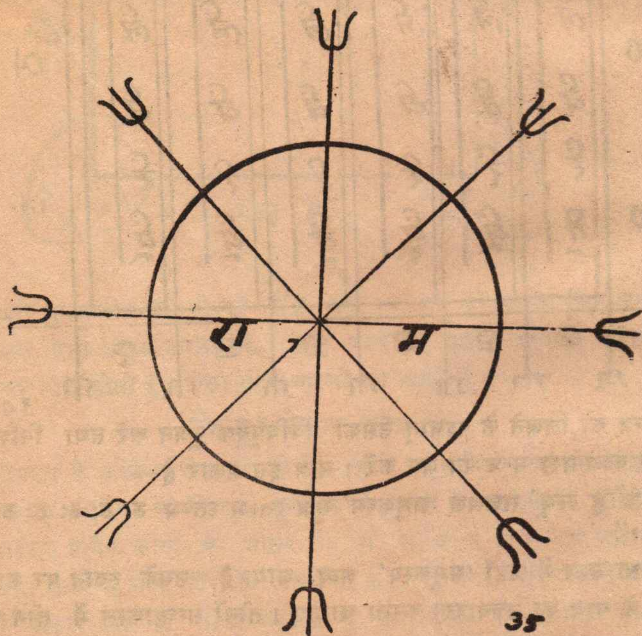
उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकस्य' शब्द आया है, उसके स्थान पर साध्य-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए। तीनों सन्ध्याकाल में तीन दिन तक इस मन्त्र का १०० बार अथवा १०८ बार जप करना चाहिए तथा स्वर्ण जैसी आभा वाले पीले रंग के फूलों से यन्त्र का पजन करना चाहिए।

इस यन्त्र के प्रभाव से शत्रु की बुद्धि एवं गति का स्तम्भन हो जाता है, उसकी जीभ रुक जाती है।

शत्रुमुख स्तम्भन यन्त्र

अपने घर की दीवार पर खड़िया मिट्टी द्वारा एक गोलाकार चक्र खींचें तथा उसकी आठों दिशाओं में त्रिशूल बनाकर यन्त्र के मध्य में साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे नीचे के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को दो टुकड़ों में बाँट कर लिखना चाहिए।



लेखनोपरान्त इस यन्त्र का श्वेत पुष्प, फल, सुगन्ध एवं श्वेतवस्त्र आदि

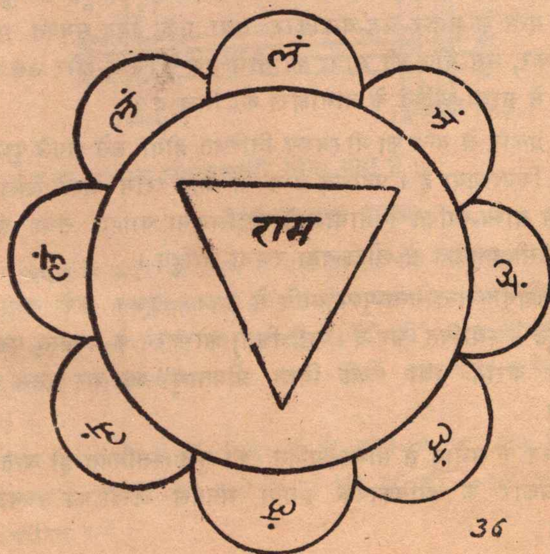
से पूजन कर, एक ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए तथा 'ॐ शिव प्रियताम्' इस मन्त्र का जप करते रहना चाहिए। जप जितनी अधिक सख्या में किया जा सके, यन्त्र का प्रभाव उतना ही अधिक होता है।

इस यन्त्र के प्रभाव से शत्रु का मुख बन्द हो जाता है। मुकद्दमे आदि के अवसर पर अपने प्रतिपक्षी साक्षी तथा वकील आदि का मुख-स्तम्भित करने के लिए इस मन्त्र का प्रयोग करना इच्छित फलदायक सिद्ध होता है तथा मुकदमे आदि में विजय एवं प्रताप का लाभ होता है।

वाणी स्तम्भन यन्त्र

शिला सम्पुट के मध्य पीले द्रव्य द्वारा एक त्रिकोण यन्त्र लिख कर, उसे गोलाकार चक्र से वेष्टित करें। तत्पश्चात् उस चक्र के ऊपर आठ कमलदल बनायें तथा प्रत्येक दल के भीतर एक-एक 'सं' बीज लिखें। फिर त्रिकोण के मध्य भाग में साध्य व्यक्ति का नाम लिखकर यन्त्र को पूरा करें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा उसे नीचे के चित्र में प्रदर्शित



36

किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र को लिखने के बाद पीले रंग के सुगन्धित पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से यन्त्र का पूजन करें तथा खीर-गुड़ मिश्रित पदार्थों से एक ब्राह्मण को भोजन करायें। फिर पृथ्वी के भीतर एक गढ्ढा खोदकर उसमें यन्त्र को दबा दें तथा ऊपर से मिट्टी भर दें।

इस यन्त्र के प्रयोग से मुकद्दमा, शास्त्र-चर्चा, विवाद, व्यवहार आदि में प्रतिवादी व्यक्ति का मुख स्तम्भित हो जाता है तथा साधक को उस पर विजय प्राप्त होती है। यह यन्त्र 'प्रतिवादि-मुख स्तम्भन यन्त्र' के नाम से भी प्रसिद्ध हैं। तन्त्र ग्रन्थों में इसे अशुफलदायक तथा अत्यन्त गुप्त कहा है।

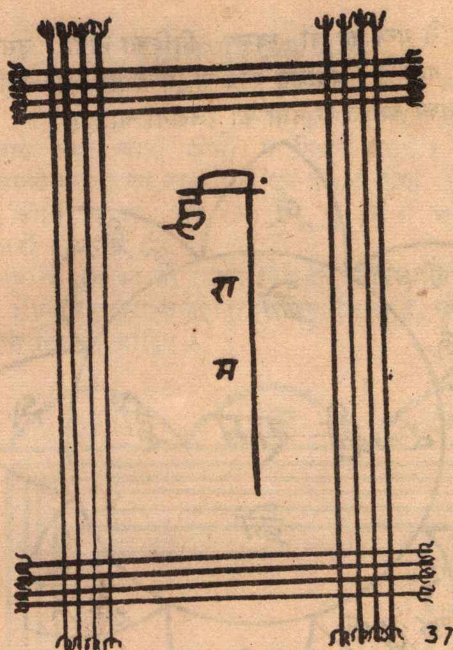
वैरी मुख स्तम्भन यन्त्र

शिला सम्पुट के भीतर चार रेखाओं वाले चतुष्कोण यन्त्र को खड़िया मिट्टी से लिखकर, प्रत्येक कोण की रेखा को एक-एक त्रिशूल से युक्त करें। तत्पश्वात् यन्त्र के भीतर अर्द्ध चन्द्राकार तथा एक बिंदु संयुक्त एक 'ह्रीं' बीज लिखकर, उस बीज की मात्रा को नीचे तक खींच दें और उस मात्रा के मध्य भाग में साध्य-व्यक्ति के नामाक्षरों को लिख दें।

उक्त प्रकार से यन्त्र का जो स्वरूप निश्चित होगा, उसे अगले पृष्ठ के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ उसी ढंग से साध्य-व्यक्ति के नामाक्षरों को लिखना चाहिए तथा ईकार की मात्रा को उसी अनुपात से छोटा-बड़ा रखना चाहिए।

यन्त्र लेखनोपरान्त गन्ध-पुष्प आदि से उसका पूजन करें तथा उसे एक शराव-सम्पुट में स्थापित कर दें। इस क्रिया को करने के पश्चात् एक ब्राह्मण को भोजन करायें तथा "**श्री विद्या प्रीयताम्**" कह कर उससे आशीर्वाद प्राप्त करें।

इस यन्त्र के प्रभाव से साध्य-व्यक्ति का मुख स्तम्भित हो जाता है और वह किसी प्रकार के हानिकारक अथवा अनर्गल शब्दों का उच्चारण नहीं कर पाता।



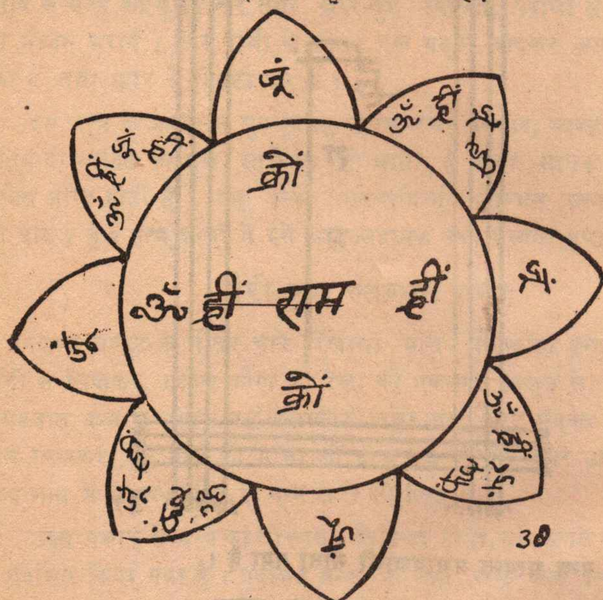
यह यन्त्र अत्यन्त प्रभावशाली माना गया है ।

कमलाख्य यन्त्र

भोजपत्र के ऊपर गोरोचन से एक गोल चक्र खींचकर उसके बहिर्भाग को अष्टदलों से सुशोभित करें । फिर गोल चक्र के भीतर तीन रेखाओं की कल्पना करके, ऊपर नीचे की रेखाओं में 'ऊँ ह्रीं'—इन दो बीजों को आदि में लगाकर साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें तथा अन्त में केवल 'ह्रीं' बीज लगायें ।

फिर पूर्व आदि चारों दिशाओं के दलों में 'जूं' बीज लिखकर, ईशान आदि चारों कोणों के दलों में 'ऊँ ह्रीं, जूँ ह्रीं'—इन चार-चार बीजों को स्थापित करें ।

उक्त प्रकार से यन्त्र का जो स्वरूप निश्चित होगा, उसे नीचे के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र के मध्यभाग में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।



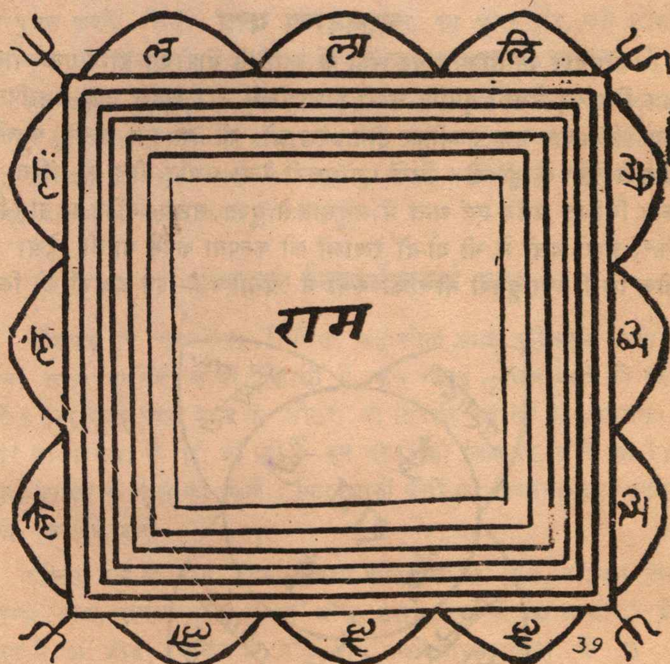
यन्त्र लेखनोपरान्त गन्ध, पुष्प, नैवेद्य, ताम्बूल आदि से तीन दिन तक पूजन करें तथा **'हे लोकेश ! प्रियताम्'** इस वाक्य का उच्चारण करते हुए एक स्त्री तथा एक पुरुष को भोजन करायें। तत्पश्चात् यन्त्र को कच्चे धागे में लपेट कर, त्रिलोह के ताबीज में बन्द करके कण्ठ में, अथवा गले के हार में मिलाकर धारण करें।

इस यन्त्र का साधन केवल स्त्रियों को ही करना चाहिए इसके प्रभाव से उन्हें उत्तम सौभाग्य की प्राप्ति होगी। इस यन्त्र को धारण करने वाली वन्ध्या-स्त्री गर्भ धारण करती है तथा मृतवत्सा-स्त्री दीर्घजीवी सन्तान को जन्म देती है। यह स्त्रियों के सौभाग्य की हर प्रकार से वृद्धि करता है तथा उनकी समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करता है।

महामृत्युञ्जय यन्त्र

भोजपत्र के दो टुकड़ों के ऊपर, लोहे की कलम द्वारा अलग-अलग सात रेखाओं वाले चतुष्कोण खींचकर, उनके ऊपर के चारों भागों में तीन-तीन कमलदल बनायें तथा चारों कोनों में त्रिशूल बनायें। तत्पश्चात् यन्त्र के मध्यभाग में साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें एवं ईशान कोण से आरम्भ करके कमल दलों में क्रमश: ल, ला, लि, ली, लु, लू, ले, लै, लो, लौ, लं, लः— इन बारह अक्षरों को लिखें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप निश्चित होगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, उस स्थान पर साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।



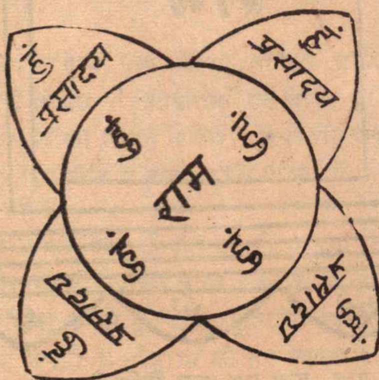
उपर्युक्त विधि से दो यन्त्रों को लिख कर, उत्तर दिशा की ओर मूँह करके बैठें तथा दोनों यन्त्रों को मिलाकर पृथ्वी पर रुकी हुई एक भारी शिला के नीचे दबा दें।

इस क्रिया के पूर्ण करने के बाद जब साधक साध्य-व्यक्ति के सम्मुख पहुँचेगा तो उस व्यक्ति का क्रोध दूर हो जायगा और वह साधक पर प्रसन्न होकर उसके अपराधों को क्षमा कर देगा।

यह 'महामृत्युञ्जय' नामक यन्त्र प्राणों की रक्षा करने वाला तथा एक बार काल के कराल क्रोध को भी शान्त करने वाला है। जब कोई राजा, मन्त्री, सरकारी अधिकारी, स्वामी (मालिक) अथवा किसी अन्य व्यक्ति का क्रोध अपने ऊपर हो तथा उसके त्राण पाना आवश्यक हो, तब इस यन्त्र का प्रयोग करना चाहिए।

जामदग्न्य यन्त्र

सोमवार को ताड़पत्र पर लोहे के काँटे से गोरोचन द्वारा एक गोलाकार चक्र लिखकर उसकी पूर्वादि चारों दिशाओं में चार कमल दल स्थापित करें तथा गोलाकार चक्र के भीतर तीन रेखाओं की कल्पना करके, पहली तथा तीसरी रेखा में 'हुं' बीज लिखें एवं दूसरी रेखा अर्थात् बीच की पंक्ति में 'हुं' कार मिश्रित आदि एवं अन्त में अनुसार से युक्त, साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें। फिर, चारों दलों में भी दो-दो रेखाओं की कल्पना करके पहली रेखा में 'हुं' बीज लिखें तथा दूसरी नीचे की रेखा में 'प्रसादय'—इन अक्षरों को लिखें।



उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे पिछले पृष्ठ के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित मन्त्र के मध्य में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

लेखनोपरान्त यन्त्र को कुम्हार के घर से लाई हुई मिट्टी में रखकर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए गन्धादिक से यन्त्र का पूजन करें। मन्त्र इस प्रकार है—

"अक्रोधः सत्यवादी च जमदग्नि ईढव्रतः।
रामस्य जनकः साक्षात् सत्त्वमूर्ते नमोस्तु ते॥"

उक्त विधि से सात दिन तक क्रोध को नष्ट करने वाले इस यन्त्र का पूजन करके, किसी वेदज्ञ श्रेष्ठ ब्राह्मण का पूजन कर, उसे भोजनादि द्वार तृप्त एवं सन्तुष्ट करें। भोजन में दही-चावल का होना आवश्यक है।

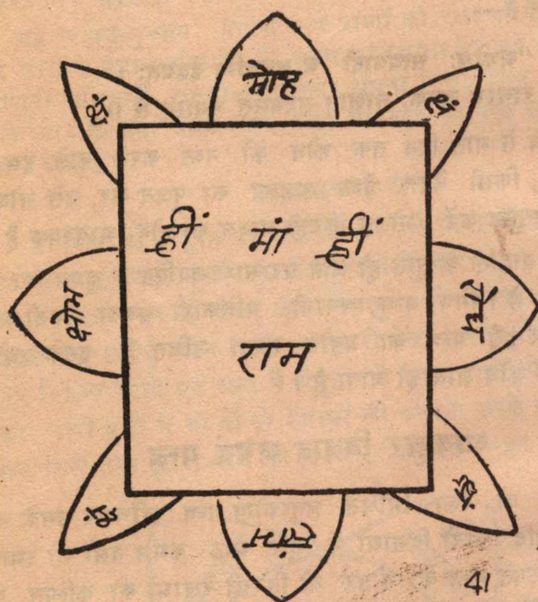
इस प्रकार ब्राह्मण के तृप्त हो जाने पर साध्य-व्यक्ति के हृदय का क्रोध भी दूर हो जाता है। मित्र, बन्धु, स्वामी, अधिकारी अथवा किसी शत्रु के क्रुद्ध हो जाने पर इस यन्त्र का प्रयोग करना उचित है। इसके प्रयोग से साध्य-व्यक्ति का क्रोध शान्त हो जाता है।

व्यवहार विवाद जयदं यन्त्र

भोजपत्र पर दो रेखा मिश्रित चतुष्कोण यन्त्र खींचकर उसके चारों कोनों तथा पूर्वादि चारों दिशाओं में कुल आठ कमल दलों की स्थापना करें। तत्पश्चात् उक्त यन्त्र के भीतर दो तिरछी रेखाओं को कल्पित कर, ऊपर वाली रेखा में 'ह्रीं मां ह्रीं'—इन बीजों को लिखकर, नीचे की रेखा में साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखें। फिर आठों दलों को निम्नानुसार वक्ष्यमाण बीजों से पूर्ण करें—

दक्षिण दल में 'रोध' बीज, नैऋत्य कोण में 'क्षं' बीज, पश्चिम दल में 'स्तम्भ, बीज, वायव्य कोण में 'क्षं' बीज, उत्तर दल में 'क्षोभ बीज' ईशान कोण में 'क्षं' बीज, पूर्व दल में 'मोह' बीज तथा आग्नेय कोण में 'क्षं' बीज को लिखें। इस प्रकार आठ दलों में द्वादश बीजों को रक्खें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप निश्चित होगा, उसे नीचे दिये गये
ात्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में यन्त्र के मध्यभाग में जहाँ
ाम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।



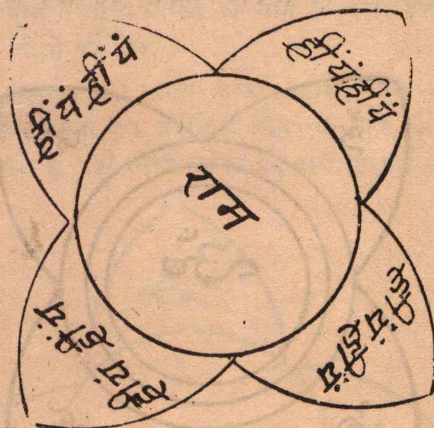
लेखनोपरान्त यन्त्र को शराव-सम्पुट में रखकर तथा अष्टगन्ध, धूप, ीप, नैवेद्य आदि से पूजकर, आठों दिशाओं में बलिदानादि की क्रियाओं को म्पूर्ण करें तथा इन्द्रादि लोकपालों की पूजाकर, कुमारियों को भोजन रायें। जब तक कार्य सिद्ध न हो, तब तक विधिपूर्वक यन्त्र का पूजन करते हें।

इस यन्त्र के साधन से व्यवहार तथा विवाद में विजय राज्य सभा में म्मान, एवं लोक में उन्नति तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

विवाद विजय यन्त्र

भोजपत्र पर कुंकुम से एक गोलाकार चक्र खींचकर, उसकी चार दिशाओं में चार कमलदल बनायें। फिर, यन्त्र के बीच में साध्य-व्यक्ति का नाम लिखकर, चारों दलों में 'ह्रीं' और 'यं' इन दो बीजों को क्रमश: दो-दो की संख्या में लिखें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप निश्चित होगा, उसे नीचे दिये गये चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।



लेखनोपरान्त यन्त्र को धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प आदि से पूजा कर तथा त्रिलोह के ताबीज में भर कर दूध के भीतर स्थापित करदें।

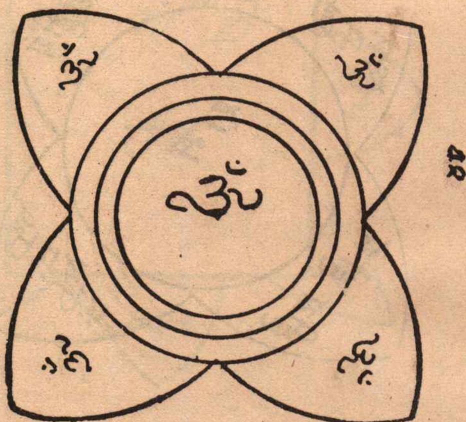
उक्त क्रिया को सम्पूर्ण करने के बाद यदि किसी मुकद्दमे अथवा शास्त्रार्थ आदि में भाग लेने के लिए पहुंचा जाय, तो उसमें साधक को विजय प्राप्त होती है।

यह यन्त्र झगड़े-झंझट-मुकद्दमे तथा शास्त्रार्थ आदि में विजय दिलाने वाला है। तन्त्र शास्त्रों के अनुसार यह यन्त्र देवताओं द्वारा पूजित एवं सद्य प्रभावकारी है।

महा सौभाग्य जनन विजय यन्त्र

जलमिश्रित गोरोचन द्वारा भोजपत्र के ऊपर तीन रेखाओं से युक्त एक अर्द्धचन्द्राकार लिखकर, 'स कार, ह कार, क कार, ल कार, ड कार तथा ई कार—इन ६ अक्षरों को ई कार में गर्भित कर, उक्त अर्द्धचन्द्राकार के मध्य में स्थापित करें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे के चित्र में प्रदर्शित किया गया है।



लेखनोपरान्त यन्त्र का गन्ध, पुष्प आदि से विधिवत् पूजन कर, स्वर्ण के ताबीज में भर कर, पुरुष अपनी दायीं भुजा एवं स्त्री अपनी बायीं भुजा में धारण करें।

यह विजय यन्त्र हर प्रकार के दुर्भाग्य का नाशक, सौभाग्य दायक, सब को वश में करने वाला तथा सम्पूर्ण मनोभिलाषाओं की पूर्ति करने वाला है।

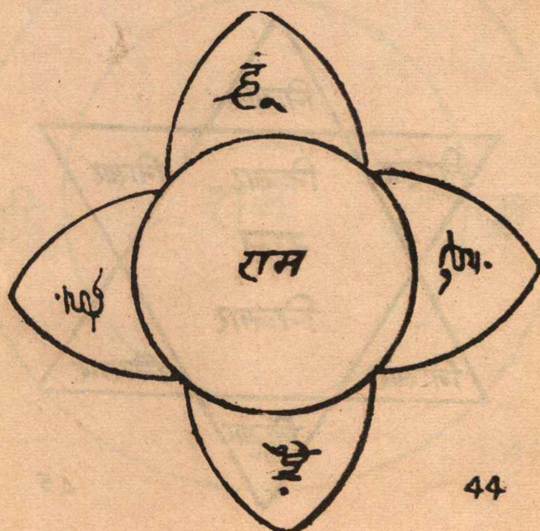
जो पुरुष इस यन्त्र को हर समय धारण किये रहता है, वह स्त्रियों को अत्यन्त प्रिय होता है तथा जो स्त्रियां इस यन्त्र को हर समय धारण किये रहती हैं वे पुरुष को अत्यन्त प्रिय होती हैं।

सौभाग्यकारक, महासौभाग्य जनन इस विजय नामक यन्त्र को भी यन्त्रों का सिर और समझना चाहिए—ऐसा तन्त्रज्ञों का कथन है।

मित्र-दर्शन यन्त्र

भोजपत्र के ऊपर लाल चन्दन तथा अपने रक्त के मिश्रण से एक गोलाकार चक्र खींचकर उसकी चारों दिशाओं में चार कमलदलों का निर्माण करें। फिर, चक्र के मध्य में साध्य-व्यक्ति का नाम सानुस्वार लिखकर, चारों कमल दलों में 'ह्रूँ' बीज़ों को लिखें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे नीचे दिये गये चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में यन्त्र के मध्यभाग में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।



लेखनोपरान्त गन्ध, पुष्प आदि पदार्थों से यन्त्र का पूजन कर, उसे घृत में स्थापित कर दें।

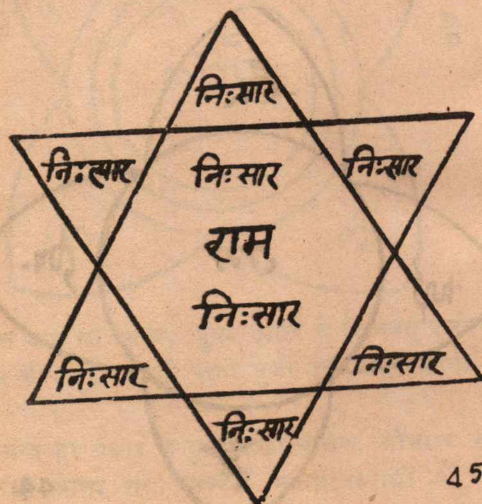
उक्त क्रिया को करने से साध्य-व्यक्ति का दो-तीन दिन के भीतर ही आकर्षण होता है और वह साधक के पास आ पहुंचता है।

इस यन्त्र का प्रयोग अपने किसी मित्र से भेंट करने के लिए ही करना चाहिए। यह यन्त्र परम गुप्त तथा मनोभिलाषाओं की पूर्ति करने वाला कहा गया है।

भव मोचन यन्त्र

भोजपत्र के ऊपर गोरोचन तथा लाल चन्दन के मिश्रण से एक षट्कोण यन्त्र खींचें तथा उसके प्रत्येक कोण में 'निःसार' पद को लिखें। फिर इसी शब्द से पुटित साध्य-व्यक्ति के नाम को यन्त्र के मध्य भाग में लिखें।

उपर्युक्त प्रकार से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, उस जगह साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

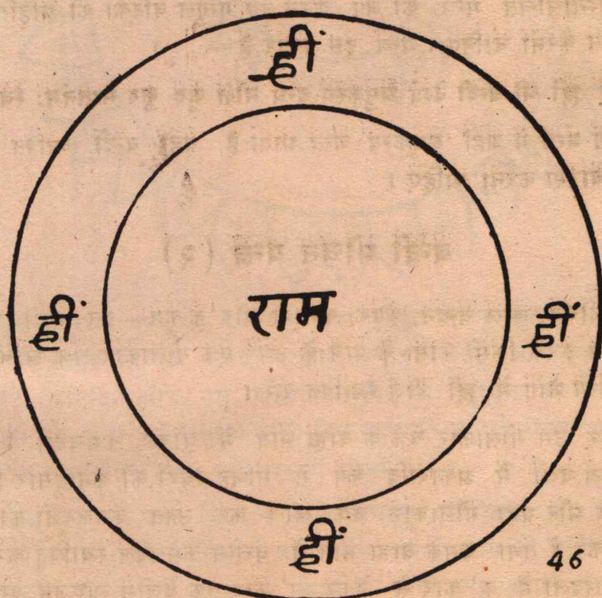


लेखनोपरान्त यन्त्र का विधिपूर्वक पूजन करके, उसे त्रिलोह के ताबीज में भर कर, अपने मस्तक के ऊपर धारण करने वाला साधक संसार से विरक्त होकर स्त्री-पुत्रादि के मोह से छूट जाता है तथा ज्ञान-मार्ग का अनुसरण करता हुआ वन-पर्वत आदि किसी एकान्त, शान्त तथा श्रेष्ठ स्थान में निवास करता हुआ, माया-मोह के बन्धनों से छूट कर, अन्त में, मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

जो ईश्वर-भक्त लोग सांसारिक माया-मोह से छुटकारा पाकर, अपने परलोक को सुधारना चाहते हों तथा इस जन्म के पापों को यहीं पर नष्ट कर जाने के इच्छुक हों, उन्हें इस यन्त्र का साधन अवश्य करना चाहिए।

बन्दी मोचन यन्त्र

मालपुए के ऊपर घी द्वारा एक गोलाकार चक्र लिखकर, उसके बहिर्भाग में एक और चक्र लिखें। फिर पहले चक्र के भीतर अर्थात् यन्त्र के मध्य में



साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें तथा दूसरे चक्र के भीतर पूर्वादि चारों दिशाओं में 'ह्रीं' बीज लिखें।

उक्त प्रकार से यन्त्र का जो स्वरूप निर्मित होगा, उसे पिछले पृष्ठ के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जिस जगह 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ बन्दी-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

लेखनोपरान्त यन्त्र की गन्ध पुष्पादि से पूजा कर पुए को साध्य-व्यक्ति अर्थात् बन्दी-व्यक्ति को खिला देना चाहिए।

इस यन्त्र के प्रभाव से साध्य-व्यक्ति तीन अथवा सात दिन के भीतर ही बन्धन-मुक्त हो जाता है।

बन्दी-व्यक्ति को मालपुआ खिलाने के बाद २७ दिन तक नित्य १०८ बार निम्नलिखित मन्त्र का जप करते हुए गुग्गुल वटिका की आहुतियाँ देते हुए हवन करना चाहिए। मन्त्र इस प्रकार है—

'ऐं' ह्रीं श्रीं बन्दी देव्यै अमुकस्य बन्ध मोक्षं कुरु कुरु मातर्नमः स्वाहा।"

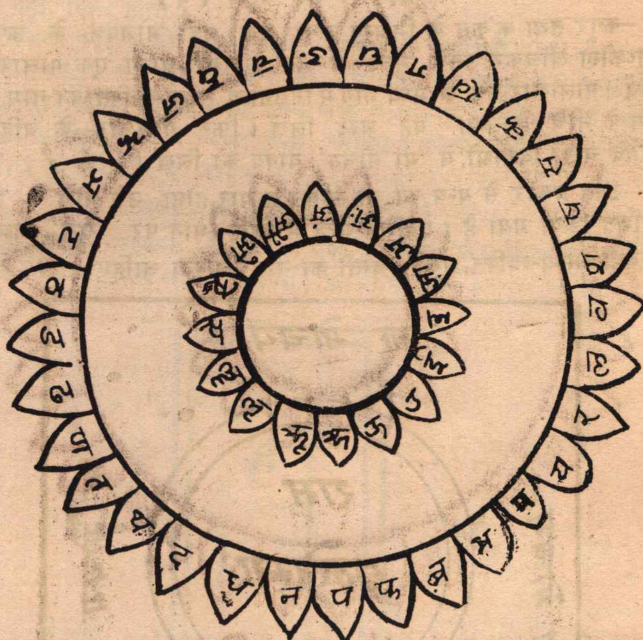
इस मन्त्र में जहाँ 'अमुकस्य' शब्द आया है, वहाँ बन्दी व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

बन्दी मोचन यन्त्र (२)

गोरोचन, लाल चन्दन, कपूर, कस्तूरी और कुंकुम—इन सभी वस्तुओं को एकत्र करके किसी कांसी के पात्र के ऊपर एक गोलाकार चक्र खींचे तथा उसके मध्य भाग में 'ह्रीं' बीज स्थापित करें।

फिर, उस गोलाकार चक्र के बाह्य भाग में षोडश कमलदल लिखकर उन कमल दलों में अकारादि क्रम से सोलह स्वरों को क्रमानुसार लिखें। फिर एक और बड़ा गोलाकार चक्र खींच कर उक्त कमलदलों को उससे वेष्टित कर दें तथा उसके बाह्य भाग में बत्तीस कमलदल स्थापित करें और उन कमलदलों में 'क' कार से लेकर 'स' कार तक बत्तीस व्यञ्जन वर्णों को क्रमानुसार लिखें।

उक्त प्रकार से यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे नीचे के चित्र में प्रदर्शित किया गया है —



लेखनोपरान्त यन्त्र का धूप, दीप तथा नैवेद्य से पूजनकर, दीपदान की क्रिया करें तत्पश्चात् 'ॐ नमश्चण्डिकायै स्वाहा'—इस मन्त्र का १०८ बार जप करें (प्रतिदिन खीर, मधु, खाद्य तथा विशेषत: गुग्गुल की बलि देकर, यन्त्र को ढक दिया करें। नित्य दूसरे दिन यन्त्र को खोलते समय प्रणाम करें तथा गंध, धूप आदि देकर उसी पात्र में भोजन करें।

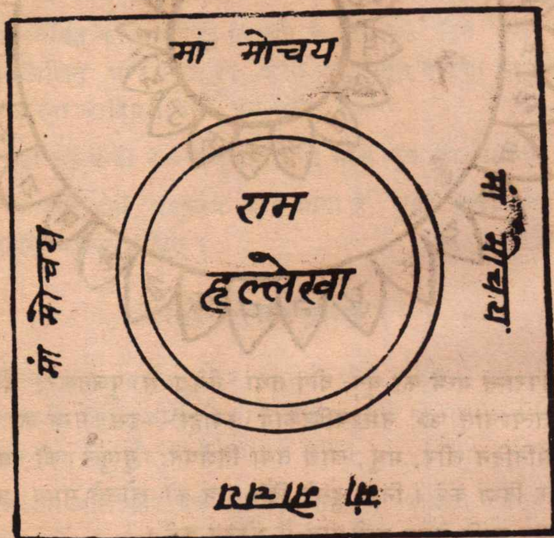
सात् दिन तक उक्त क्रिया करने के पश्चात् इस यन्त्र को आधा भाग बन्दी व्यक्ति को पीने के लिए दें तथा शेष आधे भाग की गुटिका बनायें। उस गुटिका को धारण करने से आजीवन-बन्दी भी बन्धन मे मुक्त हो जाता है।

इस यन्त्र में किसी का नाम लिखने की आवश्यकता नहीं है। इसके प्रताप तथा प्रभाव से सर्वाङ्ग बन्दी भी छुटकार पा जाता है।

बन्दी मोचन यन्त्र (३)

कपूर तथा कुंकुम के मिश्रण द्वारा एक बड़े भोजपत्र के ऊपर तथा चतुष्कोण खींचकर उसके मध्य में दो रेखाओं वाला एक गोलाकार चक्र खींचें। गोलाकार चक्र के मध्य भाग में विसर्गान्त साध्य-व्यक्ति का नाम लिखकर नाम के नीचे 'हृल्लेखा' यह शब्द लिखें। फिर गोलकार के बहिर्भाग में, पूर्वादि चारों दिशाओं में 'मां मोचय' वाक्य को लिखें।

उक्त प्रकार से यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे नीचे के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जिस स्थान पर 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति ~~अर्थात् बन्दी का नाम~~ लिखना चाहिए।



४२

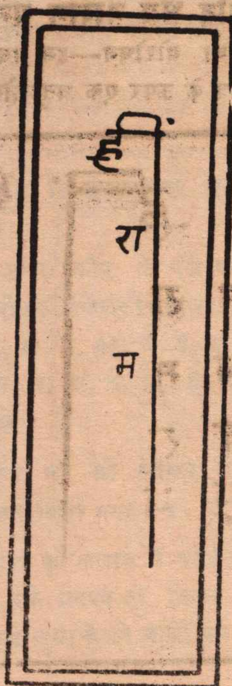
लेखनोपरान्त यन्त्र का गन्ध, पुष्प आदि से पूजन कर, उसे त्रिलोह के तावीज में भर कर बन्दी व्यक्ति उसे अपनी दायीं भुजा अथवा कण्ठ में धारण कर ले। इसके प्रभाव से वह शीघ्र ही बन्धन-मुक्त हो जायगा।

जो व्यक्ति इस यन्त्र को हर समय धारण किये रहते हैं, उन्हें कभी भी बन्धन में नहीं पड़ना होता।

यदि किसी व्यक्ति को किसी अन्य व्यक्ति ने जबर्दस्ती रोक रक्खा हो और उसके निकलने का कोई उपाय न हो, उस समय इस यन्त्र को उपर्युक्त विधि से तय्यार करके साधक स्वयं अपने कण्ठ में धारण कर ले परन्तु यन्त्र में बन्दी व्यक्ति का ही नाम लिखा होना चाहिए। इसके प्रभाव से बन्दी-व्यक्ति शीघ्र ही छूट कर आ जायेगा।

बन्दी मोचन यन्त्र (४)

कुंकुम द्वारा भोजपत्र के ऊपर एकं चतुष्कोण यन्त्र लिख कर, उसमें 'ह्रीं' बीज के मध्य साध्य-व्यक्ति (बन्दी) का नाम लिखें।



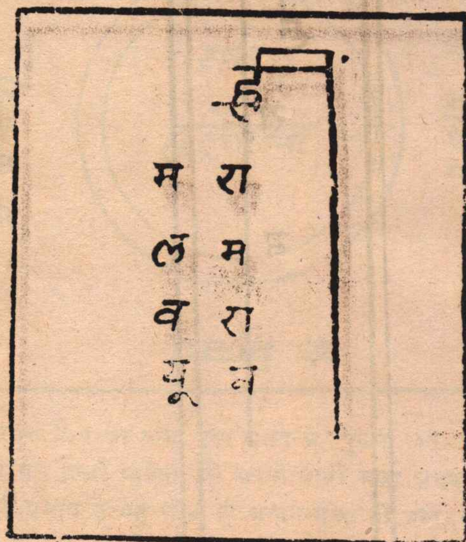
उक्त प्रकार से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे पिछले पृष्ठ के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ बन्दी व्यक्ति के नाम के अक्षरों को अलग-अलग करके क्रमशः ऊपर से नीचे की ओर लिखना चाहिए।

लेखनोपरान्त यन्त्र का विधिपूर्वक पूजन करके उसे किसी बहते हुए (नदी आदि के) पानी में डाल दें। तत्पश्चात् उसी पानी द्वारा पके हुए अन्न का भोजन बन्दी व्यक्ति को करायें।

इस क्रिया के करने के तीसरे ही दिन किसी गुप्त स्थान में बन्दी-व्यक्ति भी बन्धन-मुक्त होकर घर लौट आता है। तथा कालकोठरी में बन्द व्यक्ति भी बन्धन से छूट जाता है।

सर्पादि भय नाशन यन्त्र

कुंकुम, कपूर, कस्तूरी तथा गोरोचन—इन सब वस्तुओं के मिश्रण से, चमेली की कलम द्वारा भोजपत्र के ऊपर एक चतुष्कोण यन्त्र लिखकर, उसके



भीतर 'ह्रीं' बीज लिखें तथा उस बीज की मात्रा के भीतर साध्य-व्यक्ति के नामाक्षरों को क्रमश: ऊपर से नीचे की ओर अलग-अलग लिखें। साथ ही ह्रीं बीज के पाद में म, कार, ल, कार, व, कार, य, कार, एवं ऊ, कार को भी मिला दें।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे पिछले पृष्ठ पर दिये गये चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में 'राम' शब्द के स्थान पर साध्य-व्यक्ति के नामाक्षरों को लिखना चाहिए।

लिखने के बाद यन्त्र का विधिपूर्वक पूजन करके, उसे त्रिलोह के ताबीज में भरकर, अपनी दायीं भुजा अथवा कण्ठ में धारण कर लें।

उक्त यन्त्र को धारण करने वाला व्यक्ति सांप, बाघ, चीता, चोर आदि के भय से मुक्ति पा लेता है अर्थात् ये सब उसे नहीं सताते और इनके उपद्रव शान्त हो जाते हैं।

द्यूत विजयदाता प्रसन्न यन्त्र

एरण्ड पत्र के ऊपर कौए के पंख की कलम से, काली स्याही द्वारा, रात्रि के समय, एक चौसठ कोष्ठकों वाला यन्त्र लिखें तथा उसके कोष्ठकों में विलोम क्रम से 'मे, 'खं, र, क्तं, द, ये, रु, पा, क, जि, ज, तं, द, नी, च, नः, छ, दा, वीं, य, मे, त्रं, ते, षं, हे, ष्टि, वा, मो, क्षि, ण, पा, तं— इन ३२ बीजों को लिखें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे अगले पृष्ठ पर दिये गये चित्र में प्रदर्शित किया गया है।

जो व्यक्ति इस यन्त्र को कलावे में लपेट कर अपनी दायीं भुजा में धारण करके जुआ खेलता है, उसे अवश्य ही विजय प्राप्त होती है अर्थात् वह जुए में जीतता है। यह यन्त्र जुआ खेलने वालों को प्रसन्नतादायक है।

मे	रवै	र	क्तं	द	ये	रु	पा
क	जि	ज	तं	द	नी	च	नः
छ	दा	वीं	य	मं	त्रं	ते	षं
हे	ष्टि	वा	मो	क्षि	ण	पा	त्रं
त्रं	पा	ण	क्षि	मो	वा	ष्टि	हे
ष	ते	त्रं	मं	य	वीं	दा	छ
नः	च	नी	द	त	ज	जि	क
पा	ह	ये	द	क्तं	र	रवै	मे

51

महारक्षाकर शान्ति पौष्टिक यन्त्र

गौरोचन, कुंकुम, कपूर और कस्तूरी—इन सबको इकट्ठा कर, चमेली की कलम द्वारा कांस्य-पात्र के ऊपर, शुभ दिन तथा शुभ वार में ८ आड़ी तथा ८ तिरछी रेखायें खींचकर ४६ कोष्ठों वाले एक यन्त्र का निर्माण करें। फिर, प्रत्येक रेखा के मुख को त्रिशूल से युक्त कर, पूर्व तथा पश्चिम भाग में सात-सात 'क्रौं' बीज लिखकर, ईशान कोण से आरम्भ वाले प्रत्येक रेखा के कोष्ठक में सानुस्वार अकारादि स्वर युक्त व्यंजन वर्णों को क्रमानुसार भर दें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप निर्धारित होगा, उसे अगले पृष्ठ पर दिये गये चित्र में प्रदर्शित किया गया है। इस यन्त्र में किसी व्यक्ति के नाम को लिखने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

लेखनोपरान्त श्वेत कमल, जुही, मालती, चमेली, बकुल का फूल तथा चमेली के पुष्प (कोई भी पुष्प लाल रंग का अथवा गन्ध-हीन नहीं होना

क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं
अं	आं	इं	ईं	उं	ऊं	ऋं
जं	झं	ञं	टं	ठं	डं	ॠं
ढं	भं	मं	यं	रं	ढं	ऌं
चं	बं	सं	हं.	लं	णं	ॡं
ङं	फं	षं	शं	वं	तं	एं
घं	पं	नं	धं	दं	थं	ऐं
गं	खं	कं	अः	अं	औं	ओं
क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं

51

चाहिए), ऋतुफल, धूप, दीप, गन्ध, ताम्बूल, नैवेद्य तथा श्वेत वस्त्र आदि से यन्त्र का पूजन करें तथा किसी विद्वान् ब्राह्मण द्वारा 'दुर्गा सप्तशती' का जप करवा कर, ब्राह्मणों को तीन दिन तक यथेष्ट पायम (खीर) एवं घृत का भोजन करायें। स्वयं पृथ्वी पर शयन करें।

फिर यन्त्र लिखित कांस्य पात्र में भोजन करके, गन्ध-रोचन को निकाल कर, उससे गुटिका तय्यार करें और उस गुटिका को त्रिलोह के ताबीज में बन्द करके अपने कण्ठ अथवा भुजा में धारण करें। शेष भाग को पानी मिलाकर पी जायें।

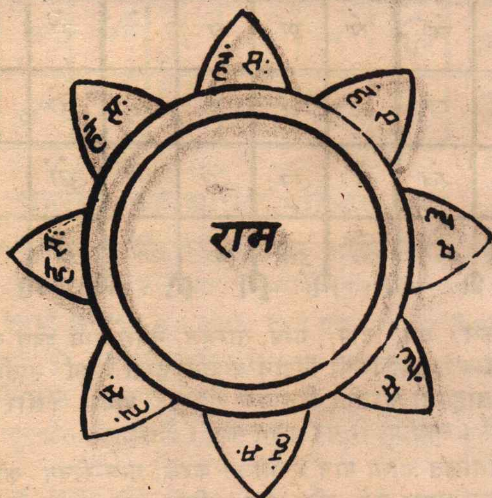
इस यन्त्र के साधन के प्रभाव से साधक के शत्रु के मन में क्षोभ उत्पन्न होता है । यह यन्त्र दारिद्रय, क्लेश, उपद्रव, दुर्भाग्य तथा किसी अन्य द्वारा किये गये अभिचार आदि दोषों का पूर्णरूपेण शमन करता है ।

तन्त्र शास्त्र में यह 'महारक्षाकर शान्ति पौष्टिक यन्त्र' देवताओं के लिए भी दुर्लभ कहा गया है । अतः इसे पूर्ण गुप्त रखना चाहिए ।

सर्प स्तम्भन यन्त्र

भोजपत्र के ऊपर, धतूरे के रस से रेखाओं से युक्त गोलाकार चक्र का निर्माण कर, आठों दिशाओं में आठ कमलदलों की स्थापना करें । फिर प्रत्येक दल में 'हं सः' इन बीजों को लिखकर यन्त्र के मध्य भाग में सानुस्वार साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें ।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप निश्चित होगा, उसे नीचे के चित्र में प्रदर्शित किया गया है । प्रदर्शित यन्त्र के मध्यभाग में जहां 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए ।



पूर्वोक्त विधि से यन्त्र का पूजन करने के उपरान्त उसे त्रिलोह के ताबीज में भर कर अपनी दायीं भुजा अथवा कण्ठ में धारण करलें ।

इस यन्त्र के प्रभाव से सर्पादि के भय से रक्षा होती है ; इस यन्त्र को धारण करने वाले व्यक्ति का पांव यदि भूलवश, सर्प के ऊपर पड़ जाय तो भी वह उसे काटता नहीं है। यदि काट भी ले तो उसका विष नहीं चढ़ता।

जिस स्थान पर सर्पों का भय अधिक हो, वहां के प्रत्येक व्यक्ति को यह यन्त्र धारण किये रहना चाहिए। सर्पादि से रक्षा करने में यह सर्वोत्तम है। इस यन्त्र को भगवान् गरुड़ ने सर्पों का स्तम्भन करने के लिए प्रकाशित किया है—ऐसी मान्यता है।

सर्वतोभद्र यन्त्र

कस्तूरी, लाल चन्दन तथा हिम के मिश्रण द्वारा भोजपत्र के ऊपर सोलह कोष्ठकों वाला एक यन्त्र खींचें, फिर उस यन्त्र के प्रत्येक कोष्ठक में 'अ' आदि सोलह स्वर वर्णों को लिखें।

अ	आ	इ	ई
उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ
ओ	औ	अं	अः

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप निर्धारित होगा, उसे पिछले पृष्ठ के चित्र में प्रदर्शित किया गया है।

लेखनोपरान्त यन्त्र का धूप, दीप, गंध आदि से पूजन कर, ब्राह्मण को धन-वस्त्रादि से सन्तुष्ट करें तथा उन्हें इच्छित भोजन करायें। तत्पश्चात् यन्त्र को त्रिलोह के ताबीज में बन्द करके, पुरुष अपने दायें हाथ में तथा स्त्री अपने कण्ठ में धारण करें।

यह यन्त्र सौभाग्य की वृद्धि करने वाला तथा हर प्रकार के भय को नष्ट करने वाला है। जो व्यक्ति इस यन्त्र को धारण करता है, वह सब लोगों को प्रिय होता है। यह यन्त्र समस्त अनिष्टों को शान्त करने वाला तथा समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला है।

स्त्री-पुरुष दोनों ही इस यन्त्र का साधन कर सकते हैं। कल्याणार्थियों को इस यन्त्र का साधन अवश्य करना चाहिए।

मृतवत्सा-दोष शान्ति यन्त्र

भोजपत्र के ऊपर कुंकुम अथवा गोरोचन द्वारा एक ऐसा चतुष्कोण यन्त्र खींचें, जिसके भीतर पाँच सीधी एवं दो सीधी रेखायें हों और जिसमें १८ कोष्ठक बन जायें।

फिर, प्रथम पंक्ति के कोष्टकों में क्रमश: 'ॐ, ह्रीं, क्लीं, स्त्रीं, हुँ, फट्' तथा द्वितीय पंक्ति के कोष्ठकों में क्रमश: 'रक्ष, गर्भं, साध्य-स्त्री का नाम, गर्भं, रक्ष, रक्ष' तथा तृतीय पंक्ति में, स्वा, हा, श्रीं, क्लीं, फट् हुं'—इन बीजों को लिखें।

उक्त प्रकार से यन्त्र का जो स्वरूप निश्चित होगा, उसे अगले पृष्ठ के चित्र में प्रदर्शित किया है। प्रदर्शित यन्त्र के जिस कोष्ठक में 'राम' शब्द लिखा हुआ है, वहाँ साध्य-स्त्री का नाम लिखना चाहिए।

लेखनीपरान्त यन्त्र का विधिवत् पूजन करके साध्य-स्त्री यन्त्र को कलावे में लपेट कर अथवा त्रिलोह के ताबीज में भर कर, अपनी बायीं भुजा अथवा कण्ठ में धारण कर लें।

इस यन्त्र को धारण करने में 'मृतवत्सा दोष' की शान्ति हो जाती है अर्थात् जो स्त्री प्रसव के समय हर बार मरे हुए बच्चे को जन्म देती है अथवा

जिसकी सन्तानें जन्म ले-लेकर मर जाती हैं, वह यदि इसे गर्भावस्था में ही

ॐ	ह्रीं	क्लीं	स्त्रीं	हुं	फट्
रक्ष	गर्भ	राम	गर्भ	रक्ष	रक्ष
स्वा	हा	प्रीं	क्लीं	फट्	हुं

65

धारण कर ले तो उसकी सन्तान जीवित बनी रहती है और वह जीवित संतान को ही जन्मा देती है। यह यन्त्र मृतवत्सा दोष को शान्त करने में अत्युत्तम है।

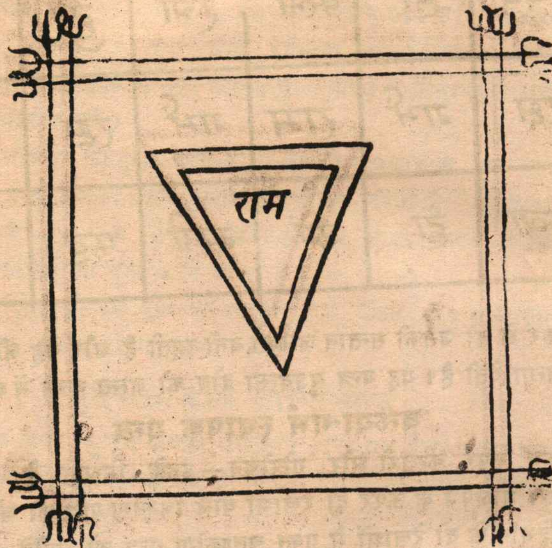
वन्ध्या-गर्भ स्थापक यन्त्र

कुंकुम, कपूर, कस्तूरी और गोरोचन—इनके मिश्रण से चमेली की कलम द्वारा भोजपत्र के ऊपर दो रेखाओं वाले त्रिकोण यन्त्र को खींचें। फिर उसके बहिर्भाग के दो रेखाओं से युक्त चतुष्कोण यन्त्र को खींचे तथा प्रत्येक रेखा में एक-एक त्रिशूल बना दें। तत्पश्चात् त्रिकोण के मध्य में साध्य-व्यक्ति का नाम लिख कर यन्त्र को पूरा करें।

उक्त विधि वे यन्त्र का जो स्वरूप निर्धारित होगा, उसे अगले पृष्ठ के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र जहाँ 'राम' श द लिखा है, वहाँ साध्य-स्त्री का नाम लिखना चाहिए।

लेखनोपरांत श्वेत तथा नीलकमल, केतकी, जुही और बकुस के पुष्प (कोई पुष्प लाल रंग का अथवा गंधहीन न हो), ऋतुफल, कपूर युक्त ताम्बूल धुप, दीप, गध, नैवेद्य तथा श्वेत वस्त्र आदि से यन्त्र का पूजन कर, उसे त्रिलोह के ताबीज में भर कर साध्य-स्त्री अपनी बाँई भुजा अथवा कण्ठ में धारण कर लें।

इस यन्त्र के प्रभाव से वन्ध्या-स्त्री भी गर्भ धारण कर लेती है तथा अनेक प्रकार के सुख-सौभाग्य प्राप्त करती है। यदि पति-पत्नी दोनों ही इस

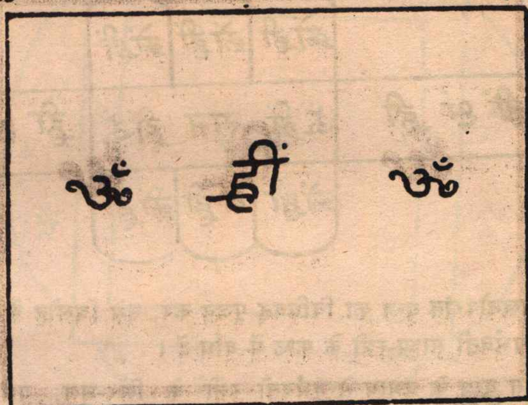


यन्त्र को धारण करें तो बन्ध्यत्व दोष को दूर करने में शीघ्र सफलता मिलती है। पुरुष को यह यन्त्र अपनी दायीं भुजा में धारण करना चाहिए।

वन्ध्या-गर्भ धारण यन्त्र

कपूर, कुंकुम, कस्तूरी तथा गोरोचन द्वारा चमेली की कलम से भोजपत्र अथवा लालपत्र के ऊपर एक चतुष्कोण यन्त्र लिखें। यन्त्र के ऊपरी भाग में बायीं ओर ऊपर 'हुं' तथा नीचे की ओर वषट् लिखें तथा दायीं ओर ऊपर 'स्वाहा' तथा नीचे की ओर 'फट्' लिखें। यन्त्र के मध्य भाग में 'ॐ, ह्रीं, ॐ' —इन बीजों को लिखना चाहिए।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप निश्चित होगा, उसे नीचे के चित्र में प्रदर्शित किया गया है ।



यन्त्र लेखनोपरांत रुद्र तथा रुद्रकाली का विधिवत् पूजन करें । फिर यन्त्र को साध्य-स्त्री अपनी बाईं भुजा, कण्ठ अथवा कमर में धारण कर ले ।

इस यन्त्र के प्रभाव से वन्ध्या-स्त्री गर्भ धारण कर, दीर्घजीवी पुत्र को प्राप्त करती है । यह यन्त्र केवल वन्ध्या-स्त्री को ही धारण करना चाहिए ।

सुख-प्रसव यन्त्र

भोजपत्र के ऊपर हाथी के मद द्वारा एक षटवत् चतुष्कोण यन्त्र की रचना कर, उसे चार ऊर्ध्व रेखाओं से संयुक्त करें तथा दोनों ओर दो कर्णिकायें लिखें । फिर, 'ॐ, ह्रीं'—इन दो बीजों से पुटित साध्य-स्त्री के नाम को मध्य भाग में लिखकर, ऊपर नीचे के प्रत्येक कोष्ठक में 'क्रों, ह्रीं'—इन बीजों को लिखें तथा दाईं बाईं ओर की कर्णिकाओं में 'ह्रीं क्षं ह्रीं' बीजों को लिखें ।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप निर्धारित होगा, उसे नीचे दिये गये चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-स्त्री का नाम लिखना चाहिए।



लेखनोपरांत यन्त्र का विधिवत् पूजन कर, उसे त्रिलोह के ताबीज में बन्द करके गर्भवती साध्य-स्त्री के कण्ठ में बाँध दें।

इस यन्त्र के प्रभाव से गर्भवती स्त्री के शिर-शूल, गर्भशूल, भूत-दोष आदि सभी उपद्रव शान्त हो जाते हैं तथा वह सुखपूर्वक प्रसव करती है।

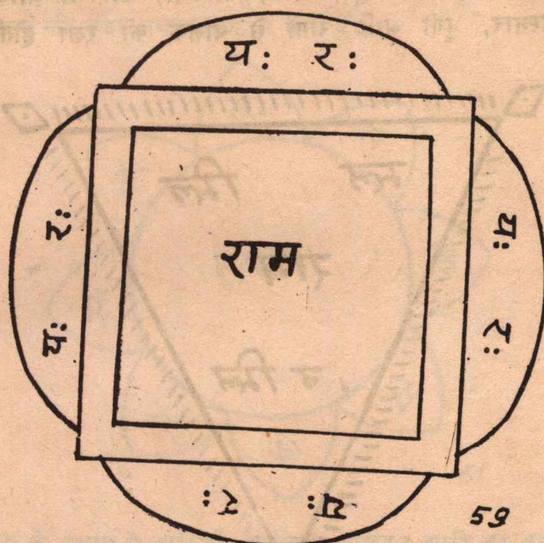
गर्भ-रक्षक यन्त्र

हाथी के मद से भोजपत्र के ऊपर दो रेखाओं वाले एक चतुष्कोण यन्त्र को लिखकर, उसकी चारों दिशाओं में चार कर्णिकायें लगायें तथा प्रत्येक कर्णिका में 'यः रः'—इन बीजों को लिख कर, चतुष्कोण के भीतर यन्त्र के मध्य भाग में गर्भवती साध्य-स्त्री का नाम लिखें।

उक्त प्रकार से यन्त्र का जो स्वरूप निश्चित होगा, उसे अगले पृष्ठ पर प्रदर्शित चित्र में स्पष्ट किया गया है। प्रदर्शित चित्र में, यन्त्र के मध्य भाग में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम को लिखना चाहिए।

लेखनोपरांत यन्त्र का विधिवत् पूजन करके, उसे चाँदी के ताबीज में भर कर गर्भवती साध्य-स्त्री के गले में बाँध दें।

इस यन्त्र के प्रभाव से सभी विकार दूर होकर प्रसव सुखपूर्वक होता है



तथा गर्भ की रक्षा भी होती है। जिस गर्भवती स्त्री के गले में यह यन्त्र बंधा रहेगा, उसे गर्भस्राव अथवा गर्भपात की शिकायत नहीं होगी।

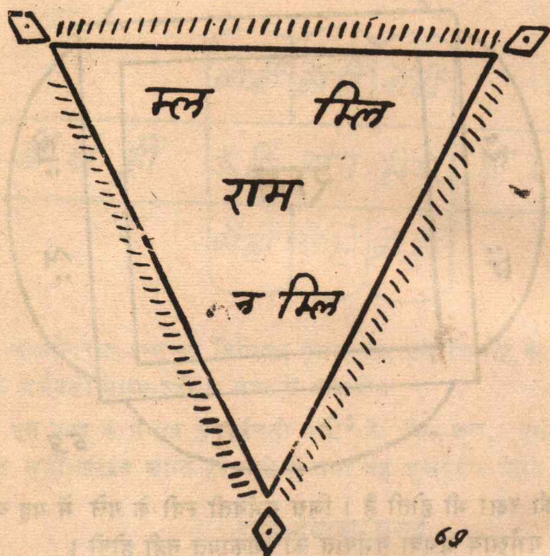
बाल-दोष-नाशक त्रिपुर भैरव यन्त्र

भोजपत्र के ऊपर धतूरे के रस से एक गोलाकार चक्र खींच कर, उसके बाहर आठ कमलदल लगायें तथा प्रत्येक दल में 'ह्रीं' बीज लिखें। यन्त्र के मध्यभाग में साध्य-व्यक्ति अर्थात् जिस बालक के गले में यन्त्र बाँधना हो, उसका नाम लिखें।

उक्त प्रकार से यन्त्र का जो स्वरूप निर्धारित होगा, उसे अगले पृष्ठ पर दिए गए चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जिस जगह 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति (बालक) का नाम लिखना चाहिए।

लेखनोपरांत यन्त्र का विधिवत पूजन करके, उसे त्रिलोह के ताबीज में र कर, साध्य-व्यक्ति (बालक) के गले में बाँध दें।

इसे यन्त्र के प्रभाव से भूत, बेताल, शाकिनी, डाकिनी आदि व्याधियों तथा अपस्मार, मृगी आदि रोगों से बालक की रक्षा होती है। यदि



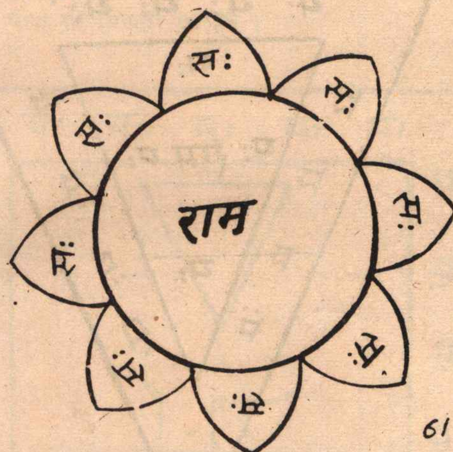
यह यन्त्र किसी स्वस्थ बालक के गले में बाँध दिया जाए तो उसे ये व्याधियाँ नहीं हो पातीं।

बाल-रक्षक यन्त्र

भोजपत्र के ऊपर धतूरे के रस से एक गोलाकार चक्र खींच कर उसके बाह्यभाग में अष्टदलों की स्थापना करें तथा प्रत्येक दल में विसर्ग . स' कार लिख कर, यन्त्र के मध्य में साध्य-व्यक्ति (बालक) का नाम लिखें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप निश्चित होगा, वह अगले पृष्ठ पर दिए गए यन्त्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, साध्य-व्यक्ति (बालक) का नाम लिखना चाहिए।

लेखनोपरांत यन्त्र का विधिवत पूजन करके, उसे त्रिलोह के ताबीज में भर कर बालक की भुजा अथवा कण्ठ में बाँध दें।



इस यन्त्र के प्रभाव से डाकिनी, शाकिनी, बालग्रह आदि का भय दूर हो जाता है तथा ऐसे सभी उपद्रवों से बालक की रक्षा होती है।

डाकिनी त्रासन यन्त्र

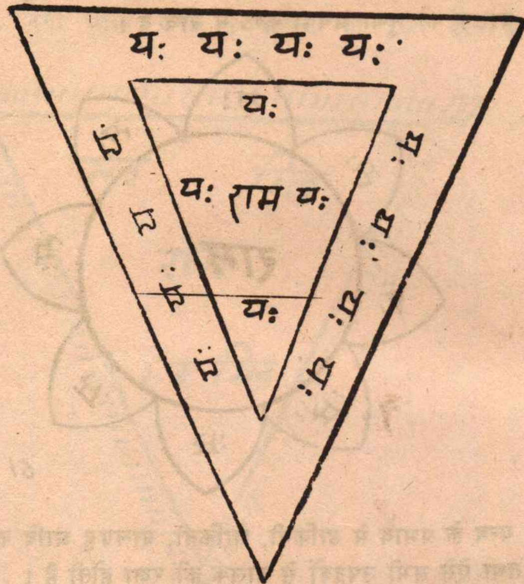
नये खप्पर के टुकड़े पर खड़िया मिट्टी द्वारा बारह कोष्ठकों वाले एक यन्त्र की रचना करें। फिर प्रत्येक कोष्ठकों में 'ह्रीं' बीज लिखें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे अगले पृष्ठ पर दिये गये चित्र में प्रदर्शित किया गया है।

लेखनोपरांत यन्त्र की पुष्प आदि से पूजा कर, यन्त्र लिखित खप्पर के टुकड़े को धूलि से पूर्ण अग्नि में रख कर, खैर की आग में तपायें।

उक्त विधि से यन्त्र को आग में तपाने मात्र से ही भूत-प्रेतादि रोते-कांपते हुए बालक आदि को छोड़ कर उस देश से ही दूर भाग जाते हैं।

किसी भी आयु का कोई मनुष्य—स्त्री, पुरुष, बालक, वृद्ध, युवा—किसी भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी आदि से ग्रस्त हो तो इस यन्त्र

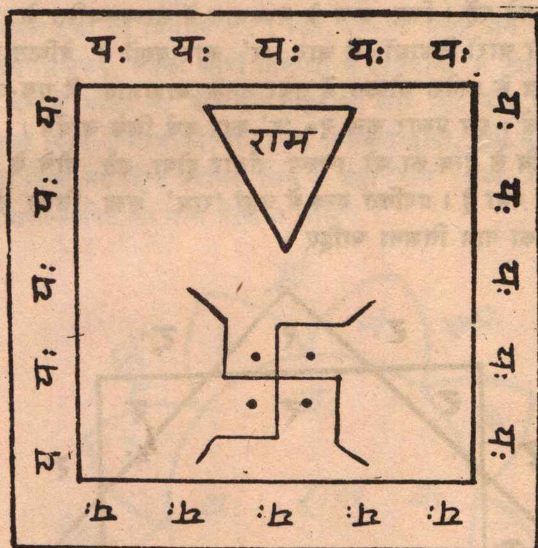


का प्रयोग करना चाहिए । इस के प्रभाव से प्रत्येक आयु के स्त्री-पुरुष भूतादि की बाधा से मुक्त हो जाते हैं ।

भूतज तृतीयक ज्वर नाशन यन्त्र

ऐक बड़े भोजपत्र के टुकड़े के ऊपर हल्दी के रस अथवा धतूरे के रस से एक चतुष्कोण यन्त्र खींच कर, उसके भीतर ऊपर की ओर एक त्रिकोण तथा नीचे की ओर एक स्वस्तिक लिखें । तत्पश्चात् उन्हें एक चतुष्कोण यन्त्र से वेष्टित करें । फिर त्रिकोण के भीतर साध्य-व्यक्ति के नाम को लिख कर दूसरे चतुष्कोण के भीतर पूर्वादि चारों दिशाओं में विसर्गान्त 'य' वर्ण को आदि विषम क्रम से लिखें ।

उक्त प्रकार से यन्त्र का जो स्वरूप निश्चित होगा, उसे नीचे के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।



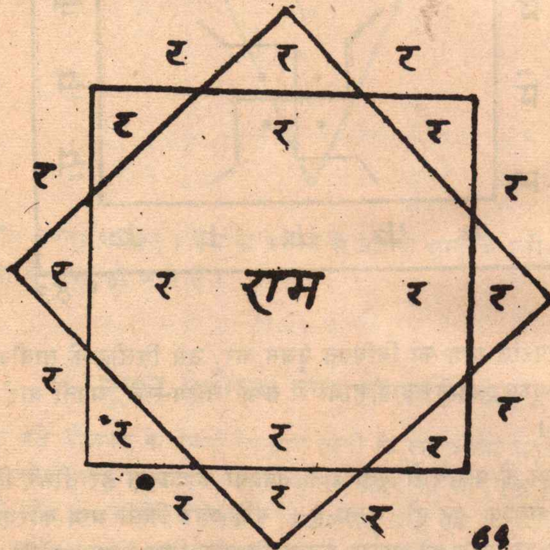
लेखनोपरांत यन्त्र का विधिवत पूजन कर, उसे त्रिलोह के ताबीज में भर कर साध्य-पुरुष अपने दायें हाथ में तथा साध्य-स्त्री अपनी बाईं भुजा में धारण करें।

इस यन्त्र के प्रभाव से भूतादि के उपद्रवों के कारण हर तीसरे दिन आने वाला ज्वर अवश्य दूर हो जाता है। यदि ज्वर किसी अन्य कारण से आ रहा हो, तो इस यन्त्र को धारण करना निरर्थक सिद्ध होगा, क्योंकि यह यन्त्र केवल भूतज तृतीयक ज्वर पर ही लाभ करता है। अन्य प्रकार के तृतीयक ज्वर (तिजारी बुखार) इससे दूर नहीं हो पाते।

बाल ज्वर नाशक यन्त्र

श्मशान-वस्त्र के ऊपर धतूरे के रस से एक चतुष्कोण चक्र लिख कर, उसके ऊपर दूसरा चतुष्कोण चक्र इस रीति से खींचे कि उसके कोण बाहर की ओर निकलते रहें। फिर, यन्त्र के मध्यभाग में साध्य-व्यक्ति के नाम को लिख कर, उसे चारों दिशाओं में चार 'र' कार वर्णों से वेष्टित कर दें। तत्पश्चात् यन्त्र के प्रत्येक कोष्ठक में तथा उनके बाह्यभाग में एक-एक 'र' कार वर्ण लिखें। इस प्रकार कुल २० 'र' कार वर्ण लिखे जायेंगे।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे नीचे के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।



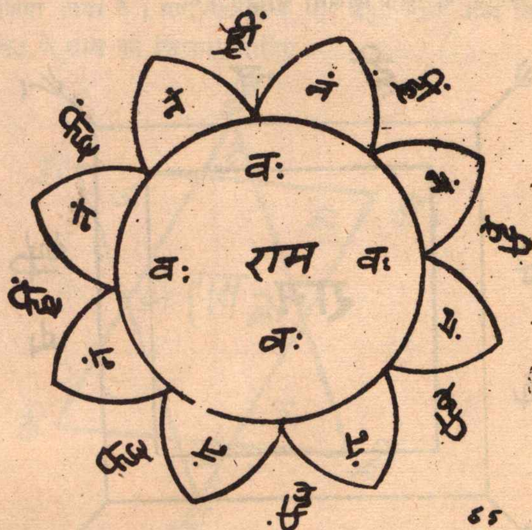
लेखनोपरांत मनोहर बलि, पुष्प आदि से यन्त्र का पूजन करें तथा उपवास रखकर, यन्त्र को भूमि में गाढ़ दें। ये सभी क्रियाएँ कृष्णपक्ष की अष्टमी अथवा चतुर्दशी तिथि को, दिन के समय करनी चाहिए।

इस यन्त्र के प्रभाव से बालकों का ज्वर दूर हो जाता है। अन्य लोगों के ज्वर को दूर करने में भी यह यन्त्र लाभकारी सिद्ध होता है।

ज्वर शमन यन्त्र

भोजपत्र के ऊपर धतूरे के रस से एक गोलाकार चक्र खींच कर, उस पर आठ कमल दलों का निर्माण करें। फिर, यन्त्र के मध्य भाग में साध्य-व्यक्ति का नाम लिखकर, उसकी चारों दिशाओं मे विसर्गान्त 'व' कार लिखें। फिर, प्रत्येक दल के भीतर 'नं' बीज तथा बाहर की ओर 'ह्रीं' बीज लिखें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप निश्चित होगा, उसे नीचे के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, उस जगह साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।



लेखनोपरान्त यन्त्र का यथाविधि पूजन कर ठंडे पानी में डाल दें।

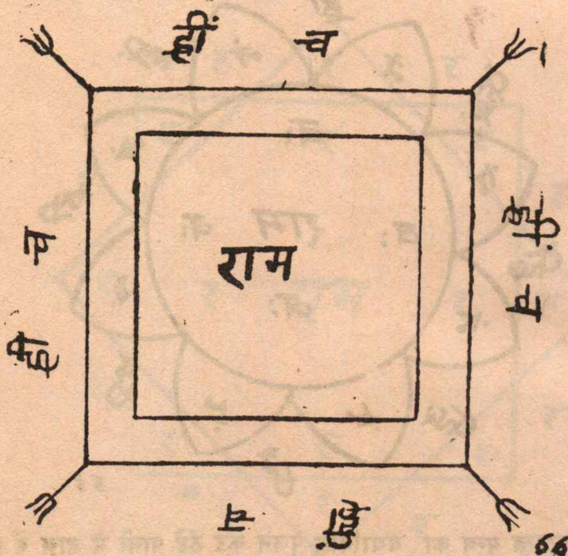
इस यन्त्र के प्रभाव से द्वन्द्वज ज्वर का रोगी व्यक्ति तीन ही दिन में रोग-मुक्त हो जाता है। समय बाँधकर आने वाले ज्वरों को शान्त करने में यह सर्वोत्तम है।

यदि इस यन्त्र को भुजा में धारण किया जाय तो भूतोपद्रव के कारण उत्पन्न ज्वर भी तुरन्त दूर हो जाता है।

ज्वलन रक्षा यन्त्र

भोजपत्र के ऊपर धतूरे के रस से दो रेखाओं वाले चतुष्कोण यन्त्र को खींचकर, उसके प्रत्येक कोण में त्रिशूल लिखें तथा चारों दिशाओं में 'ह्रीं च' बीजों को लिखकर, यन्त्र के मध्यभाग में सानुस्वार साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखें।

उक्त प्रकार से यन्त्र का जो स्वरूप निर्धारित होगा, उसे नीचे दिये गये चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।



लेखनोपरान्त यन्त्र का विधिपूर्वक पूजन करके, उसे त्रिलोह के ताबीज में भरकर साध्य-व्यक्ति (बालक) के गले में बाँध दें।

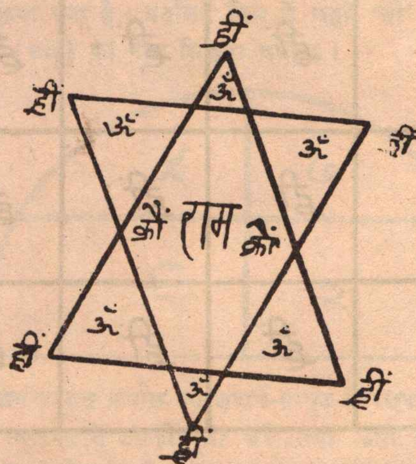
इस यन्त्र के प्रभाव से बालकों के मानसिक-रोग, शारीरिक-रोग, उपसर्गाज-रोग, स्तन-रोग, दन्त-रोग, ज्वर, ईर्ष्या, क्रोध आदि नष्ट हो जाते हैं।

'बालानां ज्वरादि स्तम्भन चलन रक्षा कर' नामक इस यन्त्र की तन्त्रज्ञों द्वारा बड़ी प्रशंसा की गई है।

इकतरा-ज्वर नाशक यन्त्र

पान के ऊपर, हल्दी के रस से बबूल के काँटे द्वारा एक षट्कोण यन्त्र लिखें। फिर यन्त्र के प्रत्येक कोण के भीतर 'ॐ' कार तथा ऊपर के सभी कोनों में 'ह्रीं' बीज को लिखकर, यन्त्र के मध्य भाग में 'क्रौं' बीज से पुटित साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखें।

उक्त प्रकार से यन्त्र का जो स्वरूप निश्चित होगा, उसे नीचे प्रदर्शित यन्त्र में स्पष्ट किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।



लेखनोपरान्त यन्त्र का विधिपूर्वक पूजन करके, यन्त्र-लिखित पान इकतरा ज्वर के रोगी को खिलावें।

इस यन्त्र के प्रभाव से इकतरा ज्वर अवश्य दूर हो जाता है।

'एकान्तरज्वर शमन' नामक यह यन्त्र इकतरा बुखार अर्थात् एक दिन छोड़कर आने वाले विषम-ज्वर में अत्यन्त लाभकारी है। बालक, वृद्ध, युवा सभी आयु के स्त्री-पुरुषों के एकान्तरज्वर पर यह यन्त्र लाभ करता है।

तिजारी-ज्वर-नाशक यन्त्र

भोजपत्र के ऊपर धतूरे के रस से एक त्रिकोण यन्त्र खींच कर, उसके भीतर एक अन्य त्रिकोण यन्त्र खींचें। फिर, उस यन्त्र के मध्य भाग में 'य' कार पुटित साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें तथा प्रत्येक रेखा के मध्य भाग में चार-चार 'य' कार बीज लिखें।

उक्त प्रकार से यन्त्र का जो स्वरूप निश्चित होगा, उसे नीचे के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्री	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

लेखनोपरान्त यन्त्र को दही-भात की बलि देकर, रोगी पुरुष की दाईं भुजा अथवा रोगिणी-स्त्री की बाईं भुजा में बाँध दें।

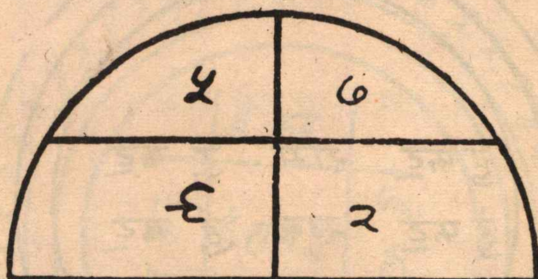
इस यन्त्र को भुजा में धारण करने से बालक, वृद्ध, युवा—सभी आयु के स्त्री-पुरुषों का तृतीयक-ज्वर दूर हो जाता है। तृतीयक-ज्वर को लोकभाषा में 'तिजारी बुखार' कहा जाता है।

यह यन्त्र अन्य प्रकार के ज्वरों पर भी लाभ करता है, परन्तु तिजारी ज्वर विशेष रूप से हितकर है।

शत्रु-नाशन यन्त्र

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि की रात्रि में, श्मशान के अंगारे को धतूरे के रस में पीसकर, उसकी स्याही द्वारा मनुष्य की खोपड़ी में (कपाल की हड्डी) पर एक त्रिकोण यन्त्र लिखकर, उसकी सभी रेखाओं के ऊपर ३६-३६ छोटी-छोटी आड़ी रेखाएँ—अर्थात् कुल १०८ रेखाएँ खींचें तथा त्रिकोण के तीनों कोनों पर बिन्दुयुक्त चतुष्कोण बनायें। फिर त्रिकोण के मध्य भाग में तीन रेखाओं की कल्पना कर के तथा नीचे की रेखाओं पर ऊपर 'म्ल, मिल'—इन अक्षरों को लिखें तथाबीच वाली रेखा पर साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखें।

इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप निश्चित होगा, उसे नीचे दिये गये चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'नो' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति (शत्रु) का नाम लिखना चाहिए।



यन्त्र लेखनोपरान्त कपाल को शराव-सम्पुट में रखकर बलि, माँस, पूजन-सामग्री तथा स्व-रक्त से उसकी पूजा करें तथा उसी जगह भूमि के भीतर गाढ़ दें। फिर प्रत्येक रात्रि में उस स्थान के ऊपर अग्नि प्रज्ज्वलित करते रहें।

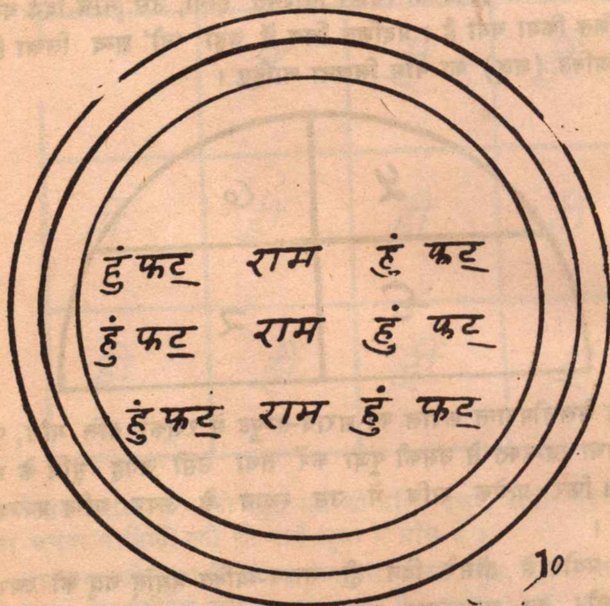
इस प्रयोग से तीसरे दिन ही साध्य-व्यक्ति अर्थात् शत्रु को ज्वर आ जायगा और वह क्रमानुसार प्रबल होता हुआ, उसकी मृत्यु का कारण बन जायेगा।

यदि रोगी व्यक्ति एक जीव की बलि दे देगा, उसके प्राण बच जायेंगे, अन्यथा वह जीवित नहीं बच सकेगा ।

सर्वजन मारण यन्त्र

श्मशान के अंगारे को मनुष्य के रक्त में घिसें और उसमें विष भी मिला दें । तत्पश्चात् कौए के पंख की कलम से श्मशान-वस्त्र के ऊपर तीन रेखाओं वाले वर्तुलाकार चक्र को खीचें । फिर, उस चक्र के मध्य भाग में तीन रेखाओं की कल्पना करके प्रत्येक रेखा में 'हूं फट्' बीज-मन्त्र से पुटित सानुस्वार साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें ।

उक्त प्रकार से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे नीचे दिये गये चित्र में प्रदर्शित किया गया है । प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'राम' शब्द लिखा हुआ है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए ।



यन्त्र लेखनोपरान्त शत्रु के पाँवों के नीचे की धूलि लाकर, उसमें

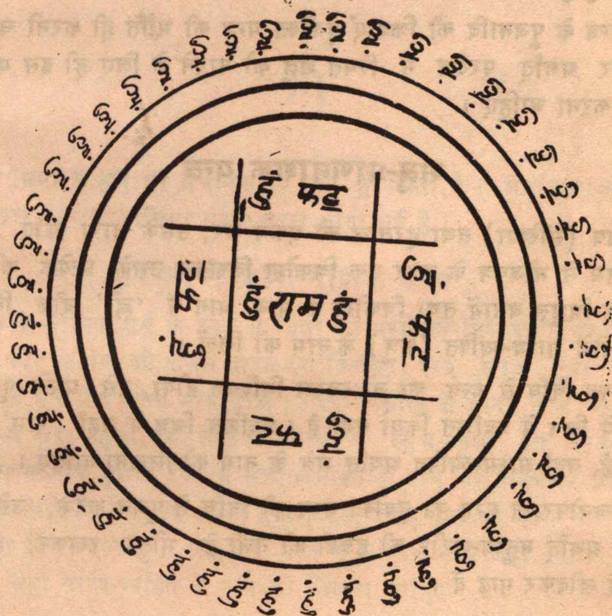
राजिका, मिलाकर एक प्रतिमा तैयार करें तथा उस प्रतिमा के हृदय में उक्त यन्त्र को स्थापित करदें ।

इस प्रयोग से शत्रु के शरीर में दाह तथा व्याधि उत्पन्न होगी । तीसरे दिन उसके मस्तिष्क में घोर पीड़ा होगी तथा सातवें दिन हाथ-पाँवों में दाह होकर, उसकी मृत्यु हो जायगी ।

इस यन्त्र के पूजन आदि की क्रियाएँ पूर्वोक्त यन्त्र की भाँति ही समझ लेनी चाहिए ।

देशान्तरस्थ-शत्रुमारण यन्त्र

श्मशान के अंगार तथा विष (संखिया) को बकरी के रक्त में मिश्रित कर, मनुष्य के कपाल की हड्डी के मध्य भाग में, कौए के पंख की कलम से दो रेखाओं से युक्त एक गोलाकार यन्त्र खींचें तथा उसके मध्य भाग में



यह कांडी की भाँति दो आड़ी तथा दो तिरछी रेखाओं द्वारा आठ दल खींच कर, उसके प्रत्येक दल में 'हुं फट्'—इस बीज मन्त्र को लिखें। यन्त्र के मध्य भाग में साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखें तथा यन्त्र के ऊपरी भाग में चारों ओर 'हुं' बीज को लिखें।

पूर्वोक्त प्रकार से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे पिछले पृष्ठ पर दिये गये चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति (शत्रु) के नाम को लिखना चाहिए।

लेखनोपरान्त यन्त्र को शराव-सम्पुट में रखकर भस्म-पूरित करें। फिर उसे अग्नि के ऊपर स्थापित कर, प्रतिदिन थोड़ी-थोड़ी अग्नि से जलाएँ। इस विधि से इक्कीसवें दिन रात्रि के समय सम्पूर्ण यन्त्र भस्म हो जायगा। इसी अवधि में शत्रु को ज्वर आना आरम्भ हो जायगा तथा इक्कीसवें दिन उसकी मृत्यु भी हो जायगी।

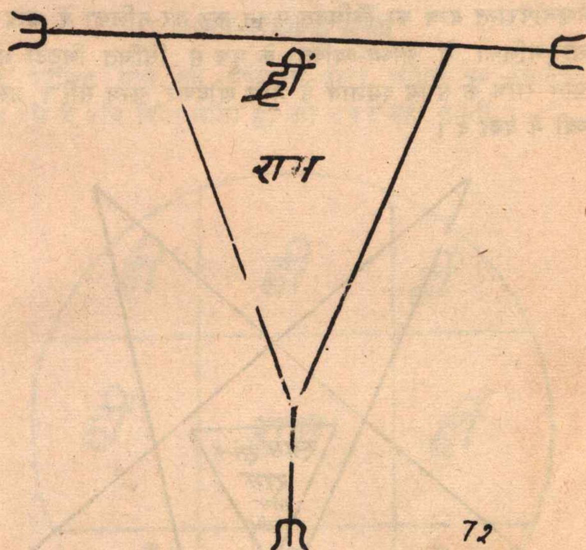
यन्त्र के पूजनादि की क्रियाएँ पूर्वोक्त यन्त्र की भाँति ही करनी चाहिए। देशान्तर अर्थात् परदेश में स्थित शत्रु को मारने के लिए ही इस यन्त्र का प्रयोग करना चाहिए।

शत्रु-प्राणनाशक यन्त्र

विष (संखिया) तथा हरताल को एकत्र कर, उसके द्वारा कौए के पंख की कलम से भोजपत्र के ऊपर एक त्रिकोण लिखकर उसके प्रत्येक कोण में एक-एक त्रिशूल बनायें तथा त्रिकोण के मध्य भाग में 'ह्रीं' बीज लिखकर उसके नीचे साध्य-व्यक्ति (शत्रु) के नाम को लिखें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप निश्चित होगा, उसे अगले पृष्ठ पर दिये गये चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति अर्थात् शत्रु के नाम को लिखना चाहिए।

लेखनोपरान्त यन्त्र का पूर्वोक्त यन्त्र की विधि से पूजन करके, उसे नर-नलिका अर्थात् मनुष्य-शरीर की हड्डी की नली के भीतर रखकर, श्मशान भूमि में खोदकर गाढ़ दें।



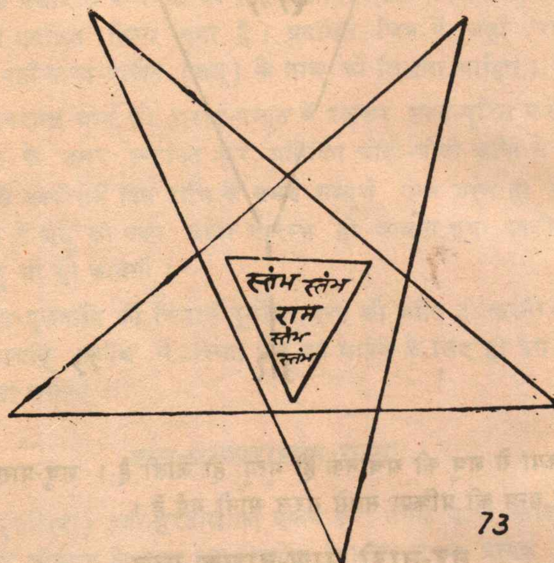
इस क्रिया से शत्रु की अचानक ही मृत्यु हो जाती है। शत्रु-प्राण-नाशक यन्त्र में इस यन्त्र की प्रक्रिया सबसे सरल मानी गई है।

नर-नारी प्राण-नाशक यन्त्र

स्त्री के मासिक धर्म के रक्त में चिता की भस्म को मिलाकर भिलावे के पत्ते पर, कौए के पंख की कलम द्वारा एक त्रिकोण यन्त्र खींचे तथा उसके बहर्भाग में एक पंच कोण यन्त्र खीचें। फिर त्रिकोण के भीतर तीन रेखाओं की कल्पना कर, पहली तथा तीसरी रेखाओं में 'स्तंभ-स्तंभ' इन बीजों को लिखे तथा मध्यस्थ दूसरी रेखा में साध्य व्यक्ति के नाम को सानुस्वार लिखें।

उक्त विधि से जो यन्त्र तैयार होगा, उसे अगले पृष्ठ पर दिये गये चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र के मध्य भाग में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

लेखनोपरान्त यन्त्र का विधिवत् पूजन कर नर-नलिका में बन्द करें साथ ही उसी नलिका में साध्य-व्यक्ति के मूत्र से सिंचित मिट्टी भी भर दें। तत्पश्चात् रात्रि के समय श्मशान में भूमि खोदकर, यन्त्र सहित उस नलिका को पृथ्वी में दबा दें।



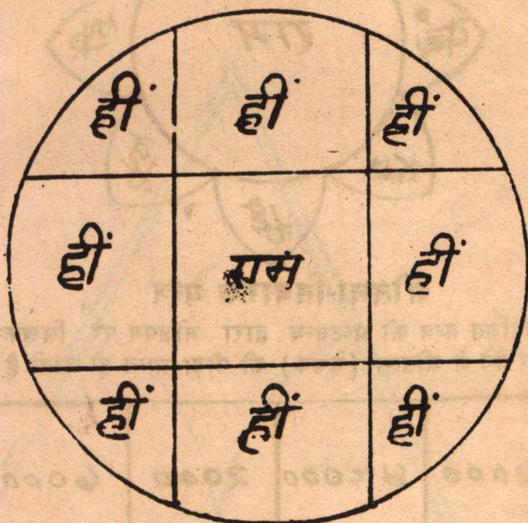
उक्त यन्त्र के प्रयोग से साध्य-व्यक्ति (शत्रु)—चाहे स्त्री हो अथवा पुरुष—को मूत्र-रोग उत्पन्न होता है और सात दिन के भीतर ही उसकी मृत्यु हो जाती है।

विशेष : (१) सभी मारक यन्त्रों की मोक्ष एक जीव की बलि देने से हो जाती है।

(२) मारक यन्त्र का प्रयोग बिना किसी विशेष कारण के, जब तक कि साधक को शत्रु द्वारा अपना प्राण-हानि का भय न हो, नहीं करना चाहिए, अन्यथा विपरीत फल भी हो सकता है।

नजर-नाशक यन्त्र

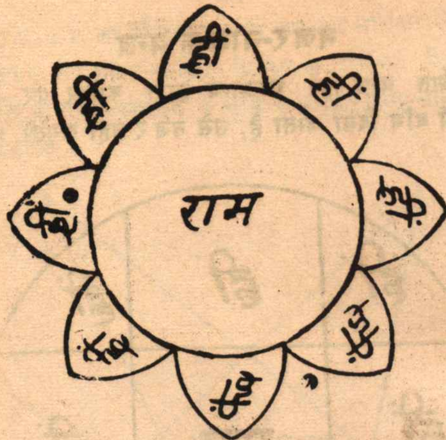
नीचे प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगन्ध द्वारा कागज पर लिखकर जिस बालक के गले में बांध दिया जाता है, उसे नज़र नहीं लगती ।



इस यन्त्र के बीच में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, उस जगह, जिस व्यक्ति के गले में यन्त्र बांधता हो, उसका नाम लिखना चाहिए । जिस व्यक्ति को नजर लगी हो, उसके गले में यदि इस यन्त्र को बाँधा जायगा, तो उसकी नज़र उतर जायेगी अर्थात् उसको नज़र का दोष दूर हो जायगा ।

वायु गोला-नाशक यन्त्र

अगले पृष्ठ पर ऊपर प्रदर्शित यन्त्र को केशर या लाल चन्दन द्वारा कागज पर लिखकर, रविवार के दिन सूर्य के सामने पानी में घोकर, उस पानी को पी लेने से वायु गोला का दर्द दूर हो सकता है ।



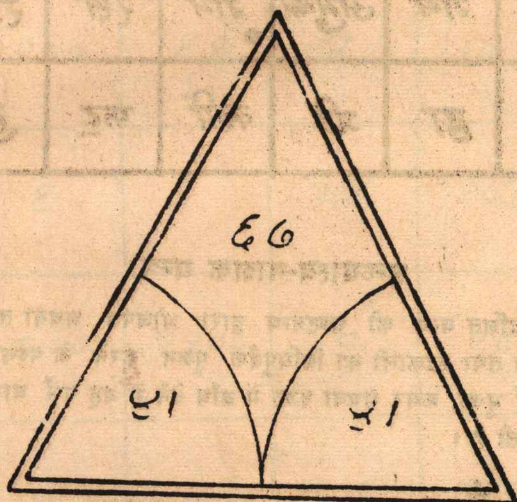
शीतला-निवारक यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र की अष्टगन्ध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर रोगी के सिरहाने रख देने से शीतला (चेचक) की पीड़ा शान्त हो जाती है।

४२०००	४८०००	२०००	७०००
६०००	३०००	४६०००	४५०००
४०००	५११०००	४४०००	५०००
१०००	७०	१८	६०८

श्वान-विष नाशक यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर, जिस व्यक्ति को कुत्ते ने काटा हो, उसके मस्तक पर रखने अथवा बांध देने से कुत्ते का विष दूर हो जाता है।



मृतवत्सा-दोष नाशक यन्त्र

अगले पृष्ठ पर प्रदर्शित यन्त्र को गोरोचन एवं कुंकुम द्वारा भोजपत्र पर लिखकर उस स्त्री की बाईं भुजा अथवा कण्ठ में बांध दें, जिसके गर्भ से मरी हुई सन्तान का जन्म होता हो अथवा जिसकी सन्तानें हो-होकर मर जाती हों, तो मृतवत्सा-दोष का शमन हो जाता है।

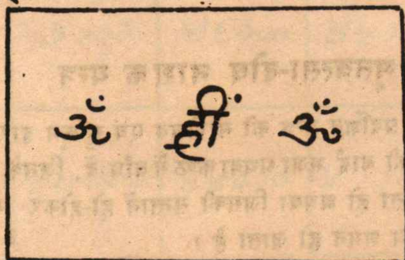
यन्त्र में जिस स्थान पर 'अमुकी' शब्द लिखा है वहाँ उस स्त्री का नाम लिखना चाहिए, जिसके कण्ठ या भुजा में इस यन्त्र को बांधना हो।

ॐ	ह्रीं	क्ली	स्त्रीं	हुं	फट्
रक्ष	गर्भ	अमुकीं	गर्भ	रक्ष	रक्ष
स्वा	हा	श्रीं	क्लीं	फट्	हुं

78

बन्ध्यात्व-नाशक यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगन्ध द्वारा भोजपत्र अथवा तालपत्र पर लिखकर, रुद्र तथा रुद्रकाली का विधिपूर्वक पूजन करने के पश्चात् वन्ध्या स्त्री की बाईं भुजा, कमर अथवा कण्ठ में बाँध देने से वह गर्भ धारण करने योग्य हो जाती है।



गर्भपात-नाशक यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगन्ध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर उस स्त्री के कमर में बाँध दें, जिसे गर्भस्राव अथवा गर्भपात होने की सम्भावना हो ।

१००	९१	२	७
६	३	८४	१०३
८००	१५००	८	१०
४	५	१०२	८८

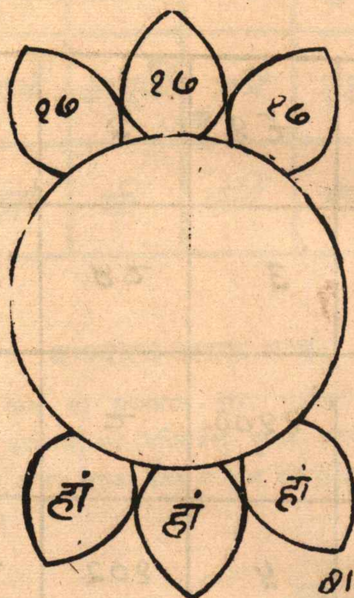
४०

इस यन्त्र के बाँधने से गर्भ गिरना रुक जाता है ।

कामला-नाशक यन्त्र

अगले पृष्ठ पर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगन्ध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर कामला (पीलिया) रोग के रोगी के मस्तक पर बाँध देते से पीलिया रोग दूर हो जाता है ।

इस यन्त्र के मध्य में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ उस रोगी का नाम लिखना चाहिए, जिसके मस्तक पर इस यन्त्र को बाँधना हो ।



धरन ठिकाने लाने का यंत्र

अगले पृष्ठ पर ऊपर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगन्ध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर उस व्यक्ति की कमर में बाँध दें, जिसकी धरन अपनी जगह से हट गई हो ।

इस यन्त्र के प्रभाव से धरन ठिकाने पर आ जाती है ।

६२३	१ स	८६
७ सी	५ पू	३७
२ म	९८	४ स

४२

सुख-प्रसव यंत्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को केशर अथवा लाल चन्दन द्वारा कागज पर

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

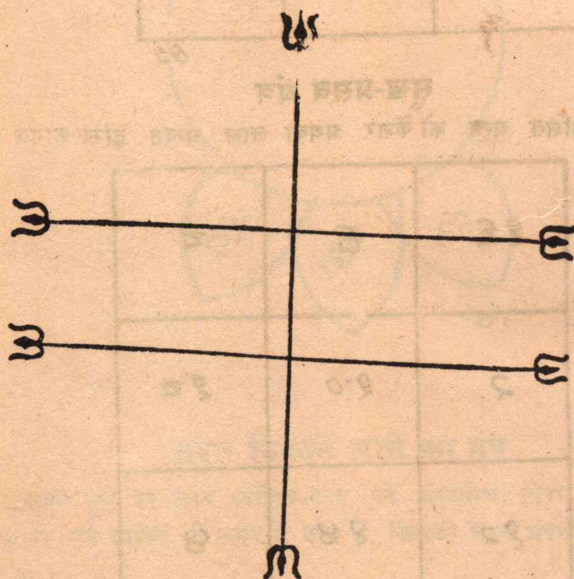
४३

लिखकर प्रसवोन्मुखी गर्भिणी स्त्री को दिखाने मात्र से ही, उसे सुखपूर्वक प्रसव हो जाता है।

जिस स्त्री के प्रसव में कष्ट अथवा विलम्ब हो रहा हो, उसके लिए इसका उपयोग करना चाहिए।

ज्वर-नाशक यंत्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को कागज के ऊपर स्याही से लिखकर, रोगी के कण्ठ अथवा भुजा में बाँध देने से हर प्रकार के ज्वर दूर हो जाते हैं।



आधासीसी-नाशक यंत्र (१)

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को स्याही द्वारा कागज पर लिखकर आधासीसी के रोगी के सिर पर बाँध देने से आधासीसी का दर्द दूर हो जाता है।

५६	१	४४
२०	३८	४६
२८	६२	१४

85

आधासीसी-नाशक यंत्र (२)

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को स्याही द्वारा कागज पर लिखकर आधासीसी के रोगी के मस्तक पर बाँध देने से आधासीसी का दर्द दूर हो जाता है।

५३	४२
३११	६०

86

सर्प-विष नाशक यंत्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को स्याही द्वारा कागज पर लिखकर पानी से धोयें। फिर वह पानी सर्प-दंशित व्यक्ति को पिला दें।

I≡	I	=	I॥
≡	+	८	≡
=	॥I	I	॥॥
=	I=I	=	॥I

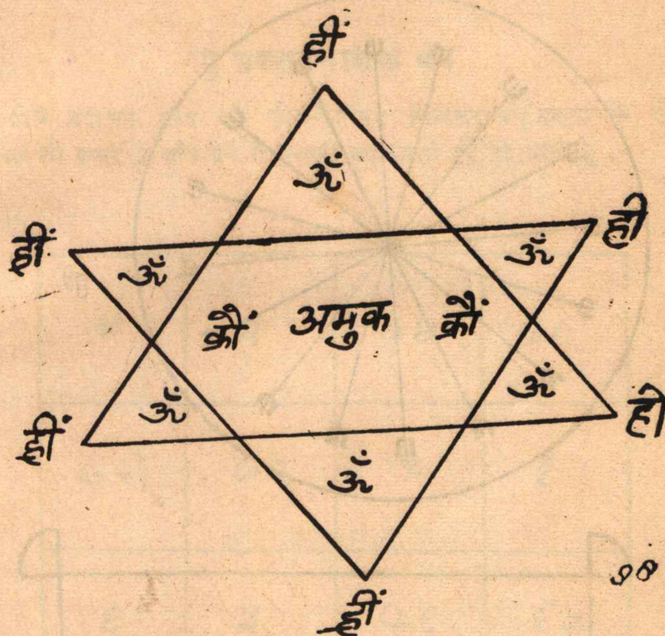
87

इससे सर्प का विष ऊपर न चढ़कर, नीचे उतरना आरम्भ हो जाता है।

इकतरा ज्वर-नाशक यंत्र (१)

अगले पृष्ठ पर प्रदर्शित यन्त्र को पान के पत्ते पर, हल्दी द्वारा, बबूल के काँटे से लिखकर इकतरा ज्वर के रोगी को खिला देने में ज्वर दूर हो जाता है।

यन्त्र के मध्य-स्थान में जहाँ 'राम' शब्द लिखा है, वहाँ रोगी व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

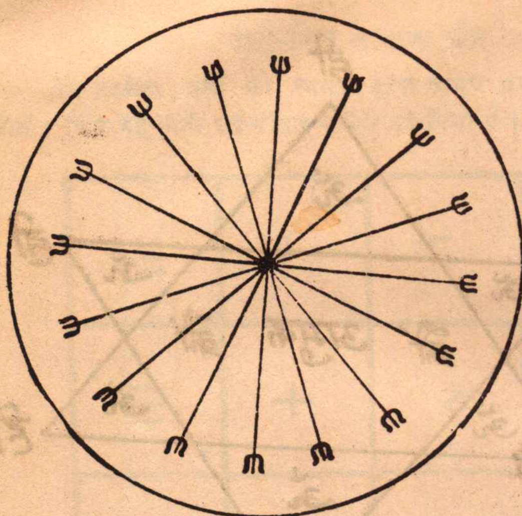


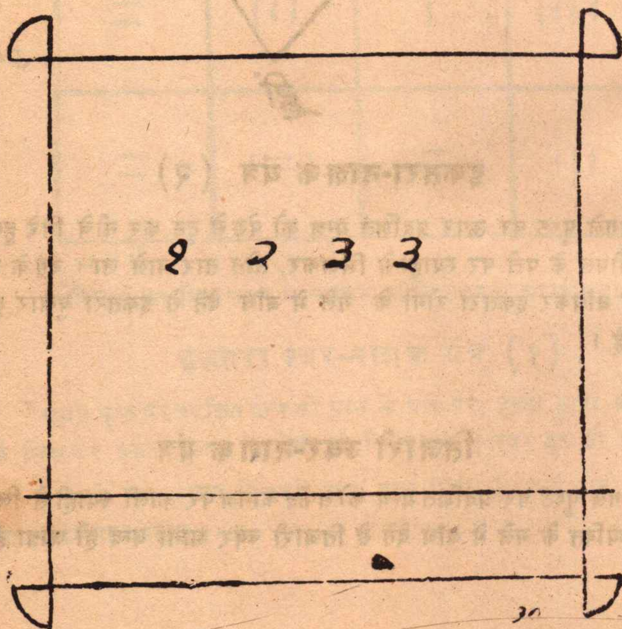
इकतरा-नाशक यंत्र (२)

अगले पृष्ठ पर ऊपर प्रदर्शित यन्त्र को पेड़ से टूट कर नीचे गिरे हुए डंडी युक्त पीपल के पत्ते पर स्याही से लिखकर, तीन तार वाले लाल रंग के सूत के डोरे में बाँधकर इकतरा रोगी के गले में बांध देने से इकतरा बुखार दूर हो जाता है ।

तिजारी ज्वर-नाशक यंत्र

अगले पृष्ठ पर प्रदर्शित यन्त्र को सफेद कागज पर काली स्याही से लिखकर रोगी व्यक्ति के गले में बांध देने से तिजारी ज्वर आना बन्द हो जाता है ।




१ २ ३ ३

नपुंसकता-नाशक यंत्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को भोज-पत्र पर लिखकर नपुंसकता के रोगी व्यक्ति की कमर में बांध देने से उसकी नपुंसकता दूर हो जाती है।

४	५	७४	७७
७९	७२	८	१
६	३	७६	९५
७२	३८	२	७

92

कर्ण--पीड़ा नाशक यंत्र

अगले पृष्ठ पर ऊपर प्रदर्शित यन्त्र को स्याही द्वारा कागज पर लिखकर कान की पीड़ा वाले रोगी के कान पर बांध देने से कान का दर्द दूर हो जाता है।

भ	ज	ज
कं	ग	ज:
छ	छ:	छ:

91

बाल-ज्वर-नाशक यंत्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को श्मशान के ठीकरे पर धतूरे के रस से लिख

६	१४	५३
६	११६	१
४१	४५	८

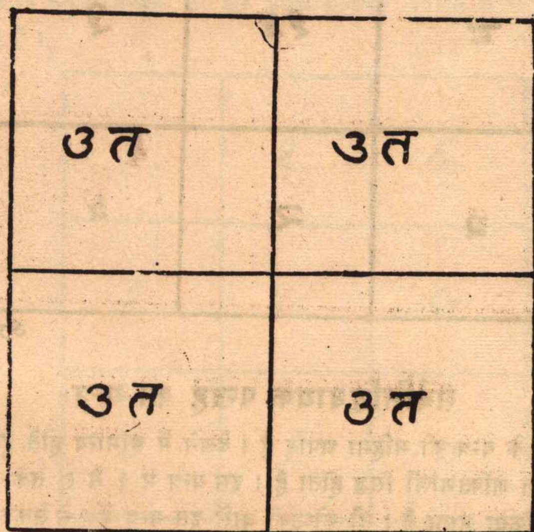
93

कर कृष्ण पक्ष की अष्टमी अथवा चतुर्दशी तिथि को पूजन करके, श्मशान में ही गाढ़ देने तथा उस स्थान पर पूजन करने से बालकों का ज्वर तुरन्त दूर हो जाता है।

इस यन्त्र को पूर्वोक्त प्रकार से तैयार करके यदि किसी वयस्क व्यक्ति के बाँध दिया जाय, तो उसका तिजारी-ज्वर दूर हो जाता है।

डाकिनी भगाने का यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को कागज पर स्याही से लिखकर लोशन की धूप दें। फिर यन्त्र को ओखली में रख कर कूटें तो इस प्रयोग से डाकिनी का मस्तक फूट जायगा और वह चिल्ला कर सब कुछ बताने लगेगी तथा स्व ग्रस्त व्यक्ति को छोड़ कर दूर भाग जायेगी।



94

डाकिनी-ग्रस्त व्यक्ति को डाकिनी के चंगुल से छुड़ाने का यह सब से सरल साधन है।

पुत्र दाता यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगध से भोजपत्र पर लिख कर कमर में बांधने से स्त्री पुत्र को जन्म देती है।

१०	९	१२
८	१५	३
२	२	५

95

सर्वसिद्धिदायक पन्द्रह का यन्त्र

पन्द्रह के यन्त्र की महिमा अपार है। देखने में सामान्य होते हुए भी यह यन्त्र अभुद्त शक्तिशाली सिद्ध होता है। इस यन्त्र में १ से ९ तक के अङ्कों का प्रयोग किया जाता है। नौ कोष्ठकों वाले इस यन्त्र में १ से लेकर ९ तक के अंक इस क्रम से बैठाये जाते हैं कि चाहे जिस ओर से किसी भी पंक्ति को आड़ा तिरछा या सीधा जोड़ा जाय, सब ओर से इस पंक्ति का योग १५ ही आता है।

इस यन्त्र को विभिन्न प्रकारों से लिखने पर विभिन्न प्रकार के फल प्राप्त होते हैं तथा विविध प्रकार के कष्टों से छुटकारा मिलता है।

इस यन्त्र के कुछ स्वरूप नीचे दिये जा रहे हैं। तथा इस यन्त्र को विभिन्न विधियों से लिखने की प्रक्रिया का वर्णन किया गया है, अतः जिस कामना को पूर्ण करने की इच्छा हो, तदानुरूप ही इसयन्त्र का साधन करना चाहिए।

पन्द्रह के यत्र के विविध रूप

पन्द्रह के यन्त्र की प्रयोग की विधियां निम्नानुसार हैं—

(१) अगर की कलम से पृथ्वी के ऊपर इस यन्त्र को १००० की संख्या में लिखने से मनुष्य बन्धन से छट जाता है तथा स्वामी से मित्रता स्थापित हो जाती हैं।

८	१	६
३	५	७
४	९	२

(२) हरताल तथा मैनसिल को पीस कर बेलपत्र के रस में घोल कर, बेल की कलम द्वारा एकान्त तथा शुभस्थान वाली पृथ्वी पर २००० की संख्या में इस यन्त्र को लिखने से मनुष्य की मनोभिलाषाओं की पूर्ति होती है।

८	३	४
१	५	९
६	७	२

९७

53

२	९	४
७	५	३
६	१	८

९०

(३) अपामार्ग (अजाधारा या ओंगा) के स्वरस से इस यन्त्र को भोज-

२	७	६
९	५	१
४	३	८

99

६	७	२
१	५	९
८	३	४

100

६	१	८
७	५	३
२	९	४

पत्र पर लिखकर इकतरा तिजारी, चौथैया आदि ज्वर, रोगी के गले में बाँध देने से ज्वर की पारी आना रुक जाता है।

(४) शतावर के पत्तों पर इस यन्त्र को केशर द्वारा १००० की संख्या में लिखने से सन्तान प्राप्त होती है।

(५) बरगद के पत्तों पर १००० की संख्या में इस यन्त्र को लिखने से भाग्य-वृद्धि होती है।

(६) कमल के पत्तों पर इस यन्त्र को १००० की सख्या में लिखने से धन प्राप्त होता है।

(७) कांसी के पात्र पर इस यन्त्र को १००० की संख्या में लिखने से काम तथा अर्थ की प्राप्ति होती है।

(८) केले के पत्ते पर इस यन्त्र को १०० की संख्या में लिखने से भोजन की प्राप्ति होती है।

(९) भांगरे के रस से भोजपत्र पर इस यन्त्र को लिख कर भुजा तथा हृदय पर धारण करने से शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त होती है

(१०) कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के दिन बरगद की कलम से इस यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर १००० की संख्या में लिखने से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष—इन चारों पदार्थों की प्राप्ति होती है।

(११) पीपल की कलम द्वारा इस यन्त्र को पृथ्वी पर १००० की संख्या में लिखने से दरिद्रता का नाश होता है।

(१२) गोमूत्र, मैनसिल, तगर, कपूर और गोरोचन की स्याही बनाकर पीपल आदि की जड़ की कलम से भोजपत्र के ऊपर इस यन्त्र को १००० की संख्या में लिखने में मनवांछित फल की प्राप्ति होती है।

(१३) आक के पत्तों पर, आक के पत्तों के रस द्वारा ही इस यन्त्र को १०८ की संख्या में लिख कर कीकर के वृक्ष में बांध देने से इन्द्र जैसे प्रबल-शत्रु को भी ज्वर तथा देहशूल का शिकार बनना पड़ जाता है।

(१४) हल्दी को पानी में घिस कर, उसके द्वारा पत्थर के ऊपर इस यन्त्र को १०८ की संख्या में लिख कर, उस पत्थर को शत्रु की चौखट के नीचे गाढ़ देने से उसकी भाई, पुत्र, सम्बन्धी आदि से शत्रुता हो जाती है।

(१५) इस यन्त्र को भोजपत्र के टुकड़ों पर केशर से सवा लाख की संख्या में लिख कर, उन यन्त्र लिखे टुकड़ों को आटे की गोलियों में बन्द करके, मछलियों को खिला दें। मछलियों को गोलियाँ डालते समय निम्न-लिखित मन्त्र का उच्चारण करते रहना चाहिए—

'ॐ ह्रीं क्लीं पारस्वपक्ष्या नवनागकुल सेवनाय स्वाहा।'

उक्त प्रयोग से सब प्रकार की मनोभिलाषायें पूर्ण होती हैं।

विशेष—सब कार्यों की सिद्धि के लिए इस यन्त्र को चमेली की कलम से, आकर्षण के लिए जामुन की कलम से, स्तम्भन के लिए बरगद की कलम से, वशीकरण के लिए कुश की कलम से तथा शुभकार्यों के लिए सोने अथवा चांदी की कलम से लिखना चाहिए।

यन्त्र को लिखने के लिए स्याही के रूप में चन्दन, अगर, कपूर, कस्तूरी तथा केशर का प्रयोग करना चाहिए।

टिप्पणी—वशीकरण, मोहन, देवी-देवता साधन आदि के हेतु प्रभावकारी यन्त्रों का लाभ प्राप्त करने के लिए हमारी अन्य पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए।

— ० —

3

मन्त्र-सिद्धि

मन्त्र-सिद्धि के लिए प्रारम्भिक ज्ञातव्य विषयों का वर्णन पहले प्रकरण में किया जा चुका है। इस प्रकरण में षट्कर्मों से सम्बन्धित तथा विभिन्न मनोभिलाषाओं की पूर्ति करने वाले मन्त्र और उनके प्रयोगों का वर्णन किया जा रहा है। तान्त्रिक-साधन विधि में वर्णित नियमों के आकार पर ही इन मन्त्रों का साधन करना चाहिए।

सर्वजन वशीकरण यन्त्र

"ॐ सर्व लोक वशंकराय कुरु-कुरु स्वाहा।"

उक्त मन्त्र १०८ बार जपने से मन्त्र द्वारा ही सिद्ध हो जाता है। इस मन्त्र द्वारा अभियन्त्रित प्रयोगों द्वारा सब लोगों को वश में किया जा सकता है।

सभी प्रयोगों को अभिमन्त्रित करने की विधि यह है कि प्रयोग में आने वाली सब वस्तुओं को इकट्ठा कर, उन पर उक्त मन्त्र को १०८ बार पढ़ कर फूंक मार दें फिर उनका बताए अनुसार प्रयोग करें।

प्रयोग—इस मन्त्र की प्रयोग विधियाँ निम्नलिखित हैं—

(१) गोरोचन, प्रियंगु, पद्मपत्र तथा लाल चन्दन—इन वस्तुओं को इकट्ठा करके पीस लें। फिर वस्तुओं के मिश्रण को उक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित कर, अपने मस्तक पर तिलक लगायें। इस प्रकार का तिलक लगा कर साधक जिस साध्य-व्यक्ति के सामने पहुँचेगा, वह उसे देखते ही वशीभूत हो जाएगा।

(२) कुंकुम, नागरमोथा, कूठ, हरताल और मैनसिल—इन सबको एकत्र कर, अपनी अनामिका उँगली के रक्त में पीस कर, उस मिश्रण को पूर्वोक्त मन्त्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके, अपने मस्तक पर तिलक

लगायें। ऐसे तिलकधारी व्यक्ति को जो भी देखेगा, वही उसके वशीभूत हो जाएगा।

(३) पान तथा तुलसी के पत्तों को कपिला गाय के दूध पीस कर, उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके, अपने मस्तक पर तिलक लगाने से, देखने वाले सभी लोग वशीभूत हो जाते हैं।

(४) ब्रह्मदण्डी, वच और कूठ को समभाग लेकर चूर्ण करे। उस चूर्ण को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभियन्त्रित करें। तत्पश्चात् उस अभिमन्त्रित चूर्ण का पान में रख कर जिस साध्य-व्यक्ति को खिलाया जायगा, वही उसके वशीभूत हो जायगा।

टिप्पणी—स्त्री, पुरुष, स्वामी, भृत्य, अधिकारी, राजा, वेश्या आदि को वश में करने वाले वशीकरण तथा आकर्षण सम्बन्धी मन्त्र, यन्त्र एवं तन्त्रों की विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए हमारी लिखी पुस्तक "वशीकरण, मोहिनी विद्या एवं शक्ति चक्र के प्रयोग" का अध्ययन करें।

सर्वजन मोहन मन्त्र

"ॐ नमो भगवते कामदेवाय, यस्य यस्य दृश्यो भवामि यश्च यश्च मम मुखं पश्यति तं तं मोहयतु स्वाहा।"

यह मन्त्र १००८ की संख्या में जपने से सिद्ध होता है।

प्रयोग—इस मन्त्र के प्रयोग निम्नलिखित हैं—

(१) असगन्ध, हरताल तथा गोरोचन को केले के रस में पीस कर, उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमंत्रित कर, मस्तक पर तिलक लगाने से देखने वाले सभी व्यक्ति मोहित हो जाते हैं।

(२) सफेद दूब को हरताल के साथ पीस कर, उक्त मंत्र से १०८ बार अभिमंत्रित कर तिलक लगाने से भी देखने वाले सब लोग मोहित हो जाते हैं।

सर्वजन आकर्षण मन्त्र

"ॐ नमो आदिरूपाय अमुकं आकर्षण कुरु कुरु स्वाहा।"

यह मन्त्र एक लाख की संख्या में जपने पर सिद्ध होता है। इस मन्त्र में

जहाँ 'अमुकं' शब्द का प्रयोग हुआ है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

प्रयोग—इस मंत्र की प्रयोग-विधियाँ निम्नलिखित हैं—

(१) अपने दायें हाथ की अनामिका उँगली के रक्त द्वारा उक्त मन्त्र को भोजपत्र पर लिखें। जिस व्यक्ति को आकर्षित करना हो, उसका नाम बीच में लिखना चाहिए। फिर, उस मन्त्र लिखे भोजपत्र को शहद में डाल दें। इस प्रयोग से साध्य-व्यक्ति आकर्षित हो कर साधक के पास स्वयं चला आता है।

(२) काले धतूरे के पत्तों के रस में गोरोचन मिला कर, सफेद कनेर की जड़ की कलम से, भोजपत्र के लिए उक्त मन्त्र को लिखकर, उसे खैर (कत्थे) के अंगारों की अग्नि में तपायें। इस क्रिया से सौ योजन दूर रहने वाला व्यक्ति भी आकर्षित होकर साधक के समीप चला आता है।

स्त्री-आकर्षण मन्त्र

"ॐ ह्रीं ह्रूं अमुकीं आकर्षय स्वाहा।"

यह मन्त्र एक लाख की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है। इस मन्त्र में जहाँ 'अमुकीं' शब्द का प्रयोग हुआ है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

प्रयोग—इस मन्त्र की प्रयोग-विधि निम्नलिखित है—

जिस स्त्री को आकर्षित करना हो, उसके बायें पाँव के नीचे की मिट्टी अथवा धूलि को सन्ध्या के समय उठाकर घर ले आयें तथा उसे अपने सामने रख कर चार लाख की संख्या में उक्त मन्त्र का जप करें। मन्त्र में जहाँ 'अमुकीं' शब्द आया है, वहाँ उस स्त्री के नाम का उच्चारण करें। इस क्रिया से साध्य-स्त्री आकर्षित होकर साधक के समीप चली आती है।

विद्वेषण मन्त्र

"ॐ नमो नारायणाय अमुकस्यामुकेन सह विद्वेषं कुरु कुरु स्वाहा।"

उक्त मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। मन्त्र में जिस स्थान पर 'अमुकस्यामुकेन सह' शब्द का प्रयोग हुआ है, वहाँ जिन दो व्यक्तियों में विद्वेष कराना हो, उनके नामों का उच्चारण करना चाहिए।

बाद में, हर बार प्रयोग में लाने से पूर्व इस मन्त्र का १०८ बार जप करना आवश्यक है।

प्रयोग—इस मन्त्र के प्रयोग निम्नलिखित हैं—

(१) एक हाथ में कौए के पंख तथा दूसरे हाथ में उल्लू के पङ्ख लेकर, उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए, दोनों पङ्खों के अग्रभाग को परस्पर मिला कर काले डोरे से बाँध दें। फिर, उन दोनों बँधे हुए पङ्खों को हाथ में लेकर, पानी में तर्पण करें। एक सप्ताह तक निरन्तर इसी प्रकार तर्पण करते हुए प्रतिदिन १०८ बार मन्त्र का जप करें। फिर, हाथी और सिंह के बाल लाकर, जिन दो मनुष्यों से विद्वेष उत्पन्न कराना हो, उनके दो पुतले बनाकर, उक्त बालों के साथ किसी स्थान में गाढ़ दें। फिर, उस स्थान के ऊपर अग्नि रख कर, मालती के फूलों से हवन करें। इस क्रिया द्वारा दोनों साध्य-व्यक्तियों के बीच विद्वेष हो जायगा।

(२) भैंस और घोड़े के बाल मिलाकर, उन्हें उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमंत्रित कर, जिस सभा में धूप दी जायगी। वहाँ, उपस्थित सभी लोगों में परस्पर विद्वेष हो जायगा।

(३) जिन दो व्यक्तियों में जीवन भर के लिए विद्वेष कराना हो, उन दोनों के पाँव के नीचे की मिट्टी लाकर उनसे दो अलग-अलग पुतलियाँ बनायें। फिर, उन पुतलियों को फिर श्मशान में ले जाकर गाढ़ दें। इस क्रिया से उन दोनों में जीवन भर विद्वेष बना रहेगा।

उच्चाटन यन्त्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय दंष्ट्राकरालाय अमुकं पुत्रबांधवै सह हन हन दह दह पच पच शीघ्रमुच्चाट्योच्चाटय हुं फट् स्वाहा ठः ठः।"

यह मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। इस मन्त्र में जहाँ 'अमुकं' शब्द आया है, वहाँ जिस व्यक्ति का उच्चाटन करना हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए।

प्रयोग—इस यन्त्र के प्रयोग निम्नलिखित हैं—

(१) उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए कौए तथा उल्लू के पंखों का १०८ बार हवन करने से साध्य-व्यक्ति का उच्चाटन होता है।

(२) मंगलवार के दिन उल्लू के पंख को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमंत्रित करके, जिसके घर में गाड़ दिया जायगा, उसका उच्चाटन होगा।

मनुष्य के शरीर की हड्डी ४ अंगुल लम्बे टुकड़े को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमंत्रित कर, जिस व्यक्ति के दरवाजे पर गाड़ दिया जायगा, उसका उच्चाटन होगा।

(४) सफेद सरसों, शिवजी पर चढ़ाई हुई माला तथा जल—इन तीनों को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमंत्रित कर, जिस व्यक्ति के घर में गाड़ दिया जायगा, उसका उच्चाटन होगा।

मारण यन्त्र

"ॐ चाण्डालिनि कामाख्या वासिनि वन दुर्गेक्लीं क्लीं ठः स्वाहा।"

उक्त मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है।

प्रयोग—इस मन्त्र की प्रयोग विधि निम्नलिखित है—

मंगलवार अथवा शनिवार के दिन गोरोचन तथा कुंकुम द्वारा भोजपत्र पर निम्नलिखित मन्त्र लिखें—

"स्वाहा मारय हुं अमुकं ह्री फट्॥"

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकं' शब्द आया है, वहाँ साध्य व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

उक्त लिखित मन्त्र को पूर्वोक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर, अपने कण्ठ में धारण करने से साध्य-शत्रु की मृत्यु हो जाती है।

मारण कवच

सर्वप्रथम नीचे लिखे मन्त्र पढ़कर हाथ में जल लेकर विनियोग करना चाहिए—

"ॐ अस्य श्री कालिका कवचस्या भैरव ऋषिर्गायत्रीछन्दः श्री काली देवता सद्यः शत्रुहननार्थे विनियोगः।"

विनियोग के पश्चात् निम्नलिखित स्वरूप में काली देवी का ध्यान करना चाहिए।

"भगवती "काली देवी श्यामवर्णा, तीन नेत्र, चार भुजा एवं चन्द्रमा के समान कान्तियुक्ति मुख वाली है। उनकी जिह्वा बाहर की ओर निकली

हुई है। उनके शरीर का रंग नील-कमल के समान श्याम है। वे शत्रुओं का नाश करने वाली है। से अपने चारों हाथों में क्रमशः नरमुण्ड, खड्ग, खप्पर तथा कमलपुष्प धारण किये हैं और लाल वस्त्र पहने हैं। वे भयंकर दाढ़ों वाली, बड़े जोर वे हँसने वाली तथा नग्न शरीर वाली हैं। ये अपने कण्ठ में नरमुण्डों की माला धारण किए हुए शव के ऊपर बैठी है।"

उक्त प्रकार से भगवती महा काली का ध्यान करने के उपरान्त निम्नलिखित कवच का पाठ करना चाहिए—

"ॐ कालिका घोररूपाढ्या सर्वकामप्रदाशुभ।
सर्व देवस्तुता देवी शत्रु नाशं करोतु मे॥
ह्रीं ह्रीं स्वरूपिणी चैव ह्रीं ह्रीं एं हं गिनी तथा।
ह्रीं ह्रीं क्षं क्षौ स्वरूपा सा सर्वदा शत्रु नाशिनी॥
श्रीं ह्रीं रूपिणी देवी भवबन्ध विमोचनी।
यथा शुम्भो हतो दैत्यो निशुम्भश्च महासुरः॥
वैरिन नाशाय वन्दे तां कालिकां शंकरप्रियाम्।
ब्राह्मी शैवी वैष्णवी च वाराही नारसिंहिका॥
कौमारी श्रीश्च चामुण्डा खादयन्तु मम द्विषान्।
सुरेश्वरी घोरूपा चण्डमुण्ड विनाशिनी॥
मुण्डमालावृताङ्गी च सर्वतः पातु मां सदा।
ह्रीं ह्रीं ह्रीं कालिके घोरदंष्ट्रे रुधिर प्रिये॥"

उक्त कवच का पाठ करने के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र की जप करना चाहिए—

"ॐ रुधिरपूर्ण वक्त्रे च रुधिरावृतस्तनी मम शत्रून् खादय खादय हिंसय हिंसय मारय मारय भिन्धि भिन्धि छिन्धि छिन्धि उच्चाटय उच्चाटय द्रावय द्रावय शोषय शोषय यातुधाती चामुण्डे ह्रीं ह्रीं वां वीं कालिकायै सर्वशत्रून् समर्पयामि स्वाहा।"

"ॐ जहि जहि कटि कटि करि करि कटु कटु मर्दय मर्दय मोहय मोहय हर हर मम रिपून् ध्वंसय ध्वंसय भक्षय भक्षय त्रोटय त्रोटय यातुधानिका चामुण्डा सर्वजनान् राजपुरषान् राजश्रियं देहि देहि नूतन नूतन धान्यं भक्षय भक्षय क्षां क्षीं क्षू क्षें क्षौं क्षः स्वाहा।"

उक्त कवच तथा मन्त्र का १००० की संख्या में पाठ करने के पश्चात् कार्य सिद्धि में सफलता प्राप्त होगी। बिना इस प्रयोग को किये सफलता नहीं मिल सकती।

मन्त्र तथा कवच के सिद्ध हो जाने पर, जलती हुई चिता से अंगार लायें। अग्नि के शान्त हो जाने पर, उस कोयले का चूर्ण करें। फिर, शत्रु के पाँव से स्पर्श हुए पानी को उस कोयले के चूर्ण में मिलाकर खूब घोट कर स्याही तैयार करें। जब स्याही बन जाय, तब लोहे की कलम द्वारा पृथ्वी के ऊपर शत्रु की एक ऐसी कुरूप मूर्ति (चित्र) बनायें, जिसका सिर उत्तर दिशा की ओर तथा पाँव दक्षिण दिशा की ओर हों। फिर, उस मूर्ति के हृदय पर अपना हाथ रखकर उक्त मन्त्र सहित कवच का पाठ करें। तत्पश्चात् प्राण, प्रतिष्ठा मन्त्र की विधि जानने वाले किसी विद्वान् द्वारा उस मूर्ति (चित्र) की प्राण-प्रतिष्ठा करायें अथवा स्वयं ही प्राण-प्रतिष्ठा के मन्त्र से उस मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठित करें। तत्पश्चात् उस मूर्ति के कण्ठ को किसी तेज धार वाले शस्त्र द्वारा एक ही बार में काट दें। तत्पश्चात् उस कटी हुई मूर्ति के सिर तथा धड़ के ऊपर जलते हुए अंगार से लेपन करें।

उक्त क्रिया के करने से शत्रु ज्वर पीड़ित होकर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

यदि उक्त मूर्ति का केवल बाँया पांव पौंछ दिया जाय तो शत्रु दरिद्र हो जाता है।

उक्त कवच तथा मन्त्र का पाठ करने मात्र से ही शत्रु का उच्चाटन होता है। वह देश छोड़ कर अन्यत्र चला जाता है तथा बाद में सदैव दास की भांति वशीभूत बना रहता है।

यदि इस कवच का पाठ किसी का अनिष्ट करने की इच्छा से न किय जाय, सामान्य रूप से वैसे ही किया जाय तो यह शत्रु का नाश करके ऐश्वर्य धन, पुत्र-पौत्रादि की वृद्धि करता है।

जो मनुष्य नित्य प्रातः सायं इस कवच का पाठ करता है, उसे समस्त सिद्धियां प्राप्त होती हैं।

आसन स्तम्भन मन्त्रा

"ॐ नमो दिगम्बराय अमुकासन स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।"

यह मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। इस मन्त्र जहाँ 'अमुक' शब्द आया है, वहां जिस व्यक्ति के आसन का स्तम्भन करनाँ हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए। जब इस मन्त्र को प्रयोग में लाना हो, तब इसका हर बार १०८ बार जप और करना चाहिए।

प्रयोग—इस मन्त्र की प्रयोग विधियां निम्नलिखित हैं—

(१) श्मशान से अग्नि लाकर, उनमें उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए नमक की आहुतियां देने से, जिस व्यक्ति के नाम पर आहुतियां दी जायेंगी, उसके आसन का स्तम्भन हो जायगा।

(२) मनुष्य की खोपड़ी में मिट्टी भरकर, उसने सफेद घुंघची के बीज बो दें तथा उस की जड़ को प्रतिदिन दूध से सींचते रहें, उस बीज से जो लता उत्पन्न हो, उसकों शाखा, मूल तथा लता को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके किस व्यक्ति के सामने डाल दिया जायगा, उसका आसन स्तम्भित हो जायगा, अर्थात् वह व्यक्ति वहां से उठकर किसी अन्य स्थान पर नहीं जा सकेगा।

अग्नि स्तम्भन मन्त्रा

"ॐ नमो अग्नि रूपाय मम शरीरे स्तम्भनं कुर कुर स्वाहा।"

उक्त मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता है। हर बार प्रयोग करने से पूर्व इसका १०८ बार जप अवश्य कर लेना चाहिए।

प्रयोग—इस मन्त्र की प्रयोग-विधियां निम्नलिखित हैं—

(१) मेढ़क की चरबी को ग्वारपाठे के रस में मथ कर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, शरीर पर लेप करने से शरीर अग्नि से नहीं जलता।

(२) ग्वारपाठे के रस को उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, किसी भी वस्तु पर लेप कर देने से वह वस्तु अग्नि में नहीं जलती।

जल स्तम्भन मंत्र

"ॐ नमो भगवते रुद्राय जल स्तम्भय स्तम्भय ठ : ठः ठः।"

यह मन्त्र १००००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है।

प्रयोग—इस मन्त्र की प्रयोग-विधि निम्नानुसार है—

पद्माक को भली भांति पीस कर, उक्त द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित कर, उसे किसी कुएं, बावड़ी अथवा तालाब आदि में डाल देने से उसके पानी का स्तम्भन हो जाता है।

शस्त्र स्तम्भन मंत्र

"ॐ नमो अघोररूपाय शस्त्र स्तम्भन कुरु कुरु स्वाहा।"

यह मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है।

प्रयोग—इस मन्त्र की प्रयोग-विधि निम्नानुसार है—

पुष्य नक्षत्र वाले रविवार के दिन खर मंजरी की जड़ लाकर पीस लें। उसे उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमंत्रित कर सम्पूर्ण शरीर पर लेप करने में शरीर पर शस्त्र का आघात नहीं लगता और शस्त्र स्तम्भित हो जाता है।

बुद्धि स्तम्भन मन्त्र

"ॐ नमो भगवते शत्रूणां बुद्धि स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा।"

यह मन्त्र १००००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। हर बार प्रयोग करने से पूर्व इस मन्त्र का १०८ बार जप और करना चाहिए। प्रयोग के समय मन्त्र में जहां 'शत्रुणां शब्द आया है, वहां साध्य-शत्रु के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

प्रयोग—इस मन्त्र की प्रयोग-विधियां निम्नलिखित हैं—

ज्वर नाशन मन्त्र

"ॐ शान्ते शान्ते सर्वारिष्ट नाशिनी स्वाहा।"

यह मन्त्र १००८ की संख्या में जपने से सिद्ध होता है।

प्रयोग—इस मन्त्र का १०८ बार जप करके अभिमन्त्रित जल ज्वर-रोगी को पिला देने से उसका ज्वर दूर हो जाता है।

भूतज्वर नाशन मन्त्र

"ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय कुड्डनी कुर्बली स्वाहा॥"

यह मन्त्र १००८ की संख्या में जपने से सिद्ध होता है।

प्रयोग— इस मन्त्र द्वारा १०८ बार झाड़ा देने से भूत ज्वर उतर जाता है।

भूत नाशन मन्त्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय: कोशेश्वराय नमो ज्योतिः पतंगाय नमो नमः सिद्धि रूप रुद्राय ज्ञपति स्वाहा ॥"

यह मन्त्र १०००८ की संख्या में जपने से सिद्ध होता है।

प्रयोग—आवश्यकता के समय इस मन्त्र का यथाशक्ति जप करने से भूत-बाधा दूर होती है।

ग्रह-पीड़ा नाशक मन्त्र

"ॐ नमो भास्कराय अमुकस्य सर्वग्रहाणां पीड़ानाशनं कुरु कुरु स्वाहा।"

यह मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। मन्त्र में जहां 'अमुक' शब्द आया वहाँ साध्य-व्यक्ति के है नाम का उच्चारण करना चाहिए।

प्रयोग—इस मन्त्र की प्रयोग-विधि निम्नानुसार है—

एक हांडी में मदार की जड़, धतूरे और उपामार्ग का दूध, बरगद तथा पीपल की जड़, शमी, आम और गूलर के पत्ते, घी, दूध, चावल, चना, मूंग, गेहूं, तिल, शहद तथा मट्ठा भरकर, घड़े को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमंत्रित करके, शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष की जड़ में गाड़ देना चाहिए। इससे साध्य व्यक्ति की ग्रह-पीड़ा नष्ट हो जाती है तथा उसे फिर कभी जीवन भर ग्रह पीड़ा नहीं होती।

यह प्रयोग दरिद्रता एवं पापों को भी नष्ट करने वाला है।

सुख-प्रसव मन्त्र

"ॐ मुक्ता पाशा विपाशाश्च मुक्ता सूर्येण रश्मयः। मुक्तः सर्वभयाद्गर्भं एह्येहि मारीच मारीच स्वाहा।"

यह मन्त्र १००८ बार जपने से सिद्ध होता है।

प्रयोग—इस मन्त्र की प्रयोग-विधि नीचे लिखे अनुसार है—

आवश्यकता के समय इस मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित जल गर्भिणी स्त्री को पिलाने से उसे सुखपूर्वक प्रसव होता है।

विजय-प्रदाता मन्त्र

"ॐ नमो विश्वरूपाय अमुकस्य अमुकेन विजयं कुरु कुरु स्वाहा ।"

यह मन्त्र १००८ बार जपने से सिद्ध हो जाता है ।

प्रयोग—इस मन्त्र की प्रयोग-विधियां निम्नलिखित हैं—

(१) उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित सुदर्शन की जड़ को हाथ में बांधने वाला व्यक्ति युद्धभूमि में विजय प्राप्त करता है ।

(२) अगहन की पूर्णिमा को चीते (चित्रक) की जड़ को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर, जो व्यक्ति अपनी दाईं भुजा पर बांधता है अथवा मस्तक पर धारण करता है, उसे विवाद (मुकद्दमे) में विजय प्राप्त होती है।

टिप्पणी—प्रयोग करते समय मन्त्र में जिस स्थान पर 'अमुकस्य अमुकेन, शब्द आया है, वहाँ जिसको जिसपर विजय प्राप्त करानी हो, उन दोनों के नाम का उच्चारण करना चाहिए ।

पादुका-साधन मंत्र

"ॐ नमो भगवते रुद्राय नमो ब्राह्मणो नमः सूर्याय नमश्चन्द्राय शंखनेम-गदाधराय हिलि हिलि स्वाहा ।"

यह मन्त्र ३००००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है ।

प्रयोग—इस मन्त्र की प्रयोग विधि निम्नानुसार है—

वीर बहूटी, सिन्दूर, कुंकम, बैंत की लता, बकरे का मांस तथा रास्ना इन सब पदार्थों को उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमंत्रित कर बकरी के दूध में पीस कर पांवों में लेप करने वाला मनुष्य दस हजार योजन तक की पैदल यात्रा बिना किसी कष्ट के कर सकता है ।

अदृश्यकरण मंत्र

"ॐ फट् काली काली महाकाली मांस शोणित भोजनरसुखे देवी ममेय-सितिमानर्षाती मानशोति ।"

यह मन्त्र १००००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है ।

प्रयोग—इस मन्त्र की प्रयोग-विधि निम्नलिखित है—

हरड़ तथा वच को पीसकर गोली बनायें । उस गोली को इस मन्त्र द्वारा

१०८ बार अभिमंत्रित करके त्रिलोह के ताबीज में भरकर मुँह में धारण करने वाला व्यक्ति किसी को दिखाई नहीं देता, परन्तु वह सबको देखता रहता है।

स्त्री-द्रावण मंत्र

"ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय। द्रवं द्रवं स्त्रीस्भं पातय स्वाहा ठः ठः ॥

यस मन्त्र १०००० की संख्या में जपने से सिद्ध होता है।

प्रयोग—इस मन्त्र की प्रयोग-विधि निम्नलिखित है—

गोरोचन को पानी में पीसकर उक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमंत्रित करके जो पुरुष अपने हाथ के ऊपर लेपन करेगा, तो उसके स्पर्श मात्र से ही स्त्री द्रवित हो जायेगी।

कर्णपिशाचिनी वार्तालि मंत्र प्रयोग

"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नं ठं ठं नमो देवपुत्रि स्वर्गनिवासिनि सर्वनरनारीमुख वार्तालि वार्ता कथय सप्त समुद्रान्दर्शय दर्शय ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नीं ठं ठं हुं फट् स्वाहा।"

दो सेही के काँटे तथा एक जंगली शूकर का दाँत लेकर उसके ऊपर एक लाख बत्तीस हजार की संख्या में उक्त मन्त्र का जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। तत्पश्चात् नित्य प्रति इस मन्त्र का १००८ की संख्या में जप करते रहना चाहिए।

इस मन्त्र के प्रभाव से कर्णपिशाचिनीदेवी प्रसन्न होकर, साधक के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर उसे कान में बताती रहती है।

इस मन्त्र के प्रभाव से साधक को भूत, भविष्य तथा वर्तमान—तीनों काल की वार्ता एवं प्रश्नों का उत्तर उसे अपने कान में ही मिल जाता है।

इस मन्त्र के साधक को रोली का तिलक नहीं लगाना चाहिए।

तन्त्र-सिद्धि

यन्त्र तथा मन्त्रों का उल्लेख करने के बाद अब हम विभिन्न प्रकार के रोग-नाशक तथा अन्य शास्त्रोक्त एवं लोक प्रचलित तान्त्रिक विधियों का वर्णन करते हैं, जिनके लिए किसी प्रकार के मन्त्र-जप अथवा अन्य साधन आदि की आवश्यकता नहीं होती।

विभिन्न रोग-नाशक तन्त्र, योग तथा टोटके

औषधियों के प्रयोग द्वारा विभिन्न रोगों की चिकित्सा करने की प्रथा सर्वप्रचलित है, परन्तु हमारे देश में बहुत प्राचीन काल से ही अनेक रोगों को दूर करने के लिए विभिन्न प्रकार के टोटकों का प्रयोग भी किया जाता रहा है। वर्तमान समय में भी ऐसे टोटके देश के विभिन्न भागों में प्रचलित हैं। इनमें विभिन्न औषधियों का उपयोग तो होता है, परन्तु उन्हें औषध की भाँति मुख-मार्ग द्वारा शरीर के भीतर न पहुँचा कर, बाह्य रूप में शरीर के विभिन्न अंगों पर बाँधने, स्पर्श करने अथवा देखने मात्र से ही रोग से मुक्ति मिल जाती है। अतः इन टोटकों के प्रयोग के कारण किसी भी प्रकार की हानि होने की संभावना नहीं रहती। ऐसे रोग-नाशक तन्त्र निम्नलिखित हैं—

ज्वर-नाशक न्त्र

(१) मकड़ी के जाले को रोगी के गले में लटकाने मात्र से ज्वर दूर हो जाता है।

(२) मूसाकानी की जड़ को रोगी के हाथ में बाँध देने से ज्वर दूर हो जाता है।

(३) रविवार के दिन ज्वर-रोगी के हाथ से, सूर्योदय होने से कुछ देर पहले ही मूँज के पौधे में गिरह (गाँठ) दिलवाने से ज्वर दूर हो जाता है।

महाज्वर-नाशक तन्त्र

(१) नारियल की जड़ (लांगली मूल) को रोगी के गले में बाँध देने से महा-ज्वर दूर हो जाता है।

(२) कटेरी (वृहस्पति मूल) की जड़ को रोगी के मस्तक पर बाँध देने से महाज्वर दूर हो जाता है।

शीत-ज्वर नाशक तन्त्र

(१) एक मक्खी, थोड़ी-सी हींग एवं आधी गोल मिर्च—इन सबको पीसकर रोगी की आँख में अंजन की भाँति आँज देने से शीत ज्वर दूर हो जाता है।

(२) सफेद कनर की जड़ को रोगी की दाईं भुजा में बाँध देने से शीत ज्वर दूर हो जाता है।

(३) मगलवार अथवा रविवार के दिन ७ नग लहसुन को पीसकर, काले कपड़े में रखकर, रोगी के पाँव के अंगूठे से बाँध दें। तीन घन्टे का समय बीत जाने पर, उस कपड़े को खोलकर किसी चौराहे पर पटक दें। इससे शीत स्वर की पारी रुक सकती है।

(४) शनिवार के दिन बबूरा की जड़ को सफेद सूत में लपेट कर रोगी की भुजा में बाँध देने से शीत ज्वर दूर हो जाता है, जब ज्वर दूर हो जाय तब जड़ी को खोलकर, चौराहे पर फेंकना चाहिए।

(५) आठ पाँव वाले एक मकड़े के जाले को लाल वस्त्र में लपेट कर बत्ती बनायें। फिर मिट्टी के दीपक में सरसों का तेल भरकर, उसमें उक्त बत्ती को डालकर जलायें तथा काजल पारें। उस काजल को रविवार अथवा मंगलवार के दिन रोगी की दोनों आँखों में सात-सात बार लगाने (आँजने) से शीत ज्वर तथा पारी का ज्वर दूर हो जाता है।

विषम-ज्वर नाशक तन्त्र

(१) रविवार के दिन चिरचिरा (अपामार्ग या ओंगा) की जड़ को उखाड़ लायें। फिर उसे सूत के डोरे में लपेट कर, पुरुष-रोगी की दाईं तथा स्त्री-रोगी की बाईं भुजा में बाँध दें। इससे विषम-ज्वर दूर हो जायगा।

(२) सफेद कनेर का जड़ को रविवार के दिन उखाड़ कर, रोगी के दायें कान अथवा भुजा में बाँध देने से विषम-ज्वर दूर हो जाता है।

(३) चौलाई की जड़ को रोगी के सिर पर बाँध देने से विषम-ज्वर दूर हो जाता है।

मलेरिया तथा पारी-ज्वर नाशक तंत्र

(१) शनिवार के दिन मयूर शिखा (मोरपंखी) के पौध के न्यौत आये तथा रविवार के दिन प्रातःकाल उसे उखाड़ ला कर, लाल डोरे में लपेट कर रोगी के हाथ तथा कमर में बाँध देने से इकतरा (एक दिन छोड़कर आने वाला) ज्वर दूर हो जाता है।

(२) रविवार अथवा मंगलवार के दिन मलेरिया ज्वर का रोगी स्वयं किसी ताड़ वृक्ष से अपनी छाती को सटाकर इस प्रकार कहे—"जब मेरा ज्वन दूर हो जायगा, तब मैं मछली चढ़ाऊँगा।" यह कह कर घर लौट आये। तत्पश्चात् जब ज्वर दूर हो जाय, तब एक लकड़ी में दो मछलियाँ बाँध कर अगले रविवार अथवा मंगलवार के दिन उन्हें उसी ताड़ वृक्ष की जड़ में रख आये। इससे मलेरिया ज्वर दूर हो जाता है।

(३) उल्लू का पंख तथा स्याह गूगल—इन दोनों को कपड़े में लपेट कर बत्ती बनायें। फिर उसे शुद्ध घी के दीपक में डालकर जलायें और काजल पारें। इस काजल को आँखों में आँजने से चौथया तथा अन्य अनेक प्रकार के ज्वर दूर हो जाते हैं।

(४) शनिवार के दिन, जिस जगह मछली पक रही हो, वहाँ पहुँचकर, अपने सम्पूर्ण शरीर को कपड़े से ढाँपकर, पकती हुई मछली की भाप (बफारा) लेने से पारी के ज्वर का रोगी शीघ्र स्वस्थ हो जाता है।

(५) मगलवार के दिन एक छिपकली की पूँछ काटकर, उसे काले कपड़े में लपेट कर रोगी-व्यक्ति की भुजा में बाँध देने से मलेरिया तथा पारी का ज्वर दूर हो जाते हैं।

(६) रविवार के दिन किसी गिरगिट की पूँछ काटकर, उसे रोगी की भुजा अथवा चोटी में बाँध देने से चौथया ज्वर शीघ्र दूर हो जाता है।

(७) मंगलवार अथवा रविवार के दिन रोगी के सम्पूर्ण शरीर से पाठा मछली का स्पर्श कराके, उसे किसी चौराहे पर फेंक देने से पारी का ज्वर शीघ्र दूर हो जाता है।

(८) शनिवार के दिन सन्ध्या समय छोटी दुद्धी के पौधे की जड़ में थोड़े से हल्दी द्वारा रंगे हुए पीले चावलों को रखकर उसे न्यौत आये तथा दूसरे

दिन अर्थात् रविवार को सूर्योदय से पहले ही, फिर उसी जगह जाकर, नंगा होकर, पहले उस पौधे को गूगल की धूनी दें, तत्पश्चात् उसकी जड़ को उखाड़ कर घर ले आये। उस जड़ को रोगी पुरुष की दाईं भुजा में तथा रोगी-स्त्री की बाईं भुजा में बाँध देने से तिजारी ज्वर दूर हो जाता है।

(९) रोगी के सिर से पाँव तक की लम्बाई का एक लाल डोरा लेकर, उसमें 'नील' के पौधे की जड़ को लपेट लें। फिर उस डोरे को तिजारी ज्वर वाले रोगी की कमर अथवा कान में बाँध दें तो इस तन्त्र से पारी का ज्वर आना बन्द हो जायगा।

(१०) भाँगरे की जड़ को सूत में लपेट कर रोगी के सिर में बाँधने के से चौथया ज्वर आना बन्द हो जाता है।

(११) सर्प की केंचुल को रोगी की कमर में बाँध देने से तिजारी ज्वर की पारी आना बन्द हो जाता है।

(१२) शनिवार के दिन किसी सूखे हुए ताड़ वृक्ष की जड़ की मिट्टी लगाकर दूसरे दिन प्रातःकाल अथवा सन्ध्या समय उसे चन्दन की भाँति घिसकर मस्तक में लगाने से तीव्र इकतरा ज्वर भी दूर हो जाता है।

(१३) रविवार के दिन सफेद धतूरे की जड़ को उखाड़ कर, उसे पुरुष रोगी की दाईं तथा स्त्री-रोगी की बाईं भुजा में बाँध देने से पारी का ज्वर एक ही दिन में दूर हो जाता है।

(१४) कुत्ते के मूत्र में मिट्टी की गोली बनाकर धूप में सुखा लें। फिर उस गोली को रोगी के गले में बाँध दें। इससे पारी का ज्वर दूर हो जाता है। फिर नहीं आता।

(१५) रविवार के दिन प्रातःकाल निर्गुण्डी तथा सहदेई की जड़ को उखाड़ कर ले आयें। फिर उन्हें रोगी की कमर में बाँध दें। इससे हर प्रकार का पारी का ज्वर दूर हो जाता है। अन्य ज्वरों पर भी यह तन्त्र लाभकारी है।

(१६) रविवार के दिन सन्ध्या समय मिट्टी के घड़े में पानी भर कर, उसमें एक सोने की अंगूठी डाल दें। एक घण्टे बाद मलेरिया अथवा पारी के ज्वर के रोगी को किसी चौराहे पर ले जाकर पूर्वोक्त घड़े के पानी से स्नान

करायें। जब रोगी स्नान कर चुके तब अंगूठी को घड़े से बाहर निकाल लें। इस तन्त्र से पारी का ज्वर शीघ्र दूर हो जाता है।

(१७) रविवार के दिन आक की जड़ को उखाड़ लाकर रोगी के कान में बाँध देने से सब प्रकार के ज्वर दूर होते हैं।

रात्रि-ज्वर तथा जीर्णज्वर नाशक तन्त्र

(१) भाँगरे की जड़ में डोरा लपेट कर उसे रोगी के कान में बाँधने से रात्रि में आने वाला ज्वर दूर हो जाता है।

(२) मकोय की जड़ को रोगी के कान में बाँधने से रात्रि में आने वाला ज्वर दूर हो जाता है।

(३) रोगी के शरीर में बकरी के रक्त का प्रवेश करा देने से जीर्ण ज्वर दूर हो जाता है।

भूत-ज्वर तथा सन्निपात ज्वर नाशक तन्त्र

(१) हुलहुल की जड़ को रोगी के कान में डालने से भूत-ज्वर शीघ्र उतर जाता है।

(२) लाल पलाश की जड़ को रोगी की भुजा में बाँध देने से भूत-प्रेतादि के ज्वर तथा अन्य प्रकार के ज्वर भी दूर हो जाते हैं।

(३) अपामार्ग (औंगा और चिरचिटा) की जड़ को रोगी की भुजा में बाँध देन से भूत-ज्वर दूर हो जाता है।

(४) तगर, बाकुची तथा नीम के अंजन को रोगी की आँखों में आँजने से भूत-ज्वर दूर हो जाता है।

(५) गुरगुल, लहसुन, घी, सर्प की केंचुल, बन्दर के बाल, मुर्गे की बीठ तथा कबूतर की बीठ—इन सबको एकत्र करके, रोगी को इनकी धूप देने से भूत-ज्वर तथा इकतरा आदि ज्वर शीघ्र दूर हो जाते हैं।

(६) अश्विनी नक्षत्र में निर्गुण्डी की छाल तथा उसके फूलों की गोली बनाकर, बकरे के रोम के साथ रोगी व्यक्ति की भुजा में बाँध देने से सन्निपात-ज्वर दूर हो जाता है।

ग्रह-भूत-बाधा नाशक तन्त्र

(१) अश्विनी नक्षत्र में घोड़े के खुर का नाखून लेकर रखलें। आवश्यकता के समय उस नाखून को अग्नि में डालकर धूनी देने से भूत-प्रेत की बाधा दूर हो जाती है।

(२) चन्दन, कूठ, वच, सैंधा नमक, घी, तेल और चर्बी को मिलाकर धूप देने से बालकों के राक्षस आदि ग्रह शान्त हो जाते हैं।

(३) सफेद अपराजिता के पत्तों के रस में पिसी हुई जावित्री डालकर नस्य लेने से डाकिनी, शाकिनी, दानव, भूत-प्रेत आदि की बाधा दूर हो जाती है।

(४) काली सरसों तथा काली मिर्च को पीसकर आँखों में अंजन करने से भूत-बाधा दूर हो जाती है।

(५) काशीफल के फूलों के रस में हल्दी को पीसकर, पत्थर के खरल में खूब घोटें। फिर उसे अंजन की भाँति आँखों में आंजने से भूत-प्रेतादि की बाधा अवश्य दूर होती है।

मृगी-रोग-नाशक तन्त्र

(१) जंगली सुअर के नाखुन को अंगूठी की भाँति तैयार करवाकर मंगलवार के दिन दाहिने हाथ की कनिष्ठिका उँगुली में पहनने से भी मृगी रोग का दौरा आना शीघ्र रुक जाता है।

(२) गाय के बायें सींग की अँगूठी बनवाकर दायें हाथ की कनिष्ठिका उँगली में पहनने से भी मृगी रोग का दौरा आना रुक जाता है।

(३) असली हींग १ तोला लेकर उसे ताबीज की तरह कपड़े में सींकर गले में पहने रहने से मृगी का दौरा आना रुक जाता है।

बवासीर-नाशक तन्त्र

(१) कार्तिक के महीने में जंगली सूरन को खोद लायें। फिर उसकी चकत्तियाँ बनाकर सुखा लें। आवश्यकता के समय उन चकत्तियों को काले डोरे में गूँथ कर कमर में धारण करें। इससे बवासीर के मस्से धीरे-धीरे सूख जाते हैं।

(२) बवासीर के मस्सों के नीचे साँप की केंचुल रखने से बवासीर का कष्ट दूर हो जाता है।

पथरी रोग नाशक तन्त्र

दायें हाथ की मध्यमा उंगली में लोहे की अंगूठी पहनने से पथरी की पीड़ा दूर हो जाती है।

तिल्ली-प्लीहा नाशक तन्त्र

(१) रविवार के दिन बाँझ ककोड़े की गाँठ लाकर तिल्ली-प्लीहा रोगी के निकट एक जलते हुए चूल्हे पर बांध दें। ज्यों-ज्यों गाँठ सूखेगी, त्यों-त्यों तिल्ली भी घटती चली जायेगी।

(२) प्याज अथवा नागफली की जड़ की माला गले में पहनने से तिल्ली और प्लीहा रोग दूर हो जाते हैं।

संग्रहणी और दस्त-नाशक तन्त्र

(१) गेहुँअन साँप की केंचुल को कपड़े की थैली में सीकर रोगी के पेढ़ू के ऊपर बाँध देने से संग्रहणी रोग दूर हो जाता है।

(२) सहदेई की जड़ के सात टुकड़े करके, उन्हें लाल डोरे में लपेटकर रोगी की कमर में बाँध देने से दस्त (अतिसार) रोग दूर हो जाता है।

वायुगोला-नाशक तन्त्र

नदी के किनारे पर नाव देखकर, उसका काँटा ले आयें। फिर उसमें घोड़े के खुर का नाल मिलवाकर एक लोहे का कड़ा तैयार करायें। उस कड़े को धूप-दीप देकर हाथ में पहनने से वायुगोला का रोग दूर हो जाता है।

उक्त कड़े को पानी में डालकर, उस पानी को पिलाने से भूत, प्रेत, डाकिनी आदि की बाधा तथा हूक का रोग भी दूर हो जाता है।

श्वास रोग-नाशक तन्त्र

स्याही सोख्ता कागज को शोरे में भिगोकर सुखा लें। तत्पश्चात् उस कागज को, जिस घर में श्वास का रोगी सोता हो, जलायें। इससे श्वास-रोग में लाभ होता है।

धरन रोग-नाशक तन्त्र

शनिवार के दिन शाम को हल्दी और चावल लेकर जंगल में जायें और वहाँ फूली हुई शंखा मूली को न्योत आये। फिर रविवार के दिन प्रातःकाल ही उस स्थान पर पुनः जाकर बूटी के पौधे की सात प्रदक्षिणा करके हाथ जोड़कर सिर झुकायें। तत्पश्चात् सूरज की ओर मुंह करके उसकी जड़ में दूध डालें। फिर उसे खोदकर घर ले आयें और जिस व्यक्ति की धरन हट गई हो, उसकी कमर में उस जड़ को बाँध दें। इस प्रयोग से धरन तुरन्त ठिकाने पर आ जाती है।

फीलपाँव-नाशक तंत्र

(१) उत्तर दिशा में उत्पन्न आक के पौधे की जड़ को रविवार के दिन उखाड़ लायें, फिर उसे लाल डोरे में लपेटकर फीलपाँव रोग वाली जगह पर बाँध दें। इससे रोग जल्दी ही ठीक हो जाता है।

(२) सोलह दाँतों वाली गाँठ पर पीली कौड़ी में छेद करके उस काले डोरे में गूँथकर, फीलपाँव रोग वाली जगह पर बाँध दें। इससे रोग की बाढ़ रुक जाती है।

हिस्टीरिया-नाशक तन्त्र

भेड़ की जूँ को कम्बल के रोगों में लपेटकर ताँबे के ताबीज में भरें और जिस स्त्री को हिस्टीरिया रोग हो, उसके गले में बाँध दें। इससे हिस्टीरिया रोग दूर हो जाता है।

यह प्रयोग बच्चों के हिस्टीरिया रोग पर भी लाभ करता है।

आधासीसी-नाशक तन्त्र

सुबह के समय दक्षिण दिशा की ओर मुँह करके, हाथ में एक गुड़ की डेली लेकर, उसे दाँत से काट कर चौराहे पर फैंक दें। उसके आधासीसी का दर्द दूर हो जाता है।

बाल-रोग नाशक तन्त्र

(१) बच्चे के गले में सीपियों की माला पहिना देने से उसके दाँत आसानी से निकल आते हैं।

(२) बच्चे के हाथ और पांव में लोहे का अथवा तांबे का कड़ा पहिना देने से उसके दांत आसानी से निकल आते हैं और उसे किसी की नज़र भी नहीं लगती है।

(३) बच्चे को यदि किसी की नजर लग जाय तो थोड़ी सी साबुन लाल मिर्चों को लेकर उसके ऊपर तीन बार उतारें। फिर उन्हें जलते हुए चूल्हे में झोंक दें। यदि किसी की नजर लगी होगी तो चूल्हे से धाँस नहीं उठेगी तथा मिर्चों के जल जाते ही नजर का दोष दूर हो जायेगा। यदि चूल्हे में से धाँस उठे तो यह समझना चाहिए कि बालक को नजर नहीं लगी है।

(४) रीठे के फल को धागे में गूँथ कर, बच्चे के गले में बांध देने से उसे नजर नहीं लगती तथा उसे यदि हिचकी का रोग हो तो वह भी दूर हो जाता है।

(५) मंगलवार अथवा रविवार के दिन कहीं से नीलकंठ पक्षी का पंख लाकर उसे जिस चारपाई पर बालक सोता हो, उसमें खोंप दें। इससे बालक का रोना बन्द हो जायगा।

(६) काले रंग के कुत्ते का एक बाल (रोंया) तथा अकरकरा का एक दाना—इन दोनों को बालक के गले में बाँध देने से उसके आमाशय के रोग तथा ज्वर दूर होकर इन्द्रियों में चैतन्यता आ जाती है।

(७) भेड़िये के दाँत को बालक के गले में बाँध देने से बाल अपस्मार रोग दूर हो जाता है।

(८) अकरकरा को सूत के डोरे में बाँध कर बालक के गले में लटका देने से बालक का मृगी रोग दूर हो जाता है।

गर्भ-पीड़ा नाशक तन्त्र

(१) क्वारी कन्या के हाथ के कते हुए सूत को गर्भवती स्त्री के सिर से पाँव तक नाप कर, उसके बराबर के २१ धागे लेकर, उनमें काले धतूरे की जड़ के टुकड़े अलग-अलग बाँधे। फिर उन सभी को इकट्ठा करके गर्भवती स्त्री की कमर में बाँध दें। इस प्रयोग से गर्भस्राव नहीं होता अर्थात् गर्भवती स्त्री का गर्भ नहीं गिरता।

(२) खरैंटी की जड़ को क्वारी कन्या के हाथ के काते हुए सूत में लपेट कर गर्भवती स्त्री की कमर में बाँध देने से गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है।

(३) कुम्हार के हाथ की लगी मिट्टी, जो चाक के ऊपरी हिस्से की हो, को बकरी के दूध में मिलाकर गर्भवती स्त्री को पिला देने से उसका गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है।

सुख-प्रसव कारक तन्त्र

(१) चकमक पत्थर को कपड़े में लपेट कर गर्भवती स्त्री की रान में बाँध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

(२) गर्भवती स्त्री के नितम्बों पर साँप की केंचुल बाँध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता हैं।

(३) सरफौंका की जड़ को गर्भवती स्त्री की कमर में बाँध देने से सुख पूर्वक प्रसव होता है।

(४) केले की जड़ को गर्भवती स्त्री की, कमर में बाँध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है। जैसे ही बालक का जन्म हो जाय तथा जेर निकल जाय, वैसे ही जड़ को खोल कर फेंक देना चाहिए।

(५) लाल कपड़े में थोड़ा सा नमक बाँध कर गर्भवतो स्त्री के बायें हाथ की ओर लटका देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

(६) बारहसिंगे के सींग को गर्भवती स्त्री के स्तन के समीप बाँध देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

गर्भ न ठहरने का तन्त्र

(१) हाथी की लीद स्त्री की योनि में रख देने से गर्भ नहीं ठहरता।

(२) जिस बालक का पहला दाँत गिरने वाला हो, उसे गिरते समय, पृथ्वी पर न गिरने देकर थ में ले लें। फिर उसे चाँदी के ताबीज में मढ़वा कर, जो स्त्री अपनी बाईं भुजा में धारण करेगी, उसे गर्भ नहीं ठहरेगा।

बाँझपन-नाशक तन्त्र

(१) श्रवण नक्षत्र में काले एरण्ड की जड़ लाकर, उसे धूप-दीप देकर बन्ध्या-स्त्री के गले में बाँध देने से बाँझपन का दोष दूर हो जाता है।

(२) सावन के महीने के कृष्णपक्ष में जब रोहिणी नक्षत्र हो, उस दिन एक घड़े को लेकर नदी-तट पर जायें। वहाँ कमर को थोड़ा-सा झुका कर, उस घड़े में नदी का पानी भर लायें। वह पानी यदि बाँझ स्त्री को पिलाया जायगा, तो उसे गर्भ ठहर जायगा।

मासिक-धर्म विकार नाशक तन्त्र

मासिक धर्म की खराबी के कारण किसी स्त्री के पेढ़ू में दर्द रहता हो, तो उसे रात के समय अपनी कमर में मूँज की रस्सी बाँध कर सो जाना चाहिए तथा सुबह उसे खोल कर किसी चौराहे पर फेंक देना चाहिए। इससे मासिक धर्म की खराबी के कारण उत्पन्न पेढ़ू का दर्द दूर हो जाता है।

मोटापा नाशक तन्त्र

रांगे की अँगूठी को दायें हाथ की बीच की उँगली (मध्यमा) में पहनने से मोटापा कम हो जाता है।

पागलपन नाशक तन्त्र

बिच्छू का डंक, कुत्ते का नाखून तथा कछुए के खून को ऊँट के चमड़े में मढ़वा कर ताबीज तैयार करें। इस ताबीज को पागल मनुष्य के गले में बाँध देने से पागलपन जल्दी दूर हो जाता है।

सर्प-बिच्छू विष नाशक तन्त्र

(१) हुलहुल की जड़ को सात पार सुंघा देने मात्र से ही बिच्छू का विष उतर जाता है।

(२) शुभ नक्षत्र में अपामार्ग (अजाझार या औंगा) की जड़ लाकर, जिस व्यक्ति को बिच्छू ने काटा हो, उसके दायें कान में बाँध देने से विष उतर जाता है।

(३) मोर के पंख को चिलम में रखकर तम्बाकू की भाँति उसका धुआँ पीने से सर्प का विष उतर जाता है।

(४) आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष में किसी भी रविवार को ईश्वरमूल की जड़ लाकर, उसे डोरे में लपेट कर हाथ में बाँधने से साँप के काटने का भय नहीं रहता।

वीर्य-स्तम्भन तन्त्र

(१) दुमुँहे साँप की हड्डी तथा काले साँप की हड्डी को कमर में बाँध कर मैथुन करने से, जब तक हड्डियों को खोलकर अलग नहीं कर दिया जायगा, तब तक वीर्य स्खलित नहीं होगा।

(२) ऊँट की हड्डी में छेद करके पलंग के सिरहान की ओर बाँध दें। फिर, उसी पलंग पर मैथुन करें तो जब तक हड्डी के हटाया नहीं जायगा, वीर्य स्खलित नहीं होगा।

(३) ऊँट के बालों की रस्सी बँटकर, उसे अपनी जाँघ में बाँधकर मैथुन करें तो जब तक उस रस्सी को खोलकर अलग नहीं कर दिया जायगा, तब तक वीर्य स्खलित नहीं होगा।

(४) कमल गट्टे को शहद के साथ पीस कर नाभि के ऊपर लेप करके मैथुन करें। जब तक लेप लगा रहेगा, तब तक वीर्य स्खलित नहीं होगा।

(५) सुअर के दायें दाँत को कमर में बांध कर मैथुन करने से जब तक उसे खोल कर अलग नहीं कर दिया जायगा, तब तक वीर्य स्खलित नहीं होगा।

(६) रविवार को घोड़े और खच्चर की पूँछ का एक-एक बाल लाकर, उसमें पीली कोड़ी को छेद करके गूंथ दें। तत्पश्चात् उसे अपनी दाईं भुजा में बांधकर मैथुन करें जब तक उसे खोलकर अलग नहीं किया जायगा, तब तक वीर्य स्खलित नहीं होगा।

(७) सफेद आम के वृक्ष की जड़ को कमर में बांधकर मैथुन करने से बहुत देर तक वीर्य स्खलित नहीं होता।

पेशाब बन्द करने का तन्त्र

जिस व्यक्ति की पेशाब बन्द करनी हो, उसने जिस स्थान पर पेशाब की हो, वहां की मिट्टी को मंगलवार के दिन लाकर किसी गिरगिट के मुँह में भर दें। फिर उस गिरगिट को किसी बेर अथवा धतूरे के पेड़ से बांध दें तो उस व्यक्ति का, जिसकी पेशाब वाली मिट्टी को गिरगिट के मुँह में भरा गया होगा, पेशाब बन्द हो जायगा। जब गिरगिट को वृक्ष से खोल दिया जायगा, तो उसे पेशाब होने लगेगा।

नपुंसक बनाने का तन्त्र

जिस मनुष्य को नपुंसक बनाना हो, उसने जिस जगह पेशाब की हो, वहां एक काला बिच्छू गाड़ दें। जब तक बिच्छू गड़ा रहेगा, तब तक वह व्यक्ति नपुंसक बना रहेगा। जब बिच्छू को खोदकर वहां से हटा दिया जायगा, तब वह व्यक्ति पुनः पुंत्वशक्ति प्राप्त कर लेगा।

निर्लज्ज बनाने का तन्त्र

लहुसन, हरताल तथा धतूरे के बीजों का चूर्ण करके जिस व्यक्ति के मस्तक पर डाल दिया जायगा, वह निर्लज्ज बन जायगा, परन्तु जब उसे दूध और शक्कर पिलाये जायेंगे, तब वह ठीक हो जायगा।

बुद्धि नष्ट करने का यन्त्र

आपामार्ग (औंगा या अझाझारा), भांगरा, सहदेई तथा सरसों—इन्हें बराबर-बराबर लेकर पाताल यन्त्र से तैल निकाल लें। इस तैल का तिलक अपने मस्तक पर लगाकर जिस व्यक्ति की ओर देखा जायगा, उसकी बुद्धि नष्ट हो जायगी।

रोग-दोष के उतारे का तन्त्र

(१) मिट्टी के सात करुये लाकर उनके ऊपर ढक्कन रक्खें। तत्पश्चात् ७ प्रकार की रेशम लाकर, उनके ऊपर सिंदूर लगायें। फिर छारछबीला, अगर, कपूर कच्चरी तथा कपूर इन्हें मिला कर, सात प्रकार की पुड़िया बना कर रखलें। फिर लाल, काला, पीला, हरा, गुलाबी, भूरा और सफेद इन सात रंगों से करुओं को रंगकर, उनके भीतर करुआ तैल (सरसों का तैल) भर कर, उनका मुंह ढक्कन से बन्द कर दें तथा एक-एक पुड़िया को उनके ऊपर रख दें। सन्ध्या के समय इस उतारे को रोगी के सामने करके, करुओं को किसी नदी, तालाब, पोखर, आदि जलाशय में विसर्जित कर दें। इससे हर प्रकार के रोग-दोष दूर हो जाते हैं।

विविध प्रकार के तन्त्र तथा चेटक

रोग-नाशक तन्त्रों का वर्णन करने के उपरान्त अब हम अन्य प्रकार के

तन्त्र, चेटक तथा इन्द्रजाल के कौतुकों का वर्णन करते हैं, जो इस प्रकार हैं—

भविष्य-ज्ञान का तन्त्र

जंगल में जाकर, जिस वृक्ष पर अमरबेल हो, उसकी सात परिक्रमा करके, अमरबेल युक्त एक लकड़ी को तोड़ लावें। फिर घर आकर उस लकड़ी को धूप देकर जला दें तथा लता को सिरहाने रखकर विचार करते हुए सो जाय तो स्वप्न में भविष्य की बात का पता चल जाता है।

भूत-प्रेत दर्शन तन्त्र

(१) दीपक में अंकोल का तैल भर कर घर में जला देने से भूत-प्रेत दिखाई देते हैं।

(२) घुंघची की जड़ को डेलपत्र के रस में पीस कर आँखों में अंजन से भूत-प्रेत दिखाई देते हैं।

विपत्ति-नाशक तन्त्र

(१) गो मूत्र, गन्धक, हरताल, तथा विष (संखिया) को समभाग लेकर चूर्ण करें। इस चूर्ण की अग्नि में धूनी देने से सब संकट और विपत्तियाँ दूर हो जायेगी।

(२) वानर की हड्डी को लाकर धूप-दीप देकर गांव के बाहर गाड़ दिया जाय और उसका प्रतिदिन पूजन किया जाता रहे तो गांव भर की विपत्तियां दूर हो जाती हैं।

द्यूत-विजय तन्त्र

हस्त नक्षत्र वाले रविवार से एक दिन पूर्व अर्थात् शनिवार के दिन पवाड़ के वृक्ष को न्यौत आयें। फिर रविवार को प्रातःकाल उस वृक्ष का टहनी लाकर उसे अपनी दाईं भुजा में बांधकर जुआ खेलें तो जुए में जीत होगी।

चोर भय नाशक तन्त्र

(१) केतकी की जड़ को/मस्तक पर धारण करके सोने से चोरी होने का भय नहीं रहता।

(२) शुक्लपक्ष में जिस दिन पुष्य नक्षत्र हो, उस दिन घुंघची की जड़ लाकर, उसे अपनी शय्या के सिरहाने बांध कर सोने से घर में चोरी होने का भय नहीं रहता।

गुप्त भेद ज्ञान तंत्र

रविवार के दिन घुग्घू पक्षी का कलेजा निकाल कर ले आयें। फिर उसे धूप, दीप देकर जिस सोते हुए मनुष्य के हृदय पर रख दिया जायगा, वह अपने मन की सब गुप्त बातों को ज्यों का त्यों कह देगा।

बिना खूंटी की खड़ाऊँ पर चलने का तन्त्र

सफेद घुंघची को पानी में पीसकर, बिना खूँटी वाली खड़ाऊँ पर पर उसका गाढ़ा-गाढ़ा लेप करके, फिर उस पर पाँव जमाकर चलें तो खड़ाऊँ पाँव से अलग नहीं होंगी।

पृथ्वी में गढ़ी वस्तु दिखाई देने का तन्त्र

कमल के सूत की बत्ती बनाकर एरण्ड के पत्ते के अर्क में भिगोकर सुखा लें। तत्पश्चात् उस बत्ती को अंकोल के तेल में डालकर, दीपक जलायें तथा काजल पारें। उस काजल को पुष्य नक्षत्र वाली त्रयोदशी तिथि को आँखों में आंजने से पृथ्वी के भीतर गढ़ी हुई वस्तु दिखाई देगी।

अग्नि बुझाने का तन्त्र

घर अथवा गांव में जब कभी आग लग जाय, उस समय कुएँ से एक लोटा ताजा पानी भर कर मंगायें तथा उस पानी भरे लोटे को दायें हाथ में लेकर, अग्नि देव को नमस्कार कर, जितने समय में सांस भीतर की ओर जाय, उतने ही समय में उस पानी को पी जायं तो घर अथवा गाँव में लगी हुई अग्नि ठण्डी हो जाती है।

माली की डलिया से फूल निकालने का तन्त्र

रविवार के दिन एक मरा हुआ मेंढक लाकर, उसे गुगल की धूनी देकर मूंग के दानों को उसमें भर दें तथा साथ ही चिकनी मिट्टी भरकर उस मेंढक को ऐसी जगह गाढ़ दें, जहाँ किसी का पाँव न पड़े। उस जगह पर नित्य पानी सींचते रहें। जब बेल उगे तथा फली लगे, तब पहले फल को अलग से छाँट

लायें। फल को घर लाते समय पीछे मुड़ कर न देखें। फिर उस फल (मूंग के दाने) को गूगल की धूनी देकर, जिस माली की डलिया में डाला जायगा, उसके सब फूल अपने आप निकल कर बाहर गिर पड़ेंगे।

पनिहारिन का घड़ा फोड़ने का तन्त्र

महीने के अन्तिम मंगलवार को कुम्हार के घर से डोरा लाकर, जिससे कि वह चाक के बर्तन उतारता है, गूगल की धूनी दे। फिर रात के समय अपने पांवों को पानी में डालकर दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके बैठ जायं तथा आकाश की ओर दृष्टि जमाये रहें। जब कोई तारा टूटता दिखाई दे, तब उस डोरे में एक गांठ लगा लिया करें। इस प्रकार जब सात गाँठें पूरी हो जायं, तब उस डोरे को पुनः गूगल की धूनी देकर रखलें।

घानी का तैल ऊँचा होने का तन्त्र

आवश्यकता के समय उस डोरे को उस मार्ग में डाल दें, जिस पर होकर पनिहारिनें पानी भरने को आती जाती हों जो पनिहारिन उस डोरे को लाँघेगी, उसी का घड़ा अपने आप फूट जायगा।

सियार की विष्ठा में झरबेरी की जो गुठलियां हों, उन्हें रविवार के दिन नंगा होकर ले आये तथा उन्हें धोकर एक माला बनालें। फिर अगले किसी रविवार को जब गधा गधी को मैथुन कर्म में प्रवृत्त देखें, तब वह माला उस गधे के गले में पहिना दें। थोड़ी देर बाद उस माला को गधे के गले से उतार कर घर ले आयें।

इस माला को तेली के कोल्हू के आगे ऊँची उठाने से घानी का तेल तुरन्त ही ऊँचा होकर बाहर बहने लगेगा और जब माला को नीचा किया जायेगा, तब तेल भी नीचा हो जायगा।

इसी माला को दांतों तले दबाने से बाजा फूट जाता है तथा लकड़ी टूट जाती है।

कुम्हार के बर्तन फोड़ने का तंत्र

हस्त नक्षत्र में कनेर की लकड़ी की तीन अंगुल प्रमाण कील बनाकर कुम्हार के घर में गाड़ देने से उसके सभी बर्तन फूट जाते हैं।

धींवर की मछली मारने वा तंत्र

मघा नक्षत्र में मिलावे की लकड़ी लाकर, उसको सात अंगुल प्रमाण कील बनाकर, जिस धींवर के घर में गाढ़ दी जायगी, उसकी सब मछलियां नष्ट हो जायेंगी।

हरे खेत को सुखाने का तन्त्र

गन्धक तथा ऊँट कटेरी को सम भाग लेकर पीस लें। फिर, उसे राख में मिलाकर जिस हरे खेत में डाल दिया जायगा, उसकी फसल सूख कर नष्ट हो जायगी।

पीढ़े से चिपका देने का तंत्र

रविवार के दिन प्रातःकाल लाल एरण्ड को न्योत आयें। फिर, सन्ध्या समय उसे एक झटके में इस प्रकार तोड़ लायें कि उसके दो टुकड़े हो जायँ एक टुकड़ा हाथ में रहे तथा दूसरा नीचे गिर पड़े। उन दोनों टुकड़ों को अलग-अलग रख लें। फिर जिस व्यक्ति को पीढ़े पर बैठा हुआ देखें, उसके शरीर से उस टुकड़े का स्पर्श करादें, जो नीचे न गिरा हो, तो वह व्यक्ति पीढ़े से चिपक जायगा। तत्पश्चात् जब नीचे गिरे हुए टुकड़े का उस आदमी से स्पर्श कराया जायगा, तब वह पीढ़े से छूट जायगा।

शत्रु का काम बिगाड़ने का तन्त्र

पूर्वा नक्षत्र वाले शुक्रवार को बबूल के सात कांटें लाकर, उन्हें सात प्रकार के रेशम के धागे में लपेट कर जिस व्यक्ति के घर में गाड़ दिया जायगा, उसके सब काम बिगड़ जायेंगे।

घोड़ों को मारने का तंत्र

अश्विनी नक्षत्र में घोड़ें की हड्डी की सात अंगुल प्रमाण कील बनाकर, उसे घुड़साल में गाड़ देने से, वहाँ के सभी घोड़े मर जाते हैं।

शत्रु नाशन तंत्र

पुष्य नक्षत्र में मनुष्य की हड्डी की चार अंगुल प्रमाण कील को जिस व्यक्ति के घर में गाड़ दिया जाता है, उसका परिवार सहित नाश हो जाता है।

भूत लगाने तथा उतारने का तन्त्र

भिलाये रस में घुंघची, विष, चित्रक तथा कौंच को मिलाकर शरीर पर लगा देने से भूत लग जाता है और चन्दन, खस, मालकांगनी, तगर, लाल चन्दन एवं कूट को एकत्र पीस कर शरीर लेप करने से भूत उतर जाता है।

अत्यधिक भूख लगाने का चेटक

बहेड़े के वृक्ष को शनिवार की सन्ध्या के समय न्योत आयें, दूसरे दिन प्रातःकाल अर्थात् रविवार को सुबह उस वृक्ष का पत्ता लाकर, उस पत्ते को अपने पांव के नीचे दबाकर, भोजन करने के लिए बैठने से कई आदमियों का भोजन अकेले ही खा लिया जायेगा।

भूख न लगने का चेटक

(१) भैंस के दूध में अपामार्ग (औंगा) के बीजों को पका कर, खीर बनाकर, खाने से एक महीने तक भूख नहीं लगती।

(२) बकरी के दूध में तालमखाने के बीज, भांगरे के बीज तथा पान की जड़ मिलाकर, खीर बनाकर, प्रातःकाल खाने से बारह दिन तक भूख-प्यास नहीं लगती।

(३) कमलगट्ठा तथा साठी के चावलों को बकरी के दूध में पकाकर, घी मिलाकर खाने से बारह दिन तक भूख नहीं लगती।

(४) पकार के बीज, केसरू तथा कमल की जड़ को गाय के दूध में पका कर खाने से एक महीने तक भूख नहीं लगती।

(५) पद्मबीज, अपामार्ग, तुलसी और धात्री के बीजों को पीसकर गोली बनालें। इस गोली को खाकर ऊपर से गाय का दूध पी लेने से भूख-प्यास का कष्ट दूर हो जाता है।

मरे सर्प दिखाई देने का चेटक

तांबे के दीपक में सर्प के केंचुए की बत्ती जलाने से उसके प्रकाश में चारों ओर मरे हुए सर्प दिखाई देते हैं।

बिच्छू दिखाई देने का चेटक

मंगलवार को एक मरे हुए बिच्छू के मुँह में कपास के बीज डालकर गाढ़ दें। उससे पौधा उत्पन्न होने पर, उसके कपास की बत्ती बनाकर, अरण्डी के तेल के दीपक में जलायें तो घर की सब वस्तुएँ बिच्छू जैसी दिखाई देंगी, परन्तु दीपक को बुझा देने पर सारा चमत्कार लुप्त हो जायगा।

अनोखा तमाशा दिखाई देने का चेटक

जुगनू के सिर को काट कर, उसके ऊपर हिरण की चर्बी लपेट कर बत्ती बनायें। उस बत्ती को दीपक में डालकर जलाने से, उसके प्रकाश में अनोखा तमाशा दिखाई देगा।

नेवला दिखाई देने का चेटक

मंगलवार को मरे हुए नेवले के मुंह में कपास के बीज डालकर, उसे जमीन में गाढ़ दें। जब उससे पौधा उत्पन्न हो, तब उसके कपास की रूई से बत्ती बनाकर, उस अरण्डी के तैल के दीपक में डालकर जलाने से, उस प्रकाश में घर की सभी वस्तुएँ दीपक जैसी दिखाई देंगी। बत्ती के बुझ जाने पर सब चमत्कार भी लुप्त हो जायगा।

पानी के ऊपर पत्थर तैराने का चेटक

खरगोश तथा स्यार की बीठ को रविवार के दिन लाकर, उसमें बेर की गुठली मिलाकर लेप तय्यार करें। उस लेप को पत्थर पर लगाकर, उसे पानी के ऊपर बहा देने से पत्थर पानी पर तैरने लगता है।

मरे मैंढ़क के बोलने का चेटक

कार्तिक की दीपावली को एक मरा हुआ मेंढक लाकर, उसमें पारा तथा नीबू का रस भर कर जमीन में गाड़ दें। एक महीने बाद बाहर निकालने पर वह बोलने लगेगा।

पानी में दीपक जलने का कौतुक

(१) खिरनी के दूध में सात बार रूई भिगो-भिगोकर सुखा लें। फिर उस की बत्ती बनाकर पानी में डालकर जलायें तो वह जलती रहेगी।

(२) तल तथा कपूर को समभाग लेकर, पीस कर, बत्ती बनालें, उस बत्ती को पानी में डालकर जलाने से वह जलती रहेगी।

(३) चीनियां कपूर की बत्ती बनाकर, पानी में डालकर जलाने से वह जलती रहती है।

दीपकों के लड़ने का कौतुक

एक दीपक में भेड़िया की चरबी तथा दूसरे दीपक में बकरे की चरबी भरकर, दोनों में अलग-अलग बत्ती डालकर, दोनो के एक दूसरे के सामने रखकर जला दें।

इनमें से जब एक जले हुए दीपक को बुझाने के बाद दूसरे को भी बुझाया जायगा, तब पहले बुझा हुआ दीपक अपने आप जले उठेगा।

इसी प्रकार जब-जब किसी दीपक को बुझाया जायगा, तब दूसरा दीपक अपने आप जलने लगेगा और इस प्रकार एक भी दीपक नहीं बुझा सकेगा।

बुझे दीपक को जलाने का कौतुक

जलते हुए दीपक को बुझाकर, जब तक उसके गुल पर चमक रहे, तभ। समभाग पिसे हुए गंधक तथा राल का महीन चूर्ण डाल देने से, वह दुबारा जल उठेगा।

दीपक का उजाला घटाने का कौतुक

किसी वस्तु पर समुद्र फेन का लेपकर के, उसे जलते हुए दीपक के सामने रख देने से, दीपक का उजाला घट जायगा।

दीपक की रोशनी का रंग पीला होने का कौतुक

रूई की बत्ती बनाकर उसे नमक मिले पानी में भिगोयें तत्पश्चात् उसे सुखाकर स्प्रिट भरे लैम्प में डालकर जलायें तो लैम्प की रोशनी पीले रंग की दिखाई देगी।

अग्नि से न जलने का कौतुक

भाँगरे की जड़, गोरोचन तथा घी को पीसकर हाथ में गाढ़ा लेप करके यदि हाथ पर अग्नि रख ली जाय तो अग्नि का भय दूर हो जाता है।

चिनगारियों से मुँह न जलने का कौतुक

अकरकरा तथा शीतल मिर्च को चबाकर, आग की छोटी-छोटी चिनगारियों को मुँह में डालने से मुँह नहीं जलता। शीतल मिर्च के स्थान पर नौसादर का प्रयोग भी किया जा सकता है।

जले हुए सूत से अँगूठी के न गिरने का कौतुक

सूत को नमक के पानी में भली-भाँति भिगोकर छाया में सुखा लें। फिर उसमें अँगूठी बाँधकर लटका दें तथा सूत को जलायें तो सूत के जल जाने पर पर भी अँगूठी नीचे नहीं गिरेगी।

बिना अग्नि पानी उबालने का कौतुक

दो गिलासों में पानी भरकर रख दें। फिर एक में सोडा तथा दूसरे में नींबू का सत डाल दें। जब इन दोनों गिलासों के पानी को आपस में मिलाया जायगा, तब वह आग पर बिना तपाये ही उबलने लगेगा।

बिना दीपक के उजाला होने का कौतुक

एक स्वच्छ सफेद शीशी में सिरका भरदें। फिर उसमें थोड़ी सी तबकिया हरताल डाल दें तो शीशी में ऐसी रोशनी होगी कि बिना दीपक के ही उजाला हो जायगा।

गरम जंजीर से हाथ का न जलने का कौतुक

पहले हाथों में ग्वारपाठे का रस, मुर्गी के अण्डे की जरदी अथवा मुलहठी को पानी में घिसकर खूब अच्छी तरह लगालें। फिर किसी धातु की जंजीर को खूब गरम करके किसी जगह लटका दें और उसके ऊपर थोड़ा सा तेल छिड़क कर, हल्के हाथ से उस गरम जंजीर को सूंतें तो हाथ नहीं जलेगा।

कांटे चबाने का कौतुक

द्रोणपुष्पी के पत्तों को चबाकर उनका रस मुँह में रक्खें, तत्पश्चात् बबूल के कांटे चबावे, तो मुँह में वे नहीं चुभेंगे और कोई हानि नहीं होगी।

बिच्छू उत्पन्न करने का कौतुक

मिट्टी के एक कुल्हड़ में भैंस का गोबर भरकर, ऊपर से उसी में गधे का

पेशाब डाल दें। फिर उसी में थोड़ा सा दही-बूरा डालकर, कुल्हड़ को ढंककर किसी कूड़े-करकट वाली जगह में गाढ़ दें। आठ दिन बाद कुल्हड़ को जब वहाँ से बाहर निकाला जायगा, तो उसमें बड़े-बड़े बिच्छू उत्पन्न हुए दिखाई देंगे।

नींबू के उछलने का कौतुक

कागजी नींबू की दो फांकें करके, उनमें पारा तथा हल्दी भर दें तथा दोनों फाँकों को एक दूसरी पर रखकर दोनों का मुँह बन्द करके ऊपर से डोरा लपेट दें। इस नींबू को जब तेज धूप में रखा जायगा, अथवा अग्नि का ताप दिया जायगा, तो वह उछलने-कूदने लगेगा।

अण्डे के नाचने का कौतुक

एक अण्डे में छेद करके उसमें एक टंक पारा भर दें तथा छेद को मोम लगाकर बन्द कर दें। तत्पश्चात् थोड़ी सी बालू को धूप में बिछा दें। जब बालू गरम हो जाय, तब उस पर पारा भरे हुए अण्डे को रख दें तो थोड़ी देर बाद गरम हो जाने पर वह अण्डा अपने आप उछलने-कूदने लगेगा।

लाल फूलों का रंग सफेद हो जाने का कौतुक

लाल कनेर के फूलों को नोनी गन्धक की धूनी देने से उनका लाल रंग उड़ जाता है और वे सफेद हो जाते हैं।

अण्डे के उड़ने का कौतुक

मुर्गी के अण्डे में छेद करके उसके भीतर ओस का पानी भरदें तथा छेद को मोम से भर दें। यह अण्डा थोड़ी सी गर्मी पाते ही ऊपर की ओर उड़ जाता है।

मोहन-तंत्र

(१) धतूरे के पचांग का चूर्ण करके उसे भैंस तथा सर्प के रक्त में मिलाकर सन्ध्या के समय अपने शरीर पर धूप देने वाले व्यक्ति को जो देखता है, वही मोहित हो जाता है।

(२) काकड़ा सिंगी, वच, कूट तथा चन्दन को जौकुट करके अपने शरीर तथा वस्त्रों पर धूप देने वाले व्यक्ति को जो भी देखता है, वही मोहित हो जाता है।

(३) केशर, मैनसिल, गोरोचन तथा पत्रज—इन्हें पानी में पीसकर जो व्यक्ति अपने सिर पर तिलक लगाता है, वह जिस सभा में जाता है, वहाँ उपस्थित सभी लोग उस पर मोहित हो जाते हैं।

(४) रविवार के दिन तुलसी के बीजों को सहदेई के रस में पीसकर तथा उससे अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य-स्त्री के सामने पहुंचने वाले पुरुष पर साध्य-स्त्री मोहित हो जाती है।

(५) जीरा-कुटकी, सफेद आक की जड़ तथा नागर मोथा—इन सबको अपनी कनिष्ठा उँगली के रक्त में पीस कर तथा उस मिश्रण से अपने मस्तक पर तिलक लगाकर जो पुरुष अभिलषित-स्त्री के सामने जाता है, वह स्त्री उसे देखते ही मोहित हो जाती है।

॥ इति तांत्रिक साधन विधि, यन्त्र, मन्त्र एवं तन्त्र सिद्धि के प्रयोग समाप्तम ॥